आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अक्टूबर, 2021
डाक प्रेषण तिथि 10 अक्टूबर, 2021

वर्ष : 79 अंक : 10
आश्विन, 2078 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 100

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

अक्टूबर, 2021

Website : www.jinwani.in

अहंकार का पोषण तो जिह्वा हो अच्छा लगता है,
परन्तु भगवान ने इसे अनुकूल परीषह बताया है।
– आचार्यश्री हीरा

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह-सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वोच्छिंद सिणेहमप्पणो,
कुमुयं सारइयं व पाणियं।
से सव्व-सिणेह-वज्जिए,
समयं गोयम! मा पमायए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.28

ज्यों शरत्कमल जललिप्त न हो,
यों स्नेहभाव निज छेदन कर।
हो जा निर्लिप्त जग से तू,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर।।

अक्टूबर, 2021
वीर निर्वाण सम्वत्, 2547
आश्विन, 2078

वर्ष 79 अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	रत्नसंघ के भावी सूर्य मुनि महेन्द्र	–डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	–डॉ. धर्मचन्द जैन	9
विचार-वारिधि-	धर्मशिक्षा : जीवननिर्मात्री	–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	10
प्रवचन-	कब आयेंगे अन्धकार से प्रकाश में?	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	11
	क्रोध कषाय के लगाएँ ताला	–महान् अध्य.श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	14
	समस्त दु:खों का मूल : इच्छा और कामना	–मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी	17
	धर्म के सहकार से पुण्य में उत्कृष्टता	–तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	21
आत्म-चिन्तन	अपरिग्रह : एक चिन्तन	–डॉ. पदमचन्द मुणोत	28
	रिश्तों के जादुई रहस्य	–श्री निपुण डागा (सी.ए.)	38
English-section	**Socio-Cultural Dimensions of Jīva Dayā (Ahiṃsā)**	*–Dr. Priyadarshana Jain*	32
जीवन-व्यवहार-	गुणवान बनने के तीन सूत्र	–श्रीमती अंशु संजय सुराणा	43
	व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (9)	–श्री पी. शिखरमल सुराणा	60
शोधालेख-	जैन संस्कृति में पर्यावरण-चेतना	–डॉ. एन. के. खींचा	46
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें	–श्री धर्मचन्द जैन	49
अभिवन्दन-	भावी आचार्य की घोषणा एवं सन्त-सतियों के उद्गार	–संकलित	52
चिन्तन-	अवचेतन मन की तीन क्षणिकाएँ	–श्री राकेश मेहता (सी.ए.)	86
गीत/कविता-	क्षणिकाओं में बोध	–मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी	16
	लघु कविताएँ	–डॉ. रमेश 'मयंक'	31
	माध्यस्थ भावना	–श्रीमती अभिलाषा हीरावत	45
विचार/चिन्तन-	पाँच स्थावरों के गुण	–श्री जेठमल चोरड़िया	13
	बदल जाओ वक्त के साथ	–डॉ. प्रेमसुख सुराणा	27
	धार्मिक पत्रिकाओं का न करें कदापि अनादर	–डॉ. दिलीप धींग	42
	ध्यान	–श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	47
	प्रेरक वाक्य	–श्री श्रीकान्त जैन	85
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–डॉ. धर्मचन्द जैन	61
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	63
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	87
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	–विभिन्न लेखक	89

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 5
ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

रत्नसंघ के भावी सूर्य मुनि महेन्द्र

डॉ. धर्मचन्द जैन

स्थानकवासी श्वेताम्बर परम्परा के विशिष्ट घटक रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी महाराज ने अपने मुखारविन्द से विक्रम संवत् 2078 की भाद्रपद शुक्ला पंचमी (सम्वत्सरी) 11 सितम्बर 2021 के शुभ दिन में वाचनी के समय अपराह्न में अपने उत्तराधिकारी भावी आचार्य की घोषणा कर भविष्य की ऊहापोह का निराकरण कर दिया। रत्नसंघ में आचार्यप्रवर ने यह घोषणा कर नया इतिहास रच दिया। अध्यात्मयोगी, युगमनीषी, चारित्र चूड़ामणि, इतिहास मार्तण्ड रत्नसंघ के सप्तम पट्टधर आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. की विद्यमान शिष्य सम्पदा में आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पश्चात् महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. सबसे वरिष्ठ सन्त हैं। गुरुभ्राता होते हुए भी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. की सन्निधि में विनीत शिष्य की भाँति सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं। आचार्यश्री को कब किस प्रकार की आवश्यकता है, इसका वे पूरा ध्यान रखते हैं। सेवा एवं विनय का गुण सीखना हो तो इसके वे जीते-जागते विद्यालय हैं। अपने गुरुदेव पूज्य आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. के पण्डितमरण के अनन्तर सन् 1991 से अब तक 30 वर्षों में आपके सभी चातुर्मास अग्रज गुरुभ्राता पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन सन्निधि में हुए हैं। दोनों का पारस्परिक विश्वास अतुलनीय है, अटूट है।

प्राय: कोई भी आचार्य अपने ही द्वारा प्रव्रजित शिष्य को ऐसा महत्त्वशाली पद सौंपना चाहता है, किन्तु पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने इस मोह का परित्याग कर अपनी कसौटी पर खरे उतरे ज्येष्ठ सन्त **श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. को 'भावी आचार्य' के रूप में उद्घोषित किया है।** सन्त-परम्परा में यह एक आदर्श घोषणा है। ऐसे उदाहरण मेरे अल्पज्ञान की स्मृति में नहीं हैं कि अपने गुरुभ्राता को एक आचार्य अपना उत्तरदायित्व सौंपकर प्रसन्न है। आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. इस विषय को लेकर कतिपय वर्षों से चिन्तन कर रहे थे, संघ के श्रावक-श्राविका भी भविष्य की तस्वीर को लेकर ऊहापोह में चल रहे थे। अब सब कुछ स्पष्ट हो गया है।

जिनशासन तू महान् है! रत्नसंघ तू महान् है ! तू संघ का हित देखता है। संघ को प्राथमिकता देता है। आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. 30 वर्षों से बागडोर सम्हाले हुए हैं। अनुशासन में कहीं कोई कमी नहीं है, पूरी कसावट है और साथ ही स्नेह एवं कृपा का वर्षण भी है। अपने गुरुदेव पूज्य आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. के वचनों, शिक्षाओं एवं उनके जीवन को ध्यान में रखकर आपने संघ का कुशल संचालन किया है। विकट एवं विषम परिस्थितियों को समभाव से सहा है। कतिपय वर्षों से आप निजी साधना को अधिक महत्त्व दे रहे हैं। संघ के कुछ कार्यों में श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का सहयोग ले रहे हैं। आहार-संयम एवं तपस्या के साथ आत्म-साधना में लीन रहते हैं। प्रत्येक सोमवार एवं कृष्णा दशमी को मौन रखते हैं। अभी अधिकतर समय मौन में ही व्यतीत होता है। भक्तों से चर्चा-वार्ता हेतु अत्यन्त सीमित समय देते हैं।

श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. महान् अध्यवसायी हैं। तपस्या के समय भी गोचरी लाने आदि कार्यों में निरत रहते हैं। जीवन में तनिक भी आलस्य एवं प्रमाद नहीं है। श्रमणाचार एवं प्रायश्चित्त के विशेषज्ञ हैं। आगमों के गम्भीर ज्ञाता हैं। संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिन्दी मारवाड़ी आदि भाषाओं का बोध है। लगभग

सार्द्ध दशक से अपराह्न में वाचनी आप ही फरमा रहे हैं। पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में रहने वाले सन्तों का धाय माँ की तरह ध्यान रखते हैं। अल्पभाषी हैं; आवश्यकता के अनुसार बोलते हैं। पूज्य आचार्यप्रवर कतिपय वर्षों से प्रवचन यदा-कदा अवसर पर ही फरमाते हैं, अत: सरसव्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. का ही प्रवचन आचार्यवत् होता है। आपका प्रवचन विषय पर केन्द्रित, व्यवस्थित एवं सुसम्बद्ध होता है। जिनवाणी पत्रिका में प्रवचन प्रकाशित होते रहते हैं। प्रवचन में आपकी वाणी सधी हुई है। ज्येष्ठ गुरुभ्राता आचार्य की आप जो सेवा करते हैं, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। सेवा में अनेक छोटे सन्त हैं, फिर भी आप सेवा का अवसर नहीं चूकते हैं। गुरुभ्राता आचार्य को आप 'गुरुदेव' ही कहते हैं। ऐसी विनम्रता, श्रद्धा और सेवा का जीता जागता रूप हैं-श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.। आप ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र के साथ तपाराधन में भी तत्पर हैं। बीजापुर में आपने 31 दिवसीय मासखमण तप किया था, जिसमें भी नियमित अपने एवं आचार्यप्रवर के वस्त्रादि की प्रतिलेखना, आदि कार्य करते रहे। आप उपवास, बेला, तेला, पचोला, अठाई, ग्यारह आदि के अनेक तप कर चुके हैं। सन् 2008 से निरन्तर एकान्तर तप कर रहे हैं। इसके साथ हर माह दो बेले, दो तेले अष्टमी, चतुर्दशी एवं पक्खी पर कर लेते हैं। मन, वचन एवं काया का पूरा संयम हैं। कतिपय वर्षों से तीन विगयों का त्याग चल रहा है। परीषहों के प्रति सहनशीलता गज़ब की है। भयंकर सर्दी में भी एक चादर एवं एक चोलपट्टा में रात्रि व्यतीत कर देते हैं। लगभग 45 वर्षों से गोचरी लाने का कार्य पूर्ण सजगता से कर रहे हैं। पाँचों इन्द्रियों पर संयम रखते हैं। प्रतिदिन स्वाध्याय में निरत रहते हैं। आपको 18 आगम कण्ठस्थ हैं। साध्वाचार का अक्षरश: प्रसन्नतापूर्वक प्रमादरहित होकर पालन करते हैं। प्रतिदिन दिन में 12 से 2 बजे तक, प्रत्येक शुक्रवार एवं बदि दशमी का मौन रखते हैं। 'काले कालं समायरे' आगम वाक्य के अनुसार प्रत्येक कार्य समय पर करते हैं। सभी कार्य सजगतापूर्वक एवं ध्यान से करते हैं। समर्पण के साथ सूझबूझ के धनी हैं।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने श्रद्धेय श्री महेन्द्र जी म.सा. को नजदीक से देखा है, अत: आचार्य पद के योग्य सभी विशेषताओं से अवगत हैं, किन्तु एक विशिष्ट विशेषता का उल्लेख आचार्यप्रवर ने अपनी घोषणा में किया है, वह है-सहनशीलता। यह सहनशीलता मजबूरी की सहनशीलता नहीं है, यह एक परिपक्व साधक की सहनशीलता है, जिसमें ज्ञान, विवेक, समता एवं क्षमाशीलता समाहित है। यह एक महान् सामर्थ्य है जिससे निज आत्मा का तो विकास होता ही है, समस्याओं का सम्यक् समाधान भी सूझता है। हर परिस्थिति में समभाव एक महान् साधक ही रख सकता है। उत्तराध्ययनसूत्र (19.91) में कहा है-

लाभालामे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निन्दापसंसासु, तहा माणावमाणए।।

लाभ-हानि, सुख-दु:ख, जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा, मान-अपमान में साधु सम रहता है, इनसे विचलित नहीं होता। ऐसी समत्व की साधना एक प्रज्ञाशील साधक में ही सम्भव है। साधु के लिए इसीलिए एक विशेषण आता है-खमासमणो अर्थात् क्षमा-श्रमण। दूसरों के प्रति मन में कटुता का भाव उत्पन्न न होना, सबके कल्याण का भाव रहना तथा विषम परिस्थितियों में भी अविचल रहकर समाधान खोजना, यह क्षमाश्रमण का स्वरूप होता है। श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. 67 वर्ष की वय में भी एक युवा की भाँति कार्य में संलग्न रहते हैं।

भावी आचार्य के रूप में आपका मनोनयन निश्चित रूप से अभिनन्दनीय है। महान् अध्यात्मयोगी आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. के अन्य शिष्यों में मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. भी महान् प्रभावशाली सन्त हैं। सवाईमाधोपुर एवं मानसरोवर, जयपुर के उनके चातुर्मास इसके साक्षी हैं। उनके प्रवचनों में लोग खिंचे चले आते हैं। नये लोगों को जोड़ने एवं पुरानों को सक्रिय करने में पुरुषार्थ दिखाते हैं। प्रेरणा एवं

प्रोत्साहन की कला में वे दक्ष हैं। स्वरचित भजनों के माध्यम से उन्होंने जन-जन को प्रभावित किया है। सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेण मुनि जी म.सा. अनेक थोकड़ों एवं तत्त्व ज्ञान के ज्ञाता हैं तथा संघ के उन्नयन हेतु तत्पर रहते हैं। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. ज्ञान के सागर हैं। वे चलते-फिरते विश्वविद्यालय हैं। आगम, कर्मसिद्धान्त, साधना आदि किसी भी विषय पर उनसे बात की जाये, सबके समाधान उनसे मिल जाते हैं। अनेक मुमुक्षुओं को उन्होंने तैयार किया है एवं सींचा है। त्याग-तपस्या में भी अग्रणी हैं। अन्य सभी सन्त भी कोई न कोई विशेषता लेकर संयम-जीवन को सार्थक कर रहे हैं तथा जिनशासन को दिपा रहे हैं। साध्वी प्रमुखा सहित महासती मण्डल भी ज्ञान, प्रेरणा, प्रोत्साहन, तप एवं आचार में विशिष्ट हैं। सबसे मिलकर ही रत्नसंघ का उज्ज्वल गौरवशाली स्वरूप बना है। रत्नत्रय की साधना के साथ संघ की उन्नति में समर्पण सबकी महत्ता को प्रतिष्ठित करता है।

स्थानकवासी परम्परा में आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. के नाम से विद्यमान यह रत्नसंघ रत्न की भाँति जिनशासनरूपी गगन में अप्रतिम प्रकाश प्रसारित कर रहा है। स्थानकवासी परम्परा का लोंकाशाह के पश्चात् लगभग 570 वर्षों का एक लम्बा इतिहास है। इसमें पञ्चम उद्धारक श्री धर्मदास जी म.सा. हुए, जिन्होंने 59 वर्ष की आयु में जिनशासन की रक्षा हेतु संथारा ग्रहण कर लिया था। इनके 99 शिष्यों में 22 पण्डित मुनि विभिन्न प्रान्तों में धर्मप्रचार हेतु 22 टोलों/समुदायों में विचरण करने लगे, इसीलिए इस परम्परा को 22 सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। पूज्य धर्मदास जी म.सा. के शिष्यों में पूज्य श्री धन्ना जी म.सा. भी प्रसिद्ध रहे। उन्होंने वि.सं. 1727 में प्रव्रज्या अंगीकार की थी। मारवाड़ को उन्होंने धर्मोद्योत का क्षेत्र बनाया। इनके प्रमुख शिष्य रत्न थे-श्री भूधर जी म.सा.। भूधर जी म.सा. की शिष्य परम्पराओं में एक पूज्य श्री रघुनाथ जी म.सा. की परम्परा है, जिसमें श्री मरुधर केसरी म.सा. हुए। दूसरी परम्परा पूज्य श्री जेतसी जी म.सा. की है, जो अधिक नहीं चल पाई। तीसरी परम्परा पूज्य श्री जयमलजी म.सा. की है, जिसमें पूज्य श्री जोरावरमल जी म. सा., पूज्य श्री हजारीमल जी म.सा., श्री ब्रजलाल जी म.सा., श्री मिश्रीमल जी म.सा. मधुकर हुए। पूज्य श्री जयमल जी म.सा. की ही परम्परा में आचार्यश्री जीतमल जी म.सा. आचार्यश्री लालचन्द जी म.सा. के पश्चात् वर्तमान में आचार्य श्री शुभचन्द जी म.सा. हैं।

आचार्य श्री भूधर जी म.सा. की चौथी शिष्य परम्परा के मूल नायक पूज्य श्री कुशलचन्दजी (कुशलोजी) म.सा. थे। उन्होंने गुरु भ्राता के अटूट प्रेम के कारण आचार्य पद स्वीकार नहीं किया। उनका समय विक्रम संवत् 1794 से 1840 तक रहा। यह परम्परा मुनि श्री रत्नचन्द जी म.सा. द्वारा किए गए क्रियोद्धार के कारण रत्नसंघ (रत्नवंश) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके आचार्यों की परम्परा इस प्रकार है-

प्रथम पट्टधर-पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म.सा. (विक्रम सम्वत् 1840-1858)

द्वितीय पट्टधर-पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. (विक्रम सम्वत् 1882-1902) इन्होंने पूज्य श्री दुर्गादासजी म.सा. की विद्यमानता में शासन सम्भालते हुए भी विक्रम सम्वत् 1858 से 1882 तक आचार्य का पूज्य पद स्वीकार नहीं किया। दोनों एक-दूसरे को पूज्य कहते रहे।

तृतीय पट्टधर-पूज्य श्री हमीरमलजी म.सा. (विक्रम सम्वत् 1902-1910)

चतुर्थ पट्टधर-पूज्य श्री कजोडीमलजी म.सा. (विक्रम सम्वत् 1910-1936)

पंचम पट्टधर-पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. (विक्रम सम्वत् 1937-1972)

षष्ठ पट्टधर-पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. (विक्रम सम्वत् 1972-1983)

सप्तम पट्टधर-पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. (विक्रम सम्वत् 1987-2048) विक्रम सम्वत् 1983 से

1987 के लगभग 4 वर्षों तक वयोवृद्ध श्री सुजानमलजी म.सा. को संघ-व्यवस्थापक एवं स्वामी जी श्री भोजराजजी म.सा. को परामर्शदाता बनाया गया था।

अष्टम पट्टधर-पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. (ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, विक्रम संवत् 2048 से निरन्तर)।

पद की लोलुपता से दूर रहने वाली इस सन्त परम्परा ने सदैव त्याग एवं सेवा का मार्ग अपनाया है। संघ की छवि निरन्तर निखरती जा रही है। इसके सन्तवृन्द एवं साध्वी मण्डल स्वयं की अपेक्षा धर्म एवं संघ को महत्त्व देते हैं। यही कारण है कि ज्ञानाराधन, दर्शनाराधन एवं चारित्राराधन के लिए यह संघ उज्ज्वल नक्षत्र की भाँति प्रकाशित हो रहा है।

संघ को, पूज्य आचार्यप्रवर को एवं भावी आचार्यप्रवर को सश्रद्धा वन्दन-नमन।

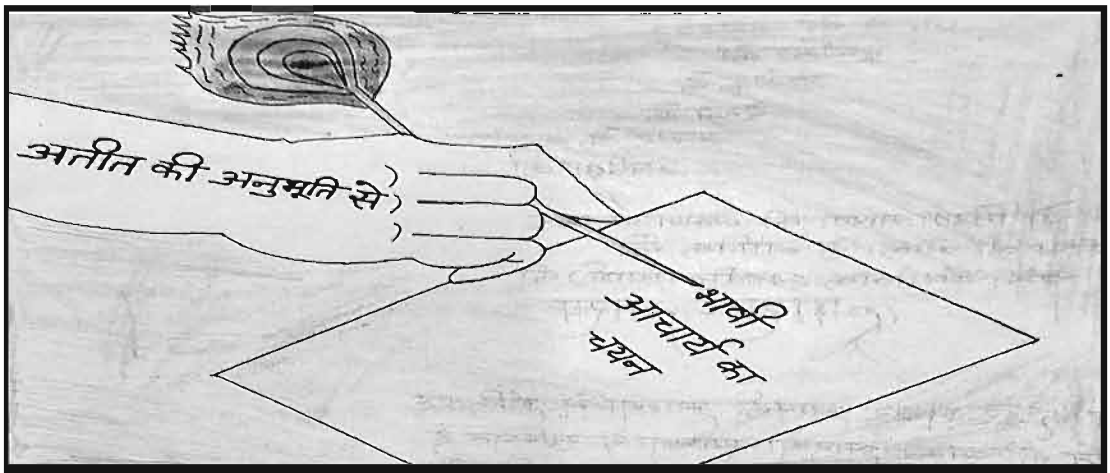

अभिनन्दन-अभिवन्दन

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति एवं रात्रिभोजन त्याग के प्रबल प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने भाद्रपद शुक्ला पञ्चमी, विक्रम सम्वत् 2078, दिनांक 11 सितम्बर, 2021 को रत्नसंघ के सबसे **वरिष्ठ सन्त महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. को संघ का भावी आचार्य घोषित किया है।** हम सब इस घोषणा का हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करते हैं तथा भावी आचार्य का अभिवन्दन करते हैं।

संयोजक एवं समस्त सदस्य-संरक्षक मण्डल
संयोजक एवं समस्त सदस्य-शासन सेवा समिति
अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्
संयोजक एवं समस्त सदस्य- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
संयोजक एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
संयोजक एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 9
ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

जं जारिसं पुव्वमकासि कम्मं, तहेव आगच्छति संपराए। एगंतदुक्खं भवमज्जिणित्ता, वेदेंति दुक्खी तमणंतदुक्खं।। -सूत्रकृताङ्ग, प्रथम श्रुत स्कन्ध, 5.2.23

अर्थ–जिस जीव ने जैसा कर्म पूर्व में किया है, वह उसी के अनुसार संसार में आता है। जिन्होंने एकान्त दु:ख रूप नरकभाव का उपार्जन किया है, वे एकान्त दु:खी जीव अनन्त दु:खरूप उस नरक रूप फल को भोगते हैं।

विवेचन–अङ्ग आगमों में आचाराङ्ग के पश्चात् दूसरा आगम सूत्रकृताङ्ग है। अर्धमागधी भाषा में रचित इस आगम का प्राकृत नाम सूयगडो है। इस सूत्र में दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध में 16 तथा द्वितीय श्रुतस्कन्ध में 7 अध्ययन हैं। सूत्रकृताङ्ग महत्त्वपूर्ण आगम है, जिसमें दार्शनिक एवं सैद्धान्तिक पक्षों की भी चर्चा उपलब्ध है।

प्रस्तुत गाथा कर्मसिद्धान्त का प्रतिपादन करती है। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि जो जीव जैसा कर्म करता है वह वैसा ही फल भोगता है। पूर्वजन्म में जिसने जैसा कर्म किया है उसके अनुसार ही वह संसार में जन्म लेता है एवं पूर्वकृत कर्मों का फल भोगता है। ऐसा नहीं हो सकता कि कोई मन, वचन एवं काया के स्तर पर दुराचरण करे, क्रोधादि कषायों की तीव्रता से आविष्ट रहे तथा हिंसा, झूठ, चोरी आदि का आचरण करे और उसके फल में सुख प्राप्त करे। क्रोध करने पर भीतर में अशान्ति ही उत्पन्न होती है तथा बाह्य वातावरण भी अशान्त होता है। हिंसा आदि पाप कार्यों का फल पुण्य नहीं हो सकता। बहु आरम्भ एवं बहु परिग्रह को नरक का कारण माना गया है। मनुष्य प्राय: अपने को आरम्भ एवं परिग्रह में व्यस्त रखता है और अशान्त बना रहता है। वह माया के कारण तिर्यञ्च योनि में जन्म लेता है। अल्प आरम्भ, अल्प परिग्रह, स्वभाव की मृदुता एवं सरलता से मनुष्यायु का बन्ध होता है अर्थात् इनके कारण मनुष्य भव प्राप्त होता है। सराग संयम, संयमासंयम, अकामनिर्जरा एवं बाल तप देव भव के कारण बनते हैं। इस प्रकार अपने कृत कर्म एवं आचरण के अनुसार अगला भव निर्धारित होता है।

गाथा में प्रयुक्त 'सम्पराय' शब्द संसार का द्योतक है, कहीं इसका 'कषाय' अर्थ भी लिया जाता है। प्रस्तुत गाथा कह रही है कि जिस जीव ने पूर्वभव में जैसा कर्म किया है, तदनुसार ही वह संसार में पुन: जन्म ग्रहण करता है। यदि उसने एकान्त दु:ख युक्त भव/संसार का अर्जन किया है तो वह दु:खी जीव अनन्त दु:ख का वेदन करता है। अनन्त दु:ख का तात्पर्य है कि उस दु:ख की परम्परा आसानी से नहीं टूटती है। दु:ख का वेदन करने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं रहता। यह स्थिति नरक के जीवों की है। मिथ्यात्वी जीव भी दु:ख के अनन्त चक्र में भटकते रहते हैं।

इस गाथा के पूर्व सूत्रकृताङ्ग में नरक के दु:खों का वर्णन किया गया है। अत: उस परिप्रेक्ष्य में अनन्त दु:खों के वेदन का कथन हुआ है। इसमें यह भी संकेत किया गया है कि जो भी कर्म किया जाए, सम्भल कर विवेकपूर्वक किया जाए, अन्यथा दु:ख-परम्परा का अन्त होने वाला नहीं है।

यह कर्मसिद्धान्त मनुष्य को सदाचरण एवं सत्कर्म के लिए प्रेरित करता है, साथ ही अपनी दृष्टि को सम्यक् बनाकर सम्यग्ज्ञान पूर्वक सम्यक् आचरण के लिए प्रेरित करता है। जब तक कर्मों का पूर्ण क्षय नहीं हो जाता, राग-द्वेष का समापन नहीं हो जाता तब तक भवचक्र में जन्म-मरण एवं सुख-दु:ख रूप फल भोगना होता है। अज्ञान एवं मोह में पड़ा जीव अनन्तकाल तक भी इससे किनारा नहीं कर पाता है। अत: अज्ञान एवं मोह को दूर करके ही भवचक्र एवं सुख-दु:ख की शृङ्खला को तोड़कर अनन्त सुख का अनुभव किया जा सकता है।

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 10
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

धर्मशिक्षा : जीवननिर्मात्री

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- धर्म-शिक्षा को जीवन में रमाने के लिए काम-वासना को उपशान्त एवं नियन्त्रित करना, मोह की प्रबलता को दबाना और अमर्यादित लोभ का निग्रह करना आवश्यक है।
- जब आत्मा में सम्यग्ज्ञान की सहस्र-सहस्र किरणें फैलती हैं और उस आलोक से जीवन परिपूर्ण हो जाता है, तब काम, क्रोध और लोभ का सघन अन्धकार टिक ही नहीं सकता।
- मनुष्य के अन्त:करण में व्याप्त सघन अन्धकार को जो विनष्ट कर विवेक का आलोक फैला देता है, वह 'गुरु' कहलाता है।
- जीवन-रथ को कुमार्ग से बचाकर सन्मार्ग पर चलाने के लिए अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए योग्य गुरु की अनिवार्य आवश्यकता है।
- अनुकूल निमित्त मिलने पर जीवन बड़ी तेजी के साथ आध्यात्मिकता में बदल जाता है।
- जिस प्रकार खाने से ही भूख मिटती है, भोजन देखने या भोज्य पदार्थों का नाम सुनने से नहीं; इसी प्रकार धर्म को जीवन में उतारने से, जीवन के समग्र व्यवहारों को धर्ममय बनाने से ही वास्तविक शान्ति प्राप्त हो सकती है।
- ज्ञानी पुरुष का पौद्गलिक पदार्थों के प्रति मोह नहीं होता।
- जो लोग आहार के सम्बन्ध में असंयमी होते हैं, उत्तेजक भोजन करते हैं, उनके चित्त में काम-भोग की अभिलाषा तीव्र रहती है। वास्तव में आहार-विहार के साथ ब्रह्मचर्य का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- मनुष्य के मन की निर्बलता जब उसे नीचे गिराने लगती है तब व्रत की शक्ति ही उसे बचाने में समर्थ होती है।
- व्रत अङ्गीकार नहीं करने वाला किसी भी समय गिर सकता है। उसका जीवन बिना पाल की तलाई जैसा है, किन्तु व्रती का जीवन उज्ज्वल होता है।
- एक मनुष्य अगर अपने जीवन को सुधार लेता है तो दूसरों पर उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।
- पुद्गल एवं पौद्गलिक पदार्थों की ओर जितनी अधिक आसक्ति एवं रति होगी, उतना ही आन्तरिक शक्ति का भान कम होगा।
- सम्यग्दृष्टि जीव में दर्शनमोहनीय का उदय न होने से तथा चारित्रमोहनीय की भी तीव्रतम शक्ति (अनन्तानुबन्धी कषाय) का उदय न रहने से मूर्च्छा-ममता में उतनी सघनता नहीं होती जितनी मिथ्यादृष्टि में होती है।
- जब तक परिग्रह पर नियन्त्रण नहीं किया जाता और उसकी कोई सीमा निर्धारित नहीं की जाती तब तक हिंसा आदि पापों का घटना प्राय: असम्भव है।
- जब तक मनुष्य इच्छाओं को सीमित नहीं कर लेता तब तक वह शान्ति नहीं पा सकता और जब तक चित्त में शान्ति नहीं, तब तक सुख की सम्भावना ही कैसे की जा सकती है?
- परिमाण कर लेने से तृष्णा कम हो जाती है और व्याकुलता मिट जाती है। जीवन में हल्कापन आ जाता है और एक प्रकार की तृप्ति का अनुभव होने लगता है।
- मन में सन्तोष नहीं आया तो सारे विश्व की भूमि, सम्पत्ति और अन्य सुख-सामग्री के मिल जाने पर भी मनुष्य शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता।
- पेट की भूख तो पाव दो पाव आटे से मिट जाती है, मगर मन की भूख तीन लोक के राज्य से भी नहीं मिटती। *-'अमृत-वाक्' पुस्तक से साभार*

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 11
ISSN 2249-2011

प्रवचन

कब आयेंगे अन्धकार से प्रकाश में?

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा लाल भवन चौड़ा रास्ता, जयपुर में 02 सितम्बर, 1993 को दिए गये प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमारजी जैन (हरसाना वाले), जयपुर ने किया है। -सम्पादक

असार संसार से आत्म-विकास का सार निकालने वाले अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन और अनन्त सुख का सागर लहराने वाले तीर्थङ्कर भगवन्त तथा आत्म-विकास में एकमेक होकर जीवन समर्पित कर चलने वाले पञ्च परमेष्ठी सन्त भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थङ्कर भगवान महावीर की अन्तिम अनुपम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र दु:ख की जड़ और दु:ख का मूल अज्ञान मानकर चलता है। जब तक अज्ञान का अन्धकार रहेगा, मानव आत्म-विकास का पथ छोड़कर दु:ख की जड़ की ओर, विनाश की ओर गति करता दिखेगा। उपकारी की अवहेलना करेगा और अपकारी को चाहेगा, अविनाशी से सम्बन्ध विच्छेद करेगा और विनाशी को गले लगायेगा। जीवन भर साथ निभाने वाले, त्रिकाल तक साथ रहने वाले आत्मा की उपेक्षा करेगा और शरीर-सुख के पीछे भागता फिरेगा। अगर मूल को लेकर कहा जाय तो एकमात्र अज्ञान और मिथ्यात्व या मात्र विपरीत समझ ही इसका मूल कारण है। यही बात सातवें अध्ययन में समझाई गई है। तीर्थङ्कर भगवन्त स्वयं रूपक से शुरू कर रहे हैं-

जहाऽएसं समुद्दिस्स, कोई पोसेज्ज एलयं।
ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जा वि सयंगणे।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 7, गाथा 1

सातवें अध्ययन का प्रारम्भ किया जा रहा है। तीर्थङ्कर भगवान महावीर एक गृहस्थ के घर से इस अध्ययन को प्रारम्भ कर रहे हैं। घर के एक मालिक ने तीन जीवों को अपने बाड़े में पालना चालू किया-1. गाय, 2. बकरा, 3. बछड़ा। दूध देने वाली, खाद देने वाली, बेलों को प्रसवित कर खेत में मेहनत करने के योग्य बनाने वाली गाय हर क्षेत्र को पवित्र करने वाली है उसके साथ एक बछड़ा भी पाल रखा है। सुबह उठकर घर का मालिक उन्हें सूखी दूब डालता है। जो बकरा पाल रखा है उसके लिए स्पेशल एक आदमी रख रखा है, वह उसे प्रात:काल नहलाता है, आदमी के खाने लायक चावल खिलाता है। उसमें भी मिष्टान्न डालकर खिलाता है। उसे खिला-पिलाकर मेहंदी के छाप लगाकर सजाता है, बकरे के खा लेने के बाद गाय और बछड़े को सूखी दूब (घास) डालता है। एक दिन सूखी घास को देखकर बछड़े ने मुँह मोड़ लिया। बछड़ा बोला-''माँ! आखिर इस मालिक की मति कहाँ गई? यह दूध देने वाली, गोबर देने वाली, बैल देने वाली, पञ्चद्रव्य अमृत देने वाली तुझे सूखी घास खिलाता है और मुझे भी यही खिलाता है। माँ! आज मैं इसे नहीं खाऊँगा।'' आपकी भाषा में कहूँ-बछड़ा नाराज़ हो गया।

मैं सामायिक करता हूँ, मैं प्रतिक्रमण करता हूँ, मुझे तो कोई नहीं पूछता है, महाराज मीटिंग लेते हैं तो पैसे वालों की। हमको कोई पूछता ही नहीं है। आप भी रूठो या नहीं? बछड़ा कह रहा है-मुझे सूखी घास डालता है इसका दु:ख नहीं है, तुझे डालता है इसका दु:ख है। बछड़े ने मुँह बन्द कर लिया, गर्दन फेर ली। गाय (माता) ने कहा-''बेटा! सूखे खाने में जो अमृत है, वह चावल में नहीं।'' आयम्बिल में जो अमृत है वह पाँच विगय के खाने में नहीं। रूखे पदार्थ खाने वाला कर्म का बन्ध तोड़ता है तो माल-मलीदे खाने वाला कर्म का

बन्ध करता है। जितना पदार्थ गरिष्ठ है, उसके साथ उतनी ही आसक्ति है, उतना ही बन्ध है।

बसेड़ी में जँवाई बैठा हँस रहा है, घर में बेटी को नहाते देखकर सजते-सँवरते देखकर। माता-पिता उसे लाड़ करके खिला रहे हैं, सजा रहे हैं, जँवाई हँस रहा है, ''वर्षों इणरा घणा लाड़ करो, काले मैं ले जाऊँगा।'' पिता द्वारा झूठ बोलकर, अनीति से, अन्याय से कमाये हुए धन को देखकर बेटा हँस रहा है और सोच रहा है- बापूजी ने कर्म बाँधकर खूब धन इकट्ठा किया है। अब हम तो मौज करेंगे। इसी तरह शरीर को सजाते, नहलाते देखकर बुढ़ापा हँस रहा है-खूब नहालो एक दिन मैं आऊँगा तब खाट पर से भी उठना मुश्किल हो जायेगा। शरीर को देखकर मौत हँस रही है और कह रही है-जो तेरा है उसको तू सजा नहीं रहा है, लेकिन जो मेरा है उसे तू सजा रहा है। जिस शरीर को आप सजा रहे हैं एक दिन मौत ले जायेगी। बछड़ा रूठ गया, आज से खाना बन्द। मारवाड़ी में कहावत है-

आव नहीं आदर नहीं, नहीं नैनन में नेह,
'तुलसी' वा घर न जाइये, चाहे कञ्चन बरसे मेह।।

गाय ने अपने बछड़े को जिह्वा से चाटकर कहा- ''इस सूखी घास को खाने में जो मजा है, वह मिष्टान्न में नहीं।'' आज जो बटके खा रहा है, उनके कल झटके लगेंगे। पावणा (मेहमान) आने दे, तेरी क्या सम्मान की स्थिति होती है, बकरे की क्या स्थिति होती है! तीर्थङ्कर भगवान की वाणी में कह रहा हूँ जब तक मेहमान नहीं आ रहा है तब तक नहलाये जा रहे हैं, एक झटका लगेगा, माँस काटा जाएगा। जब काल का झटका लगेगा, तब हवेली, धन-खज़ाना वाला कोई दूसरा ही होगा। यह कटु सत्य है। इसलिये भगवान महावीर कह रहे हैं-मानव! जिससे दोस्ती करनी चाहिये, उससे दुश्मनी की जा रही है। जिसे सर्वस्व समझना चाहिये, उसकी उपेक्षा की जा रही है। जो निश्चय ही धोखा देने वाला है, उसके गले मिले जा रहे हैं।

जरा चिन्तन करो, जिसके कारण आपकी कीमत है, जिसके कारण इज्जत पा रहे हैं, उसे नहीं सम्भाला। वह कभी रूठ गया तो आपकी कीमत नहीं रहेगी। आपकी भाषा में कहूँ-आपकी कीमत क्या गोरे तन से है या एम्बेसेडर कार से? नहीं, इन दोनों से नहीं। आपकी कीमत धर्म से है। अगर यह धर्म नहीं रहा तो आपकी पूछ क्या? आप मन्त्री हैं, आप संघ अध्यक्ष हैं, आप प्रधानमन्त्री हैं, इस तरह तब तक आपकी पूछ है, जब तक आपके भीतर में आत्मा है। यह जीव आप में है तब तक आपकी पूछ है। यह चला गया तो तुमको कोई नहीं पूछेगा। अचम्भा है, इसके लिए फुर्सत नहीं है।

जब तक हाथ-पैर चलते हैं, जब तक होश में हो तब तक कुछ करना चाहो तो कर लो। उस मालिक के घर मेहमान आया, बकरे को नहलाया, धुलाया, हाथ में छुरी ली और हलाल कर दिया। उसका क्या हुआ और आपका क्या होगा? अचम्भा है आज! घर चोखो है, खानदान चोखो है, लेकिन लड़की काली है। बापजी! पिताजी के कहे अनुसार कहना मानकर शादी तो कर ली, परन्तु साथ ले जाते शर्म आती है। मिलने जावे ससुराल में तो अकेला ही जावे। जो रूप दुश्मन है, जिस रूप ने राम और रावण को लड़ा दिया। जिस रूप के पीछे सतियाँ आग में कूद पड़ी।

जरा घर जाकर देखना तो सही आपकी भक्ति किसमें लगी हुई है? कहते हैं रात्रि में भोजन मत करो। आप कहते हैं बापजी! ये तो बनेगा नहीं। हम भी डूबेंगे और दूसरों को डुबोयेंगे। बर्फ पर रखकर सलाद खिला रहे हैं। आप जानते हैं, लेकिन हिम्मत नहीं जो इस रिवाज़ को बदल दें। आपके मन में नहीं आती।

मुझे याद है बसेला के गाँव में बारातियों ने कहा कि आलू की सब्जी बननी चाहिये। लड़की वाले ने कह दिया-मेरे गाँव में आलू नहीं खाया जाता, इसलिये मेरे यहाँ भी नहीं बनेगा, चाहे लड़की मेरी कुँवारी रह जाये। मुझे आज तुम लोगों को जैन कहते शर्म आ रही है। धर्मी का क्या कर्त्तव्य है? रात को ग्यारह बजे खा रहे हैं,

लहसून, प्याज खा रहे हैं। वैष्णव परम्परा में फूलों का हार छोड़कर चन्दन का हार पहना रहे हैं। महाराज श्रेणिक के सामने साध्वी आयी वह गर्भवती थी। महाराज श्रेणिक ने कहा साध्वी है तो गर्भवती नहीं हो सकती। गर्भवती है तो साध्वी नहीं हो सकती। आज तो झूठी अफवाह फैलाई जा रही है। जैन कैसा बोले-सत्य बोले, मीठा बोले, चतुराई से बोले।

जैन होकर आप नरक में जाने का काम कर रहे हैं। धर्म करने वाले को लोग याद करते हैं। आप भी इतिहास में नाम लिखाना चाहते हैं तो इन रिवाज़ों को बदलो। शराब का त्याग करो, धर्म के रास्ते पर चलो, अगर आप ऐसा करेंगे तो खुशी होगी, सुख और शान्ति को प्राप्त करेंगे, जो करेगा वह पायेगा। ■

पाँच स्थावरों के गुण

श्री जेठमल चोरड़िया

1. पृथ्वीकाय में तीन गुण-(1) आधारशीलता (2) उपजाऊ धर्मिता (3) सहनशीलता (समस्त) अशुचि को अपने में समाहित कर लेना। (समावेशशीलता)

2. अप्काय (जल) के तीन गुण-(1) स्वच्छ करना (2) शीतलता देना (3) प्यास बुझाना। ये तीन गुण किसी भी अन्य पदार्थ में साथ नहीं हैं।

3. तेजस्काय (अग्नि) के तीन गुण-(1) दाहकता (2) पाचकता (3) प्रकाशकता।

4. वायुकाय के तीन गुण-(1) प्रवाहशीलता (2) प्राणशीलता (3) परिवहनशीलता। शुद्ध वायु (ऑक्सीजन) मनुष्य एवं सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। जीवनदाता है।

5. वनस्पतिकाय के तीन गुण-(1) तन को आरोग्य एवं जीवन देना (2) अनाज, फल-फूल, साग-सब्जी के रूप में आहार प्रदान करना (3) सृष्टि (पूरी दुनिया) को सौन्दर्यपूर्ण एवं प्रदूषणमुक्त प्राणदायक ऑक्सीजन प्रदान करता है।

नोट-(1) पीपल का वृक्ष चौबीस घण्टे ऑक्सीजन प्रदान करता है। (2) नीम का वृक्ष सबसे शुद्ध ऑक्सीजन देता है। तुलसी का पौधा भी शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करता है।

प्रिय धर्मानुरागी सज्जनों, वीर प्रभु ने चौबीस लाख वनस्पति बतलाई है। आप 100-150 तक छूट रखकर बाकी वनस्पतिकाय के जीवों को अभयदान प्रदान कीजियेगा। सातवें श्रावक व्रत में 26 बोलों की मर्यादा कीजिये। नित्य चौदह नियम चितार कर फिर से वनस्पति को संकुचित करके मेरु पर्वत जैसे पाप को सरसों के दाने के बराबर कीजियेगा।

सावधानी-(1) अनजाना फल एवं साग-सब्जी नहीं खायें। (2) जमीकन्द ग्रुप के वनस्पति का पूर्ण त्याग करें। (3) अनावश्यक रूप से वनस्पति का छेदन-भेदन न करें। (4) सचित्त फूल की माला के स्थान पर आर्टिफिशियल फूलों का प्रयोग कीजियेगा। 'अहिंसा परम धर्म है' जैनधर्म का मौलिक सिद्धान्त है।

शाकाहारी एवं मांसाहारी संयुक्त होटल या ढाबा में या किसी भी ऐसे संस्थान पर सामाजिक एवं वैवाहिक कार्य नहीं रखियेगा। यह पूर्णत: प्रबल दोष युक्त है। जैनधर्म की अहिंसा के सर्वथा विपरीत है। वहाँ का भोजन-नाश्ता तो बहुत दूर की बात है, वहाँ का पानी भी सेवन योग्य नहीं है। ऐसे संस्थानों में कार्यक्रम रखने वालों का पूर्णत: बहिष्कार करना आवश्यक है।

-कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 14
ISSN 2249-2011

प्रवचन

क्रोध कषाय के लगाएँ ताला

महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के द्वारा घोषित भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा 2 अगस्त, 2021 को राता उपाश्रय, पीपाड़सिटी चातुर्मास में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

विद्या, विनय और विवेक की त्रिवेणी में अवगाहन कर वीतरागता का वरण करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी तीर्थङ्कर भगवन्तों को वन्दन!

चतुर्विध संघ की सारणा-वारणा-धारणा करने वाले और संघ का रक्षण-संवर्धन करने वाले जीवन-नैया के निर्णायक, चतुर्विध संघ के नायक, आचार्य भगवन्त को वन्दन-नमन करने के पश्चात्।

बन्धुओं!

वीतराग वाणी की महिमा अचिन्त्य है। क्योंकि वीतराग वाणी रोगी को नीरोगी, भोगी को योगी और रागी को वैरागी बनाती है। संसार में कई तरह की वाणियाँ हैं, पर सर्वश्रेष्ठ वाणी तो यह वीतराग वाणी है। जो व्यक्ति वीतराग वाणी सुनता है, उस पर श्रद्धा करके आचरण करता है तो सुनने वाला एक-न-एक दिन तिरता ही है।

आप-हम भाग्यशाली हैं जिन्हें वीतराग वाणी सुनने का सुअवसर मिल रहा है। इस वाणी को सुनकर और श्रद्धा-भक्ति के साथ आचरण में लाकर अनेकों जीव तिरे हैं, तिरते हैं और तिरेंगे भी तथा जो वीतराग वाणी नहीं सुनते हैं, वे भव-भ्रमण करते हैं और चारों गतियों में गोता लगाते हैं। आप-हम और जो भी भव-भ्रमण नहीं करना चाहते, उनके लिए श्रेष्ठ कोई वाणी है तो यह वीतराग वाणी है।

हम चातुर्मास के प्रारम्भ से जिनवाणी में वर्णित कषायों के चार भेदों में से क्रोध-कषाय पर चिन्तन करते आ रहे हैं। क्रोध क्यों आता है और क्रोध आने पर उसका शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस पर विचार-चिन्तन किया जा रहा है। आप जानते हैं, आपके अनुभव में आया होगा कि क्रोध आने पर आँखें लाल हो जाती हैं, होठ फड़फड़ाते हैं, माथे पर सल पड़ जाते हैं, हाथ-पैर ही नहीं, पूरे शरीर पर क्रोध के प्रभाव से कम्पन शुरू हो जाता है।

मैं कोई नई बात नहीं कह रहा हूँ। जो कुछ भी कहा जा रहा है वह पावर हाउस से आ रहा है। मैं क्या कहूँ-सन्त भगवन्त भी जब तक दसवें गुणस्थान पर नहीं पहुँचते, उन्हें क्रोध आ सकता है, आता है। आपको क्रोध आता है तो हमें भी क्रोध आ सकता है। आप चाहे मिथ्यादृष्टि हों या सम्यग्दृष्टि, श्रावक हों या फिर साधु ही क्यों न हों जब तक दसवें गुणस्थान पर यह जीव नहीं पहुँचता तब तक क्रोध-कषाय का अन्त होने वाला नहीं है। अभी तो हमारे आठवें-नौवें गुणस्थान का पता नहीं, तो फिर दसवाँ गुणस्थान कैसे आयेगा? कोई मन से महाराजा बन जाये उसका तो क्या कहना?

हम साधु हैं, आप श्रावक हैं। श्रावक होकर भी कई तो ऐसे हैं जो अपने-आपको गर्व से श्रावक कहते हैं और यह भी कहते हैं कि रात्रि भोजन के मेरे त्याग हैं। कई श्रावक हैं, जो अपने व्रत-नियमों को गिनाते हैं। व्रत-नियमों की बात तो छोड़िये, कई ऐसे भी मिल जायेंगे जो यह कहते हैं कि मैं प्रतिदिन चार-पाँच सामायिक करता हूँ।

आप श्रावक हैं। सामायिक करते हैं तो यह अच्छी बात है, पर बार-बार गिनती बताने से क्या आप छठे गुणस्थान पर पहुँच सकते हैं? मेरा तो यही कहना है कि धर्म या पुण्य करके उसको प्रकट नहीं करें। पुण्य प्रकट करने से पुण्य घटता है तो पाप प्रकट करने से पाप

भी घटता है। आपको क्या करना है? आप क्या करते हैं? आप अपना विचार करना।

एक भाई गुरुदेव के पास आकर बोला-''बाबजी! आज रो अखबार देखियो या नहीं?'' हम अखबार मँगाकर नहीं देखते, पर कभी हाथ में आ जाए तो उसे देखने में हर्ज़ भी नहीं समझते। हम अखबार नहीं देखते ऐसा तो नहीं कहता, पर ज्ञान जहाँ-कहीं से मिले अच्छाई ग्रहण करते ही हैं।

उस भाई के हाथ में अखबार था। अखबार खोला और अपनी फोटो दिखाते हुए कहा-''आपने इसे देखा या नहीं?'' वह भाई वृत्तान्त भी सुनाने लगा। होता है, ऐसा कई भाई करते हैं, परन्तु ज्ञानीजनों का तो कथन है कि पुण्य बाहर में बताने की चीज नहीं है। बताना है तो, पाप बताओ। पुण्य-पाप दोनों प्रकट करने से घटते हैं। कई हैं जो पाप छिपाने की कोशिश करते हैं और पुण्य को उजागर करते हैं। वे नहीं समझते कि पाप एक-न-एक दिन सामने आता ही है। आपने यह दोहा कई बार सुना होगा, आप बोलते भी हैं-

पाप छिपायाँ ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दाबी दूबी ना रहे, रूई लपेटी आग।।

आपको प्रकट करना ही है, तो पाप को प्रकट करें, पुण्य को नहीं।

हमारा क्रोध-कषाय को लेकर चिन्तन चल रहा है। जब क्रोध समाप्त हो जायेगा तो सिद्धि जरूर मिलेगी। आपको मञ्ज़िल प्राप्त करनी है तो पहले राह पकड़नी पड़ेगी। आप बोलते तो हैं-

मुझे अरिहन्त बनना है।

मुझे सिद्ध बनना है।

अरे भाई! बोलने मात्र से न तो अरिहन्त बना जा सकता है और न ही सिद्ध। आपको अरिहन्त और सिद्ध बनना है तो पहले साधु बनना होगा। आप तपस्या में देख लीजिये-कोई कहे कि मैं तो सीधी अठाई करता हूँ। अठाई करने वाले को पहले उपवास करना पड़ेगा। उपवास-बेले-तेले करते-करते तो अठाई होती है। बस, यही बात अरिहन्त-सिद्ध बनने के लिए है। आपको पहले साधु बनना होगा। संयम में आने के बाद अरिहन्त-सिद्ध बनने की राह मिल सकती है।

गुरु हीरा की चरण-सन्निधि में आने वाला राही बन सकता है। राही को राह जरूर मिलती है। वह एक-न-एक दिन कर्मों का क्षय करके सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बन सकता है।

अपना विषय क्रोध-कषाय का चल रहा है। क्रोध आता क्यों है? क्रोध-कषाय से क्या-क्या हानियाँ होती हैं? आप इन बातों को सुनकर ही न रहें इन्हें आचरण में ढालने का प्रयास भी करें तो गुरु हीरा के राही बनने में देर नहीं लगेगी।

मुम्बई से एक बहिन गुरुदेव की सेवा में आई। बात-बात में उसने बताया कि मैं तो सिगरेट पीती हूँ और अवसर आए तो शराब भी पी सकती हूँ।

गुरुदेव ने कहा-''बहिन! तुम्हें मानव जीवन मिला है, उसे व्यसनों में बर्बाद नहीं करना चाहिए?''

बहिन का जवाब था-''बाबजी! मनुष्य जन्म मिला है, तो सबका स्वाद लेना चाहिए।''

अनुभवी गुरु ने कहा-''तुम्हें सब चीजों का स्वाद लेना है तो फिर यह जो गटर है, गटर में पानी भी बह रहा है इसका भी स्वाद लेकर देखो तो। ऐसा गन्दा नाला देवलोक में नहीं मिलेगा।'' देवलोक में खाने-पीने की तृप्ति रहती है। आप घर से भोजन करके आए हैं, रास्ते में कोई मनुहार करे तो.....? घर से खाकर आए हैं, फिर भी मिठाई खाने में हर्ज़ नहीं मानते। चाय की मनुहार टालना मुश्किल हो जाता है।

आपने सुना होगा-एक भाई घर से जीमकर आया। किसी के हाथ में थाल था, उसमें पाँच किलो गुलाब जामुन थे। बात-बात में शर्त हो गई। कहा-ये सारे गुलाब जामुन खा लो तो ठीक अन्यथा डबल देने होंगे। देखते-देखते वह भाई सारे गुलाब जामुन चट कर गया।

ये दिन खाने के नहीं, तपस्या करने के हैं। तपस्वी

श्री सागमरलजी म.सा. का 59 दिन का संथारा सीझने का दिन आ रहा है तो पूज्यपाद आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का स्मृति-दिवस भी आ रहा है। आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. का पुण्य-दिवस भी आ रहा है। आने वाले पाँच दिन तपाराधन-धर्माराधन करने के हैं। आप दया-संवर करें, उपवास-पौषध करें, पचरङ्गी में नाम लिखायें, जिससे जो बने वह कुछ-न-कुछ तप करने की कोशिश करे, पर कोई खाली नहीं रहे।

आप सबको भव-भ्रमण मिटाना है तो क्रोध-कषाय की हानियाँ सुनें और क्रोध-कषाय छोड़ने का प्रयास करें। क्रोध प्रीति का नाश तो करता ही है, दुर्गति में भी ले जाता है। आपने चण्डकौशिक का वृत्तान्त सुन रखा है। वह ज़हरीला नाग क्यों बना? उसका जीव साधु का था, लेकिन क्रोध के आवेश में उसे चण्डकौशिक सर्प बनना पड़ा। क्रोध करने से साधु भी तिर्यञ्च गति में जा सकता है तो आप क्या हैं?

क्रोध करने से जीव दुर्गति में जाता है, इसलिए आप यह जो जिनवाणी सुन रहे हैं, सुनकर पहले क्रोध-कषाय के ताला लगायें। पूरी तरह क्रोध-कषाय को समाप्त न कर सकें तो भी उसे कम करने का प्रयास करें। आप क्रोध-कषाय से जितनी-जितनी मात्रा में हटेंगे उतनी-उतनी मात्रा में सुख-शान्ति और आनन्द प्राप्त कर सकेंगे। ■

क्षणिकाओं में बोध

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

(1)
मुक्त होने की प्यास
उनको होती है
जिन्हें बन्धन का
बोध होता है।

(2)
कानों से सुनने वाला
श्रोता कहलाता है
और...
प्राणों से सुनने वाला
श्रावक कहलाता है।

(3)
वाणी और पानी
दोनों महत्त्वपूर्ण हैं
अत: विवेक पूर्वक
उपयोग करें।

(4)
जिसे जानते हैं, मानते हैं
मगर छोड़ते नहीं,
यही हमारा
अविवेक और अज्ञान है।

(5)
साधना से....
साधनों को...
साधना ही साधना है।

(6)
मन के बिना
मोक्ष नहीं
और...
मन को छोड़े
बिना भी मोक्ष नहीं।

-(प्रवचन से संकलित)

संकलनकर्त्ता-राजेन्द्र जैन 'राजा', 44/222, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020(राज.)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 17
ISSN 2249-2011

प्रवचन

समस्त दुःखों का मूल : इच्छा और कामना

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा मानसरोवर-जयपुर चातुर्मास में फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्री पदमचन्दजी गाँधी, जयपुर ने तथा सम्पादन निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, जोधपुर ने किया है। **-सम्पादक**

जब तक संसार है तब तक दुःख है। दुःख का मूल इच्छा है, कामना है। जीव अनादिकाल से इन इच्छाओं की पूर्ति में ही समस्त पुरुषार्थ कर अपने आप को संसार परिभ्रमण में धकेलता रहा है। एक इच्छा की पूर्ति सुख का आभास तो दे सकती है, पर सुख नहीं। इच्छा की पूर्ति से मिलने वाला सुख न वास्तविक है, न शाश्वत। आप में से अधिकांश व्यवसायी हैं। अर्थशास्त्र की भाषा में इच्छा को माँग शब्द से सम्बोधित किया गया है। एक माँग की पूर्ति पुनः एक नई माँग को जन्म देती है। जब तक माँग पूर्ति का यह चक्र चलता रहेगा तब तक सुख कैसे मिल सकता है? अतुल वैभव के स्वामी चक्रवर्ती बनकर भी इच्छाओं की कभी पूर्ति हो पाई है? चौथे चक्रवर्ती सम्भूम का उदाहरण आप सबके सामने है। छह खण्ड की विजय भी राज्य और प्रतिष्ठा की लालसा को कहाँ शमित कर पाई। चक्रवर्ती सातवें खण्ड विजय की लालसा में अथाह जल राशि में समाहित हो गया। एक लेखक की यह पंक्ति कितनी सटीक है–"When dreams take flight, sky is no limit." मन के सपनों की उड़ान के लिए तो अनन्त आकाश भी छोटा पड़ जाता है। भवनपतिदेव के मोजड़ी में लगे एक रत्न की कीमत के सामने समग्र जम्बूद्वीप का वैभव कम बताया गया है, फिर भी क्या देवों के देव देवेन्द्र की लालसा या इच्छा पूरी हो पाई है। तत्त्वविदों ने इसलिए ही देव गति में लोभ संज्ञा की प्रधानता बताई है। प्रभु ने भी अपनी देशना में फरमाया है–"**इच्छा हु आगाससमा अणंतिया।**" अर्थात् इच्छा तो आकाश के समान अनन्त है। क्या इसकी कोई थाह पा पाया है? नहीं, इसी प्रकार इच्छाएँ भी असीम हैं, अनन्त हैं।

प्रत्येक संसारी प्राणी सुखी संसार की कामना करता है। यानी संसार में सुख ही चाहता है, पर क्या कभी संसार में सुखी संसार की कामना पूर्ति हो सकती है? दुःख मूल इस संसार में सुख कैसे मिल सकता है? प्रारम्भिक स्तर पर प्राप्त में ही सन्तोष एवं आगे चलकर इच्छा मात्र की समाप्ति ही सुख के मार्ग पर आगे बढ़ा सकती है। संसार के दुःखों एवं कामना पूर्ति के अभाव से सन्त्रस्त एक व्यक्ति समाधान हेतु गुरु चरणों में पहुँचा। हमारी संस्कृति में गुरु का स्थान बहुत ऊँचा है। वे शिष्य के अज्ञान अन्धकार को मिटाकर आत्मज्योति प्रकट करने का मार्ग दिखाने वाले हैं; शिष्य के हृदय की जिज्ञासा का समाधान करने वाले हैं। अस्तु शिष्य ने गुरु चरणों में प्रश्न प्रस्तुत किया–'I want happiness.' गुरुदेव ने समाधान देते फरमाया–वत्स! समाधान तो तुम्हारे प्रश्न में ही समाहित है। जब तक 'I' एवं 'Want' रहे हैं तब तक Happiness मिल नहीं सकती है। जैसे ही 'मैं' और 'इच्छा' को भुला दोगे, मिटा दोगे प्रसन्नता का सागर सामने ही है। सभी इच्छाएँ जब एक इच्छा में सिमट जाती हैं, समाहित हो जाती हैं–'सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' तब यह जीवात्मा बुभुक्षु से मुमुक्षु बन जाता है।

साधना पथ का साधक संसार की कामना को तिरोहित कर प्राप्त यत्किञ्चित् को भी त्याग कर अकिञ्चन बन गुरु चरणों में सब कुछ समर्पित कर देता है। सब कुछ के साथ (सर्व) अपने आप (स्व) को भी समर्पित कर देता है। हे भंते! अब यह जीवन नैया आपके हाथों में है, आप ही इसे पार लगाना। मेरी अब कोई

इच्छा नहीं। जो आप देंगे वह खा लूँगा, आप जैसा कहेंगे वैसा रहूँगा। मैं (I) और माँग (Want) को मिटा कर गुरु-चरणों में समर्पित हुआ, राह आसान हो गई, मञ्ज़िल सामने है, तो शाश्वत सुख एवं प्रसन्नता (Forever permanent uniterrupted happiness) प्राप्त हो जाती है।

इच्छा ही दु:ख का मूल है, सारे झगड़ों की जननी है। चारों कषाय इच्छा देवी से पल्लवित होते हैं। व्यक्ति स्वयं तो इस इच्छापूर्ति के जाल में दु:खी होता है। अपनी इच्छानुसार एक-दूसरे से की गई अपेक्षा पूर्ति न होने के कारण अपने आपको उपेक्षित अनुभव करता है।

इस अपेक्षा और उपेक्षा के चक्र में संयुक्त परिवार भी बिखर गए, यह आज की सामाजिक त्रासदी है। यही नहीं जिस समाज की संरचना भी सभी को दु:ख से बचाने, अनुशासन एवं सुव्यवस्था के लिए की गई है उसका सामाजिक तानाबाना भी बिखर जाता है। समाज परस्पर द्वेष, वैमनस्य से टुकड़ों में बँट जाता है। इच्छा पूर्ति न होने पर क्रोध उत्पन्न होता है। इच्छा की पूर्ति होने पर अहंकार उत्पन्न होता है। इच्छा पूर्ति के लिए व्यक्ति माया करने में भी गुरेज नहीं करता है। इच्छा की उत्पत्ति तो अप्राप्त की प्राप्ति के लोभ से होती है तो पूर्ति नवीन लालसा को यानी **'जहा लाहो तहा लोहो'** की जनक है। क्रोध, मान, माया और लोभ का यह दुश्चक्र इच्छा का ही तो परिणाम है।

क्रोध प्रीति का, मान नम्रता का, माया मित्रता का तथा लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है। आगमकारों ने दशवैकालिकसूत्र की 38वीं गाथा में फरमाया है-

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयणासणो।
माया मित्ताणि णासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

इच्छा पूर्ति के लिए व्यक्ति क्या-क्या अनर्थ नहीं करता है। अपनी शान्ति को खो देता है एवं दूसरों को भी अशान्ति के मार्ग पर ले जाता है। इच्छाओं का दास पूर्व पुण्यजनित धन-वैभव सम्पन्नता होने पर भी वस्तुत: दरिद्र ही है, इच्छा पूर्ति के प्रयास के मकड़जाल में अपने आप को ही भुला देता है, न स्वयं सुखी रहता है और न दूसरों के सुख का भी हेतु नहीं बन पाता है। मम्मण सेठ का उदाहरण आप सब जानते हैं। **छप्पन करोड़ धन जोडियो गयो माथो फोड़।** अतुल वैभव का स्वामी भी भयंकर शीत में दरिद्र भी न करें ऐसा पुरुषार्थ करता है, पर यह भी कोई पुरुषार्थ है।

जिसके जितनी-जितनी इच्छा, अप्राप्त की लालसा उतनी ही दरिद्रता और गरीबी, उतना ही अभाव, उतनी ही अन्तराय। अन्तराय टूटने का परिणाम तो इच्छा का अभाव होना ही समझना चाहिए। इच्छा की यह होड़ सम्पन्न समाज प्रमुखों में सन्तोष न झलकने और कमजोर की आवश्यकता पूर्ति न होने से और अधिक भड़कती है। **श्रद्धेय उपाध्याय भगवन्त ने लाल भवन जयपुर** के चातुर्मास में एक भाई को प्रेरणा देते हुए कहा-कब तक दौड़ते रहोगे? भाई ने जवाब दिया-महाराज! मेरे पास क्या है? मेरे से बड़े-बड़े बैठे हैं, इनकी दौड़ का अन्त नहीं। ऐसी सोच में व्यक्ति दिन-रात दौड़ता रहता है। जीवन समाप्त हो जाता है, पर इच्छा का अन्त नहीं होता है। जीवन समाप्त हो जाए इच्छा नहीं, यह तो दुर्गति का कारण है। **मूच्छा परिग्गहो वुत्तो।** मूर्च्छा ही परिग्रह है जीवन समाप्ति के पहले इच्छा समाप्त हो जाए, यही सद्गति का कारण है।

भिखारी कौन? जो इच्छा का गुलाम वही वास्तविक भिखारी है। एक भिखारी भीख माँग रहा था। बादशाह को देखा, इच्छा हुई बादशाह से माँग लें, घर-घर भीख नहीं माननी पड़ेगी। बादशाह से माँगने पर कहा इबादत का समय हो गया है नमाज़ पढ़ लूँ, जो चाहे माँग लेना। बादशाह नमाज़ पढ़ते अपने इष्ट से माँग रहा था-हे अल्लाह! सुख देना, सम्पत्ति देना, राज्य वृद्धि हो। नमाज़ पढ़कर भिखारी से कहा-माँगों क्या चाहिए? भिखारी बोला-भिखारी से क्या माँगना? तुम तो मेरे से बड़े भिखारी हो। माँगना होगा तो उसी से माँग लूँगा जिससे तुम माँगते हो।

विश्वविजेता सिकन्दर ने मरने से पहले अपने कर्मचारियों को आदेश दिया-(1) खज़ाने में जितना धन है उसका ढेर लगाओ, मैं देख सकूँ। (2) मेरा ज़नाजा मेरे वैद्य उठाएँ। (3) मेरे ज़नाजे में मेरे दोनों हाथ बाहर रखना। मन्त्री ने पूछा-सम्राट् ऐसा क्यों? सिकन्दर बोला-मुझे एहसास हो कि जिस धन-सम्पत्ति, राज्य-वैभव के लिए मैंने कितनों का खून बहाया, कितनों की माँग उजाड़ी,मैं कभी चैन से नहीं बैठा, जीवन भर भटकता रहा, मुझे एहसास है कि न यह मुझे बचा सकता है, न मेरे साथ चलने वाला है। वैद्यों के पास ऐसी कोई औषधि नहीं जो मृत्यु का इलाज कर सके। जनता यह देखे कि विश्व विजेता सिकन्दर खाली हाथ जा रहा है, एक फूटी कौड़ी भी अपने साथ नहीं ले जा पा रहा है।

प्रभु की अन्तिम धर्म देशना उत्तराध्ययन के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित है। प्रत्येक बुद्ध नमिराजर्षि और ब्राह्मण वेशधारी देवराज इन्द्र का संवाद।

एयमट्ठं निसामित्ता हेउ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।
हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया।।

अर्थात् इस अर्थ को सुनकर हेतु और कारण से प्रेरित देवेन्द्र ने नमिराजर्षि से फिर इस प्रकार कहा-''हे क्षत्रिय! (तुम पहले) चाँदी, सोना, मणि और मोती, काँसे के बर्तन, वस्त्र और वाहन तथा कोश (अर्थात् भण्डार) को बढ़ाकर फिर प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिए जाना।''

एयमट्ठं निसामित्ता हेउ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसी, देविंदो इणमब्बवी।।
सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि,
इच्छा हु आगाससमा अणंतिया।।

इस बात को सुनकर हेतु और कारण से प्रेरित हो नमिराजर्षि ने देवेन्द्र से ऐसा कहा-''सोने और चाँदी के कैलाश के समान असंख्य पर्वत हों फिर भी उनसे लोभी मनुष्य की तृप्ति नहीं होती, क्योंकि तृष्णा आकाश के समान अनन्त है।''

महापुरुषों का कथन है-संसार पुण्य से चलता है, धर्म पुरुषार्थ से। मोक्ष मार्ग में पुरुषार्थ ही सच्चा पुरुषार्थ है। संसार में पुण्यवानी के बिना कुछ मिलता नहीं है। पुण्यवानी है तो सब कुछ सहज मिल जाएगा।

बात विदेश की है, एक भाई घूम रहा था। घूमते-घूमते पत्थर की ठोकर लगी। सोचा, किसी और के न लगे, इसलिए पत्थर हटाकर दूसरी जगह रख दूँ। ज्योंही पत्थर हटाया, देखा- खजाना गड़ा हुआ है। पुण्यवानी प्रबल हो तो भागादौड़ी की जरूरत नहीं। अनायास बिना श्रम गड़ा धन मिल जाता है।

संसार असार है। जिसमें कोई सार नहीं उसी का नाम तो संसार है। अन्य शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि जहाँ हाथा-जोड़ी, माथा-फोड़ी और भागा-दौड़ी के सिवाय कुछ नहीं उसी का नाम संसार है।

इच्छाओं में सुख कहाँ? इच्छा निरोध ही सुख का द्वार है, इसलिए भगवान ने कहा है-'**इच्छा निरोधो तवो।**' तप से पुराने पाप निर्जरित होते हैं, आत्मा पवित्र बनती है, मोक्ष पथ प्रशस्त होता है, अनन्त अव्याबाध शाश्वत सुख प्राप्त हो जाता है। रोते-रोते जन्मना दुर्भाग्य की बात नहीं, लेकिन रोते-रोते मरण प्राप्त करना ही दुर्भाग्य है। आइए! आप, हम सब चिन्तन करें-

जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में,
कितने भव बीत गये, संकल्प विकल्पों में।
जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में।।

कामनाओं का दास बन कपिल कहाँ से कहाँ पहुँच गया। अर्ध रात्रि में ही माँगने चल पड़ा। चोर समझ पकड़ा गया। राजा द्वारा यह कहे जाने पर कि जो इच्छा हो माँगो। दो माशा की इच्छा से राज दरबार में पहुँचने वाले कपिल की अदम्य कामना कहाँ से कहाँ पहुँची, राज्य ही माँग लेने की इच्छा जाग गई। चिन्तन की धारा बदली तो इच्छाओं की वास्तविकता का भान हुआ।

संकल्प विकल्प समाप्ति के साथ याचक कपिल केवली बन गए, समस्त संसार के पूजनीय बन गए। यत्किञ्चित् को भी छोड़ देने वाला सर्वस्व शाश्वत सिद्धि का अधिकारी बन जाता है।

आइए! आप हम भी संकल्प-विकल्प से मुक्त बनें, इच्छाओं पर नियन्त्रण करें, समस्त इच्छाएँ, एक ही इच्छा एक ही अभिलाषा-मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा में समाहित हो जाए। शासनेश प्रभु से यही याचना, यही कामना- **'सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु।'**

गुरुदेव फरमाया करते थे कि गाँव के किसान का लड़का किसी सेठ के यहाँ पर रहते हुए नौकरी कर रहा है तो छह-सात महीने में चमक आ जाती है, मगर वर्षों से सामायिक कर रहे हैं तो विचारणीय बात है कि जीवन में कितना बदलाव आया? भोजन करें और भूख नहीं मिटे ऐसा कभी हो नहीं सकता, पानी पीएँ और प्यास न बुझे ऐसा कभी हो नहीं सकता। इसी तरह सामायिक का लक्ष्य बनाएँ और जीवन में परिवर्तन नहीं आवे ऐसा कैसे हो सकता है? आज परिवर्तन परिलक्षित नहीं होता है, इसका मुख्य कारण है लक्ष्य नहीं बनाया, बिना लक्ष्य ही सामायिक की।

आगामी पर्व तिथि

आश्विन शुक्ला 7, मंगलवार	12.10.2021	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ला 8, बुधवार	13.10.2021	अष्टमी
आश्विन शुक्ला 10, शुक्रवार	15.10.2021	आचार्यप्रवर पूज्य श्री भूधरजी म.सा. का स्मृति-दिवस
आश्विन शुक्ला 14, मंगलवार	19.10.2021	चतुर्दशी
आश्विनी पूर्णिमा, बुधवार	20.10.2021	पक्खी, आयम्बिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा 1, गुरुवार	21.10.2021	आचार्य पूज्य श्री हमीरमलजी म.सा. का 168वाँ स्मृति-दिवस
कार्तिक कृष्णा 8, शुक्रवार	29.10.2021	अष्टमी, आचार्य पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म.सा. का 220वाँ स्मृति-दिवस
कार्तिक कृष्णा 14, बुधवार	03.11.2021	चतुर्दशी
कार्तिकी अमावस, गुरुवार	04.11.2021	पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 1, शुक्रवार	05.11.2021	वीर सम्वत् 2548 प्रारम्भ, गौतम प्रतिपदा
कार्तिक शुक्ला 5, मंगलवार	09.11.2021	ज्ञान पञ्चमी
कार्तिक शुक्ला 6, बुधवार	10.11.2021	आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 59वाँ दीक्षा-दिवस
कार्तिक शुक्ला 8, गुरुवार	11.11.2021	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 13, बुधवार	17.11.2021	संघ समर्पण दिवस (संकल्प दिवस)
कार्तिक शुक्ला 14, गुरुवार	18.11.2021	चातुर्मास समापन (चातुर्मासिक पर्व)
कार्तिक शुक्ला 16, शुक्रवार	19.11.2021	वीर लोकाशाह जयन्ती

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 21
ISSN 2249-2011

प्रवचन

धर्म के सहकार से पुण्य में उत्कृष्टता

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में 'सुपुण्यशाली की होती धर्म में मति' विषय से सम्बद्ध अनेक प्रवचन फरमाए गए थे। उनमें से इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

लक्ष्य पर दृष्टि, परिपूर्ण पुरुषार्थ, अनन्त धैर्य के साथ लक्ष्य को उपलब्ध होने वाले अनन्त अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त तथा उसी धैर्य के साथ पुरुषार्थ करके लक्ष्य की ओर उन्मुख आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के चरणों में वन्दना करने के पश्चात्-

एक युवा खेती में नया नया आया था। गेहूँ पाने की अभिलाषा से गेहूँ के बीज बोए। समय पर पानी, समय पर खाद का पूरा ध्यान रखते हुए पूरी लगन, पूरी निष्ठा, पूरे उत्साह, पूरी उमङ्ग से खेती के कार्य में जुट गया था। बीज बोने के पश्चात् रोज-रोज आशा भरी दृष्टि से खेत को निहारता था। जमीन में कुछ-कुछ उगने लगा, अंकुर फूटने लगा। अंकुर देखकर मुस्काया, हर्षाया। अब तो गेहूँ आने ही वाला है, पर यह क्या यह तो घास उग रही है, ये तो तिनके हैं। दु:खी हो गया और सोचा इन्हें उखाड़ दूँ। ट्रेक्टर को पट्टा बाँध कर सपाट करने की तैयारी करने लगा। मैंने गेहूँ के लिए बीज बोया था या घास के लिए? अचानक एक अनुभवी किसान की दृष्टि पड़ी-अरे! यह क्या कर रहा है? उसने कहा गेहूँ कहाँ आया? घास आयी है। अनुभवी किसान ने पुचकारा, बेटा! पहले घास ही आती है, फिर 8-10 सप्ताह में बालियाँ लगना प्रारम्भ होगा, तब कहीं गेहूँ के दाने पड़ने शुरु होते हैं। भगवान ने फरमाया पहले संवर, निर्जरा नहीं आती, पहले पुण्य ही होता है। पहले गुणस्थान में संवर, निर्जरा नहीं कहलाती। राग-द्वेष की गाँठ खुलने के पहले सकाम निर्जरा शुरू भी नहीं हो पाती है। अनुभवी किसान ने अनुभव की बात कही-रक्षण कर, संरक्षण कर, घास को बढ़ने दे, जानवरों से बचाव कर, कीड़े मत लगने दे, खाद-पानी का ध्यान रख जरूर फसल लहलहाएगी, तेरी आशा को पुराएगी, भरपूर गेहूँ दिलाएगी। नया-नया किसान थोड़े समय प्रतीक्षारत रहा, गेहूँ फिर भी नहीं दिखा, अन्दर का मोटा-मोटा दाना ऊपर छिलके से ढ़का हुआ था, उसी से दाने की सुरक्षा जो थी। फिर अनुभवी किसान ने समझाया-गेहूँ इसके भीतर हैं, ऊपर का खोल उसकी सुरक्षा है। गेहूँ आया, घास (खाखला) भी उपयोग में आ गया। शायद इससे परिचित भी कह देते हैं-धर्म गेहूँ है, पुण्य खाखला है। खाखले (घास) के लिये खेती थोड़े ही की जाती है? पर भैया! घास बिना गेहूँ भी हाथ आने वाला नहीं है, पहले पुण्य ही होगा। सुपुण्य बिना धर्म में मति हो ही नहीं सकती। शुभयोग बिना संवर-निर्जरा हो ही नहीं सकते। उस उपकारी पुण्य को हेय मानकर यदि छोड़ दिया तो मिथ्यात्व, घोर मिथ्यात्व में ही गोते लगते रहेंगे। उत्तराध्ययनसूत्र 3/12 में स्पष्ट कहा गया-

सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ।
निव्वाणं परमं जाइ घयसित्तिव्व पावए।।

अर्थात् जो ऋजुभूत (सरल) होता है, उसकी शुद्धि होती है और जो शुद्ध होता है उसमें धर्म ठहरता है। जिसमें धर्म स्थिर है, वह घृत से सींची हुई अग्नि की तरह परम निर्वाण (विशुद्ध आत्मदीप्ति) को प्राप्त होता है।

जब प्राणी करने में सावधान और होने में प्रसन्न नहीं रहता, तब चित्त अशुद्ध हो जाता है। प्राकृतिक नियम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में करने की रुचि विद्यमान है। उस रुचि की पूर्ति तथा निवृत्ति की सामर्थ्य भी प्राप्त है। इस दृष्टि से प्राप्त के सदुपयोग में ही प्राणी का पुरुषार्थ निहित है। परन्तु जब प्राणी असावधानी से प्राप्त का सदुपयोग नहीं करता, तब न तो करने की रुचि

का नाश होता है और न ही उत्कृष्टता की ओर प्रगति ही होती है। करने की रुचि का नाश हुए बिना किसी को भी विश्राम नहीं मिलता, जिसके बिना आवश्यक विकास नहीं होता। इतना ही नहीं, करने की रुचि के कारण जो नहीं करना चाहिए वह करने लगता है अर्थात् कर्त्तव्य के अभाव में अकर्त्तव्य का जन्म होता है, जिससे चित्त उत्तरोत्तर अशुद्ध ही होता जाता है।

अब विचार यह करना है कि जो करने योग्य नहीं है अर्थात् अकर्त्तव्य है, उसमें प्राणी की प्रवृत्ति ही क्यों होती है? जो कर्त्ता अपने लक्ष्य को जाने बिना कर्म में प्रवृत्त होता है, उसकी प्रवृत्ति सावधानीपूर्वक नहीं होती, जिसके न होने से बेचारा कर्त्ता न तो कर्त्तव्य के अभिमान से रहित हो पाता है और न फल की आशा से। कर्त्तव्य के अभिमान के कारण प्राणी अपनी प्रवृत्ति में आप बँध जाता है अर्थात् उसके चित्त में किए हुए कर्मों का संस्कार अंकित हो जाता है, क्योंकि प्रत्येक प्रवृत्ति के दो रूप होते हैं, एक तो वह जो दृश्य रूप से प्रतीत होता है और दूसरा वह जो अदृश्य रूप से उसके अहम् भाव में अंकित हो जाता है, उसका फल प्राकृतिक विधान के अनुसार कालान्तर में किसी-न-किसी परिस्थिति के रूप में प्रकट होता है। जो प्राणी प्रवृत्ति के उस रूप पर दृष्टि नहीं रखते जो अदृश्य के रूप में अंकित होता है, वे भविष्य को उज्ज्वल बनाने में समर्थ नहीं होते। कारण कि वर्तमान के सुख-दु:ख पर ही उनकी दृष्टि रहती है, जो दूरदर्शिता नहीं है। दूरदर्शिता के बिना कोई भी अपने भविष्य को सुन्दर नहीं बना सकता। अत: प्रवृत्ति के बाह्य रूप पर ही दृष्टि नहीं रखना चाहिए, अपितु प्रवृत्ति के उस रूप पर भी पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए जो कर्त्ता में अदृश्य रूप से अंकित होता है। कर्त्ता, कर्म और फल देखने में भले ही अलग-अलग होते हों, पर वास्तव में प्रत्येक कर्म और फल कर्त्ता का ही रूपान्तर है। अत: जो कर्त्ता जैसा होता है, वैसा ही उसका कर्म होता है और जैसा कर्म होता है, वैसा उसका भविष्य होता है। सुन्दर कर्त्ता का कर्म और भविष्य सुन्दर होता है और असुन्दर कर्त्ता का कर्म और भविष्य असुन्दर होता है।

अब विचार यह करना है कि कर्त्ता असुन्दर क्यों होता है? जो कर्त्ता क्रियाजनित सुख में ही अपने को आबद्ध रखता है, वही असुन्दर हो जाता है, क्योंकि क्रियाजनित सुख प्राणी को जड़ता तथा पराधीनता में आबद्ध कर देता है। जड़ता और पराधीनता में आबद्ध होने पर कर्त्ता की प्रवृत्ति निरुद्देश्य होने लगती है। जिस प्रवृत्ति के मूल में वास्तविक उद्देश्य नहीं है, केवल प्रवृत्तिजनित सुख ही जिसका उद्देश्य है वह प्रवृत्ति कभी भी कर्त्तव्य रूप नहीं हो सकती।

जिसे बुराई का ज्ञान है, उसके द्वारा बुराई क्यों होती है? इसका एकमात्र कारण यही है कि वह लक्ष्य का निर्णय बिना किये ही प्रवृत्ति का आरम्भ कर देता है। अत: कर्त्ता वही सुन्दर हो सकता है, जिसकी प्रत्येक प्रवृत्ति उद्देश्य पूर्ण हो।

लक्ष्य स्पष्ट होने के लिए भी पुण्य ही सहायक है।

धन्य है पुण्य प्रभु जिससे शरण में आपके आए।
चित्त में चार मंगल की अखण्डित भावना भाए।।
भेद कर सब विभावों को, स्वभावों में रमेंगे हम।
सिद्ध अर्हन्त देवों के शुद्ध सिद्धान्त मन भाए।।

पुण्य से लक्ष्य पर दृष्टि, सातिशय पुण्य से लक्ष्य की ओर गति और उसका प्रथम चरण उत्तराध्ययनसूत्र 32/3 में बताया कि गुरु और साधर्मिक की सेवा एवं उत्तराध्ययनसूत्र 29/4 में उसका लाभ बताया-**गुरु-साहम्मिय सुस्सूसणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? गुरु साहम्मियसुस्सूसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायण-सीले नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदुग्गईओ निरुम्भइ। वण्णसंजलण-भत्तिबहुमाणयाए मणुस्स-देवसुग्गईओ निबन्धइ, सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ। पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ। अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ।**

अर्थात् गुरु और साधर्मिक की शुश्रूषा से भगवन्! जीव क्या प्राप्त करता है? गुरु और साधर्मिक की शुश्रूषा से जीव विनय प्रतिपत्ति को प्राप्त होता है। विनय-

प्रतिपन्न व्यक्ति आशातनारहित स्वभाव वाला होकर नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव सम्बन्धी दुर्गति का निरोध कर देता है। वर्ण, संज्वलन, भक्ति और बहुमान के कारण वह मनुष्य और देव सम्बन्धी सुगति (आयु) का बन्ध करता है। श्रेष्ठ गति और सिद्धि का मार्ग प्रशस्त (शुद्ध) करता है। विनयमूलक सभी (प्रशस्त) कार्यों को साधता (सिद्धि करता) है। बहुत से दूसरे जीवों को भी विनय बता देता है।

पर्युपासना त्रिविध बताई गई-औपपातिकसूत्र में वर्णन आया कि कूणिक राजा जब भगवान के दर्शन-वन्दन करने गया तब भगवान को वन्दना नमस्कार कर कायिक, वाचिक एवं मानसिक रूप से पर्युपासना की।

तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासइ, तं जहा-काइयाए, वाइयाए, माणसियाए। काइयाए-ताव संकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ। वाइयाए-जं जं भगवं वागरेइ एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छिमेयं भंते! इच्छियपडिच्छिमेयं भंते! से जहेयं तुब्भे वदह, अपडिकूलमाणे पज्जुवासइ। माण-सियाए-महयासंवेगं जणइत्ता तिव्वधम्माणु-रागरत्ते पज्जुवासइ।

अर्थात् तीन प्रकार से पर्युपासना की, वह इस प्रकार है-कायिक, वाचिक मानसिक। कायिक पर्युपासना के रूप में हाथों-पैरों को संकुचित किये हुए-सिकोड़े हुए, शुश्रूषा-सुनने की इच्छा करते हुए, नमन करते हुए भगवान की ओर मुँह करके, विनय से हाथ जोड़े हुए स्थित रहे। वाचिक पर्युपासना के रूप में जो-जो भगवान बोलते थे, उसके लिए ''यह ऐसा ही है भंते! यही तथ्य है भगवन्! यही सत्य है प्रभो! यही सन्देह रहित है स्वामी! यही इच्छित है भंते! यही प्रतीच्छित-स्वीकृत है प्रभो! यही इच्छित-प्रतीच्छित है भंते! जैसा आप कह रहे हैं।'' इस प्रकार अनुकूल वचन बोलते रहे। मानसिक पर्युपासना के रूप में अपने में अत्यन्त संवेग-मुमुक्षु भाव उत्पन्न करते हुए तीव्र धर्मानुराग से अनुरक्त रहे।

महान् संवेग पैदा होता है मानसिक पर्युपासना से। व्यवहार समकित के 67 बोल में समकित के 5 लक्षण बताए। उसमें दूसरा लक्षण है संवेग। संवेग का अर्थ है सम्यक् वेग। संवेग का अर्थ है मात्र मोक्ष अभिलाषा। संवेग का विशेष अर्थ है- मोक्ष के अलावा कोई इच्छा ही शेष न रहे। तब धर्म में मति उत्पन्न होती है। धर्म क्या है? अनुभवी ने बहुत ही सुन्दर कहा- ''मानव की मुक्ति की आभ्यन्तर आकांक्षा का परिणाम है धर्म।'' अनन्त के प्रति प्रचण्ड भूख की बाह्य अभिव्यक्ति है। प्रचण्ड भूख अर्थात् संवेग। मन के शुभयोग से ही समकित का लक्षण संवेग प्रकट होगा। घास उग चुकी है, सुरक्षा संरक्षा अनिवार्य है, ठीक वैसे ही अशुभ योग व्यवधान उपस्थित नहीं कर दे उसकी जागृति रखना है।

कर्मसिद्धान्त कहता है मिथ्यात्व मोह का ही बंध होता है। उसके प्रदेशों का बँटवारा होने पर सम्यक्त्व प्राप्ति के अवसर पर मिश्र मोह और समकित मोह को सत्ता प्राप्त होती है। 4 घाति कर्म पापकर्म हैं। तत्त्वार्थ सूत्र में पुरुष वेद, हास्य, रति और सम्यक्त्व मोह को जो पुण्य कह दिया वह इनके विपरीत प्रकृतियों की अपेक्षा स्थिति और अनुभाग कम होने मात्र से कह दिया गया। 4 घाति कर्मों की बन्ध योग्य 45 और उदय योग्य 47 प्रकृतियाँ हैं।

अघाति कर्म में बन्ध की अपेक्षा 42 प्रकृतियाँ पुण्य और 37 प्रकृतियाँ पाप की हैं। पुण्य और पाप का आधार अनुभाग बन्ध है। कषाय के बढ़ने से जिन प्रकृतियों का अनुभाग बढ़ता है उन्हें पाप कहते हैं। कषाय के घटने से जिन प्रकृतियों का अनुभाग बढ़ता है उन्हें पुण्य कहते हैं।

पाप प्रकृतियों का अनुभाग उत्कृष्ट होगा तो उस समय पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग जघन्य होगा और पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग उत्कृष्ट होगा तो पाप प्रकृतियों का अनुभाग जघन्य होगा। दोनों पूर्ण विरोधी हैं। कषाय का कम होना सदा हितकारी है। वीरस्तुति में भी कहा गया है-

कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा।
एयाणि वंता अरहा महेसी,
ण कुव्वति पावं ण कारवेति।।

अर्थात् महर्षि महावीर क्रोध, मान, माया तथा लोभ इन चारों अध्यात्म दोषों का वमन करके अर्हन्त बने हैं। वे न स्वयं पापाचरण करते हैं और न दूसरों से कराते हैं।

चार कषाय ही बन्ध के प्रधान कारण हैं, इनसे कर्म बन्ध होना कहा जाता है, वह मुख्यत: घाति कर्म की अपेक्षा है। अघाति कर्मों में भी पाप की प्रकृति कषाय से ही बँधती है, किन्तु पुण्य बन्ध का कारण कषाय आत्मा की विद्यमानता में आत्मस्वभाव धर्म है।

हम देखने का प्रयास करें। कषाय बदल-बदल कर उदय में आते हैं, पर बँधते साथ में हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ में से एक समय में कोई एक कषाय ही उदय में आयेगा, किन्तु चारों साथ में बँधते हैं। वासना चारों की एक साथ रह सकती है।

प्रथम कषाय क्रोध, क्षमा गुण के विपरीत है। भगवतीसूत्र के शतक 12 उद्देशक 1 में आया- **कोहवसट्टे णं भंते! जीवे किं बंधति? किं पकरेति? किं चिणाति? किं उवचिणाति? संखा! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीठकालट्ठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपारसग्गाओ बहुप्पारसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय णो बंधइ, एवं जहा पढमसए। अस्सातावेदणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाति, अणादीयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ।** अर्थात् क्रोध के वश-आर्त्त बना हुआ जीव कौनसे कर्म बाँधता है? क्या करता है? किसका चय करता है, किसका उपचय करता है? शंख! क्रोधवश आर्त्त बना हुआ जीव आयुष्यकर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों की शिथिल बन्धन से बँधी हुई (कर्म) प्रकृतियों को गाढ़ बन्धन वाली करता है अल्पकालीन स्थिति वाली कर्म-प्रकृतियों को दीर्घकालिक स्थिति वाली करता है; मन्द अनुभाग वाली प्रकृतियों को तीव्र अनुभाग वाली करता है, अल्प प्रदेश वाली प्रकृतियों को बहुत प्रदेश वाली करता है और आयुकर्म को कदाचित् बाँधता है एवं कदाचित् नहीं बाँधता। असातावेदनीय कर्म का बार-बार उपार्जन करता है तथा संसार में परिभ्रमण करता है।

असातावेदनीय कर्मबन्ध का प्रमुख कारण क्रोध है। जब जीव क्षमा धर्म को धारण करता है, क्रोध विजय की आराधना करता है उस समय सातावेदनीय का बन्ध होता है। उसे भला कौन रोक सकता है? (सकषाय अवस्था में कषाय की न्यूनतम अवस्था में ही 2 समय से अधिक स्थिति बन्ध हो सकता है, उस समय ही पुण्य प्रकृतियों का उत्कृष्ट अनुभाग बँधता है, जो संसार अवस्था के अन्तिम क्षण तक रहता है) साता वेदनीय का बन्ध कैसे होता है, इसे आगम (भगवती 8/9) में कर्मग्रन्थ भाग 1 में, तत्त्वार्थ 6/12,13 में, दिगम्बर साहित्य में जो वर्णन आया है उसे देखने का प्रयास करें।

आगम के अनुसार प्राण, भूत, जीव, सत्त्व पर अनुकम्पा करने से, इन्हें दु:ख नहीं देने से, शोक नहीं कराने से, नहीं रुलाने से, नहीं झुराने से, परितापना नहीं उपजाने से तथा नहीं मारने से साता वेदनीय कर्म का बन्ध होता है। कर्मग्रन्थ में गुरुभक्ति, क्षमा, करुणा आदि को कारण बताया है। तत्त्वार्थसूत्र 6.12 में प्राणियों और व्रतियों पर अनुकम्पा, दान, सराग संयम आदि को सातावेदनीय का हेतु बताया है। दिगम्बर साहित्य भी इसी तरह की कथन करने के साथ शौच आदि भावों, अर्हत् पूजा, तपस्वियों की वैयावृत्त्य को भी सातावेदनीय का कारण बताया है।

इससे विपरीत असाता वेदनीय कर्मबन्ध को समझना चाहिए।

दूसरा कषाय मान, विनय गुण के विपरीत है। मान कषाय का पोषण जीव कर रहा है, कौनसा कर्म मुख्य

रूप से बँधेगा? मान बढ़ने से, मान कषाय का पोषण करने से नीच गोत्र बँधेगा। मान घटने से, विनम्रता, आर्जव गुण युक्त से उच्चगोत्र बँधेगा।

तीसरा कषाय माया, सरलता गुण के विपरीत है। माया करने से जीव अशुभ नाम कर्म बाँधता है। कर्मप्रकृति के थोकड़े में जो नाम कर्म बन्ध के कारण बताए-मन की वक्रता, काया की वक्रता, वचन की वक्रता से जीव अशुभ नामकर्म का बन्ध करता है और सरलता, ऋजुता, आर्जव गुण से जीव शुभ नामकर्म का बन्ध करता है।

शुभ नामकर्म बन्ध मन की सरलता, वचन की सरलता, काया की सरलता एवं विसंवाद रहितता से होता है। कर्मग्रन्थ में इसे मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति में एकरूपता कहा है तथा ऋद्धि, रस एवं साता के गौरव से रहित को भी शुभ नामकर्म का हेतु कहा है। दिगम्बर परम्परा में मन, वचन एवं काया की सरलता तथा विसंवाद रहितता के साथ धार्मिक पुरुषों एवं स्थानों के दर्शन, आदर-सत्कार आदि को भी शुभ नामकर्म का कारण कहा है। इनके विपरीत अशुभ नामकर्म के बन्ध के कारण होते हैं।

तीर्थङ्कर नामकर्म के ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र में अर्हत् भक्ति, सिद्ध भक्ति आदि 20 कारण तथा तत्त्वार्थसूत्र में दर्शनविशुद्धि, विनय सम्पन्नता आदि 16 कारण बताए गए हैं, लगभग वे ही कारण दिगम्बर परम्परा में मान्य हैं। जाति, कुल, बल, रूप, तप, श्रुत, लाभ एवं ऐश्वर्य का मद करने से नीच गोत्र का तथा इनका मद नहीं करने से उच्चगोत्र का बन्ध होता है। ऐसा भगवतीसूत्र 8/9 में कहा है। कर्मग्रन्थ में निरभिमानी के साथ गुणदृष्टि रखने वाले, जिन भगवान के भक्त जीव को भी उच्चगोत्र का अर्जन करने वाला कहा है। तत्त्वार्थसूत्र एवं दिगम्बर साहित्य में अपनी निन्दा करने, पर की प्रशंसा करने, अपने विद्यमान गुणों को प्रकट न कर दूसरे के गुणों को प्रकाशित करने, गुणाधिक पुरुष का विनय करने से तथा स्वयं गुण सम्पन्न होते हुए भी मद न करने से उच्चगोत्र का बन्ध होता है।

उत्कृष्ट पुण्य प्रकृति तीर्थंकर नामकर्म पर विचार करें तो ज्ञात होता है कि यह प्रकृति सम्यक्त्व के साथ अर्थात् 4 थे से 8 वें गुणस्थान के छठे भाग तक बँध सकती है, उसके कारण भले ही 20 या 16 हों, संख्या भेद होने पर भी भाव परिणाम में भेद नहीं। उत्कृष्ट रसायन के साथ धार्मिक अनुष्ठान, व्रत नियमों की पालना, दर्शन विशुद्धि आदि के साथ मन, वचन, काया की अति शुभ प्रवृत्ति, अति शुभ योग होने पर इस प्रकृति का बन्ध होता है, जो मुक्तिगमन में सहायक होती है। सिद्ध के स्वरूप को, मोक्ष के मार्ग को प्रकट कर हमें धर्म का रास्ता इसी प्रकृति के सहकार से तो मिला है। सीमन्धर स्वामी द्वारा पूर्वभव में बाँधी प्रकृति से ही तो उन लोगों को मान्य उनकी परम्परा के अनुसार वह ग्रन्थराज उन्हें उपलब्ध हुआ। हमारी तो समझ से परे है, जिस पुण्य ने तीर्थंकर बनाया, जिस पुण्य ने ग्रन्थराज दिलवाया वह उस पुण्य को हेय कैसे बता सकता है? साता वेदनीय हो, शुभ नाम हो अथवा उच्चगोत्र, सभी के बन्ध में करने की बात नहीं, नहीं करने का उल्लेख है-

क्रोध नहीं किया-दु:ख नहीं दिया-साता वेदनीय का बन्ध। मान नहीं किया-मद नहीं किया-उच्चगोत्र का बन्ध। माया नहीं की-कपट नहीं किया-शुभ नाम का बन्ध होगा ही संसार अवस्था में, सयोग अवस्था तक पुण्यास्रव होगा ही। चौथा कषाय-लोभ, सन्तोष गुण के विपरीत है। महापरिग्रह से जीव नरकायु का बन्ध करता है और लोभ की कमी और सन्तोष गुण से युक्त जीव देवायु, मनुष्यायु का बन्ध करता है।

चारों कषायों से स्पष्ट है कि कषाय करने से अशुभ कर्म का बन्ध होगा, कषाय नहीं करने से शुभ कर्म का बन्ध होगा ही। क्षमा धर्म, विनम्रता धर्म, सरलता धर्म, सन्तोष धर्म की आराधना से शुभ प्रकृतियों का बन्ध होगा, उसे कोई रोक नहीं सकता। तो क्या फिर धर्म की आराधना नहीं करें? क्षमा, विनम्रता, सरलता,

सन्तोष जीव का स्वभाव है, आत्मा के गुण हैं। आत्म-गुणों में रमण करना उपादेय है, स्वभाव में स्थित रहना उपादेय है। क्रोध, मान, माया, लोभ विभाव है। अत: समवेत स्वर में जिनवाणी का उद्घोष है कि कषाय छूटने से आत्महित सधता है; सम्यक्त्व, संयम प्राप्त होता है और कषाय मुक्ति ही वास्तव में मुक्ति है। विभाव से स्वभाव की ओर आना ही साधना है, प्रतिसंलीनता तप की आराधना है।

श्वेताम्बरत्वे न दिगम्बरत्वे,
न तर्कवादे न च तत्त्ववादे।
न पक्षसेवाश्रयेण मुक्ति:,
कषायमुक्ति: किल मुक्तिरेव।।

न श्वेताम्बर और न ही दिगम्बर, न तर्कवाद और न ही तत्त्ववाद तथा न ही पक्षसेवा मुक्ति को प्रदान करती है। मुक्ति तो कषाय छूटने, राग-द्वेष समाप्त होने पर, मोह कर्म समूल नष्ट होने पर ही सम्भव है। मोहनीय कर्म एकान्त पाप कर्म है। आत्मस्वभाव में रमण करते हुए जीव उस पर विजय मिलाता चला जाता है। स्वभाव में रमण करने का जीव के भीतर जो उत्साह जगता है, उस दिशा में वीर्य गतिमान होता है उससे योग शुभ होते हैं। आत्मा के दोष कमजोर पड़ते हैं, पवित्रता बढ़ती है। आत्मा को जो पवित्र करे उसे पुण्य कहते हैं। योग से आने वाली कार्मण वर्गणा पाप प्रकृति के स्थान पर पुण्य प्रकृति में बँधती है। बन्ध का कारण आस्रव है, उस आस्रव को पुण्यास्रव कह देते हैं और उन प्रकृतियों के बन्ध को पुण्य बन्ध कह देते हैं।

अबाधाकाल बीतने पर प्रकृति का उदय होता है। उदय आत्मप्रदेशों में होता है। उनसे बाहर की पुद्गल वर्गणा अनुकूल, इष्ट, मनोज्ञरूप में जीव को उपलब्ध हो जाती है। शरीर और बाहरी सामग्री का संग्रह होता है। यह संग्रह पुण्य के फलस्वरूप कहा जाता है। इनका सदुपयोग पुन: पुण्य तत्त्व है। आत्मा की पवित्रता की पुन: प्राप्ति, पुण्यानुबन्धी पुण्य। पहले के सञ्चित पुण्य का सदुपयोग करते हुए जीव पुन: पुण्य का बन्ध करता है। पहले के सञ्चित पुण्य का अहं नहीं करता हुआ, जागृति रखता हुआ उससे अलगाव रखता है। मोहनीय के क्षय होने तक यह परम्परा चलती रहती है। मोह क्षय होने पर पुण्य का उत्कृष्ट शिखर प्राप्त हो जाता है। आयु की विद्यमानता तक वह कायम रहता है। मनुष्यायु पूर्ण होने के साथ उसका कार्य सम्पन्न हो जाता है। कृतकृत्य हो जाने से वह चारित्र आत्मा और वीर्य आत्मा की तरह यहीं पर पूर्ण हो जाता है, छूट जाता है। मुक्ति के लिए परम उपकारी है पुण्य। सुपुण्य के बिना धर्म नहीं हो सकता। धर्म के सहकार से पुण्य में उत्कृष्टता आती है। उत्कृष्ट पुण्य, उत्कृष्ट दर्शन आराधना एवं उत्कृष्ट चारित्र आराधना से केवलज्ञान प्रकट होता है और उन सबसे चौदहवाँ गुणस्थान प्राप्त करते हुए जीव मोक्ष को प्राप्त होता है।

पुण्य के फल से प्राप्त सामग्री का सदुपयोग जितने निष्काम भाव से होता है, उतना पुण्य वर्धापित होता है। एक उदाहरण पढ़ने को मिला- एक नगर में एक उपासना गृह का निर्माण होना था। जोर-शोर से चन्दा एकत्र किया जाने लगा। सबसे ज्यादा दान देने वाले का नाम दान पट्टिका में सबसे ऊपर मोटे अक्षरों में लिखा जाना था। शहर के प्रतिष्ठित लोग लाला भगवान राय के पास पहुँचे और उन्हें अधिक से अधिक चन्दा देने के लिए उकसाने लगे। शहर में ऐसा और कोई नहीं था, जो उनसे ज्यादा चंदा देने का सामर्थ्य रखता हो। अब तक की सबसे ज्यादा दान राशि की रसीद जमाकर्त्ताओं ने लालाजी के सामने रख दी और कहा 'एक सज्जन ने ग्यारह लाख रुपये दिए हैं। आप कम से कम बारह लाख रुपये अवश्य दें। जिससे दान पट्टिका में आपका नाम सबसे ऊपर मोटे अक्षरों में लिखा जा सके।' लालाजी ने कहा-''पैसे तो दे दूँगा, पर शर्त यही है कि दान पट्टिका में सबसे ऊपर मोटे अक्षरों में नाम उन्हीं सज्जन का लिखा जाए, जिन्होंने अब तक सबसे ज्यादा रकम दी है।' इसके बाद लालाजी ने बीस लाख रुपये देते हुए कहा, 'दो रसीदें काट दीजिए। एक दस लाख की मेरे

नाम से और दूसरी दस लाख की मेरी पत्नी के नाम से। निष्काम भाव से दिया गया दान मन को जो सात्त्विक सुख और आनन्द देता है उसका आकलन सम्भव नहीं।'

बिना किसी स्वार्थ के, निस्पृह होकर दिया गया दान पुण्य को वर्धापित करता है।

भक्ति, विनय, बहुमान सङ्ग,
प्रभु वीर रमता चलूँ
श्रुत का पठन, चिन्तन गहन,
उपसर्ग परिषह सहता चलूँ
वृत्तियाँ हों कम, मिट जाए गम,
मुक्ति का साधन और कहाँ।

बदल जाओ वक्त के साथ

डॉ. प्रेमसुख सुराणा

बदल जाओ वक्त के साथ या फिर वक्त बदलना सीख लो।
मजबूरियों को मत कोसो हर हाल में चलना सीख लो।।

एक बार का अवसर था कि हम एक शादी में गए। शादी का माहौल देखकर सचमुच हैरान-परेशान हो गए। खाने-पीने के एक से बढ़कर एक एवं बढ़िया से बढ़िया व्यञ्जन थे। लेकिन जो गृहपति था वह केवल मुख्य समारोह स्थान पर अपनी धर्मपत्नी के साथ खड़ा होकर मेहमानों-आगन्तुकों के हाथों से लिफाफे लेने का ही कार्य कर रहा था और धर्मपत्नी एवं परिजन उन लिफाफों को क्रमश: एक अन्य बैग में जमा रहे थे। इस माहौल में ऐसा भान हो रहा था कि शायद ही किसी आगन्तुक मेहमान की उन्होंने कुशल क्षेम पूछी हो।

आगन्तुक मेहमान भी ऐसे कि केवल लिफाफा देकर ही अपनी इतिश्री एवं धर्म समझते हुए इसके बदले में हर खाने-पीने के सामान पर मानो टूट कर पड़ रहे थे, चाट-पकौड़ी-टिकिया के विभिन्न व्यञ्जन पानी-पताशे की ओर ज़्यादा भीड़-भाड़ चल रही थी और चपाती तथा रोटियों के लिए तो बड़ी अफ़रा-तफ़री एवं लाइनें लगी हुई थीं। लगभग दो घण्टे तक गृहपति मेज़बान दम्पती मुख द्वार पर ही रहे। मैं स्वयं भी अपने साथियों के साथ वहाँ गया था। दु:ख की बात यह है कि खाने-पीने की हर टेबल पर बढ़िया से बढ़िया व्यञ्जन मिठाइयाँ आदि टेबल पर सजी हुई थीं, लेकिन हर टेबल पर पड़े डोंगे से व्यञ्जन प्लेटों में लोग खुद ही डाल रहे थे और पूरी प्लेट भरने के बाद कुछ खाया, कुछ जूठा छोड़ा और प्लेट टेबल के नीचे रख रहे थे। जितने व्यञ्जन थे उससे लगभग 60-70 प्रतिशत ज्यादा बेकार/झूठा छोड़ रहे थे। हम आपस में चर्चा कर रहे थे कि खाने-पीने के आइटमों को यूँ बेकार छोड़ देना और अपनी हैसियत से बढ़कर भव्यता की नुमाइश करते हुए शादी-विवाह समारोह करना कहाँ की परम्परा है। यह प्रदर्शन अनुचित है।

हमारे एक मित्र हैं बहुत बड़े व्यापारी हैं, लेकिन वह कभी भी समाज में अपने बच्चों की शादियों में भव्यता की नुमाइश नहीं करते। वे फ़िजूल खर्ची के खिलाफ हैं। अन्न की बर्बादी क्या उचित है?

मंथन यही है कि भारतीय संस्कृति के उत्सव के मौके पर एक-दूसरे का मान-सम्मान, आदर-सत्कार अवश्य करें, परन्तु इसमें किसी भी प्रकार का प्रदर्शन, भौंडा प्रदर्शन आदि नहीं होना चाहिए। एक-दूसरे की नकल करते समय हमें भी यह ध्यान रखना चाहिए कि एक व्यक्ति ने समारोह में भव्यता दिखाई है तो खुद भी वैसी भव्यता करने के लिए किसी भी प्रकार का ऋण अथवा उधार लेना जैसे दिखावटीपन से बचना चाहिए और आप यह समझते हैं कि ऐसा करने से हम महान् (ग्रेट) बन गए हैं, सरासर आपकी भूल है। अगर आप प्रदर्शन से बचने के लिए पहल कर रहे हैं तो वह स्वागत एवं सम्मान योग्य है।

-वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं पत्रकार, 39/15, प्रेम चौक, पुरानी मण्डी, अजमेर (राज.)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 28
ISSN 2249-2011

आत्म-चिन्तन

अपरिग्रह : एक चिन्तन

डॉ. पदमचन्द मुणोत

विश्व में प्रचलित धर्मों में जो शाश्वत धर्म है वह तीर्थङ्करों द्वारा प्ररूपित जैनधर्म है। तीर्थङ्कर केवलज्ञानी होते हैं जिन्हें भूत, भविष्य और वर्तमान में हुई, होगी और हो रही सभी जीव-अजीव सम्बन्धी घटनाओं का ज्ञान होता है। उनके द्वारा प्ररूपित जैनधर्म में स्पष्ट रूप से बतलाया गया है कि मानव भव मिलना अति दुर्लभ है जो अनन्तानन्त पुण्य के उदय से प्राप्त होता है और उसके लिए अनन्त सुख प्राप्ति के दो मार्ग हैं-1 अनगार धर्म अर्थात् सर्वविरति त्यागी धर्म (साधु धर्म) 2. आगार धर्म अर्थात् देशविरति धर्म (श्रावक धर्म)। साधु पाँच महाव्रतधारी होते हैं और श्रावक के 12 व्रत होते हैं-पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत।

अपरिग्रह साधु का पाँचवाँ महाव्रत है और श्रावक का पाँचवाँ अणुव्रत है। साधु के लिए अपरिग्रह का अर्थ है परिग्रह-रहितता जबकि श्रावक के लिए अपरिग्रह व्रत में परिग्रह का देश से त्याग होता है। अनगारधर्म में साधु घर बनाकर नहीं रहते जबकि अगारधर्म का अर्थ है-अपने घर में रहकर धर्म का पालन करना। साधु-साध्वियों का स्थायी घर नहीं होता, वे पद विहार करते हैं अतः वस्तुओं का संग्रह नहीं रख सकते। वे गाड़ी-घोड़े आदि का उपयोग नहीं करते। वस्तु का संग्रह करें तो संगृहीत वस्तुओं का भार स्वयं पर लाद कर विहार करना पड़ता है, जो सम्भव नहीं है, अतः वे पूर्ण अपरिग्रही कहलाते हैं।

उत्तराध्ययनसूत्र के छठे अध्ययन 'क्षुल्लक निर्ग्रन्थीय' में परिग्रह को ग्रन्थ कहा गया है।

'निर्ग्रन्थ' जैनदर्शन साहित्य का बहुत प्राचीन एवं प्रचलित शब्द है। आगमों में अनेक स्थानों पर भगवान महावीर को 'निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र' के नाम से सम्बोधित किया गया है। बौद्ध साहित्य में भी भगवान महावीर को 'निग्गण्ठ (निर्ग्रन्थ)' ही कहा गया है।

स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार के ग्रन्थों का परित्याग करने वाला साधु 'निर्ग्रन्थ' होता है। राग-द्वेष रूप कषाय वश जिन पदार्थों से आत्मा कर्मों से मलिन हो जाता है, जकड़ जाता है, बन्ध जाता है उसे ग्रन्थ कहते हैं। ग्रन्थ अर्थात् गाँठ। जैसे धागे द्वारा गाँठ बाँधकर वस्तुओं को बाँधा जाता है उसी प्रकार 'ग्रन्थ' आत्मा के साथ कर्मों का बन्ध कर, उसे संसार में टिकाए रखता है।

परिग्रह : बाह्य एवं आभ्यन्तर

परिग्रह (ग्रन्थ) दो प्रकार का है-1. बाह्य और 2. आभ्यन्तर। बाह्य परिग्रह-नौ प्रकार के हैं-1. खेत, 2. घर, 3. सोना, 4. चाँदी, 5. धन, 6. धान्य, 7. द्विपद (नौकर, स्त्री आदि), 8. चतुष्पद (गाय, भैंस, घोड़ा, हाथी, कुत्ता, बिल्ली, शेर, भेड़, बकरी आदि) और 9. कुविय धातु अर्थात् घर चलाने के लिए अन्य उपयोगी सामान।

आभ्यन्तर परिग्रह चौदह प्रकार का है-1. मिथ्यात्व, 2. क्रोध, 3. मान, 4. माया, 5. लोभ, 6. हास्य, 7. रति, 8. अरति, 9. भय, 10. शोक, 11. जुगुप्सा, 12. पुरुष वेद, 13. स्त्री वेद, 14. नपुंसक वेद। अथवा 1. मिथ्यात्व, 2. राग, 3. द्वेष, 4. क्रोध, 5. मान, 6. माया, 7. लोभ, 8. हास्य, 9. रति, 10. अरति, 11. भय, 12. शोक 13. जुगुप्सा और 14. काम (वेद)।

बाह्य परिग्रह लोभ कषाय के कारण होता है। किसी भी वस्तु पर ममत्व भाव (मूर्च्छा भाव) रखना ही परिग्रह है। उसकी प्राप्ति में, वृद्धि करने में और रक्षण में क्रोध, मान, माया, लोभ का सेवन होता ही है। ज्यों-ज्यों लाभ होता जाता है, त्यों-त्यों लोभ बढ़ता जाता है।

जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई।
दो मासकयं कज्जं, कोडीए वि ण णिट्ठियं।।

(उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 9, गाथा 17)

तृष्णा पर विजय

विश्वभर की सम्पत्ति एवं साम्राज्य भी लोभी व्यक्ति की तृष्णा को शान्त नहीं कर सकते। लोभ की खाड़ तो कभी भरती ही नहीं है। यह तृष्णा, आत्मा के लिए महान् भयानक होकर नरक, निगोद के भयंकर दु:खों में फँसा देती है। लोभ के कारण संसार में अनेक अनाचार हो रहे हैं। झूठ, चोरी, लूटखसोट, हिंसा, हत्या आदि अनेक पाप हो रहे हैं। धोखाधड़ी, लुच्चाई, ठगाई हो रही है। अनर्थों की लम्बी परम्परा में लोभ प्रमुख कारण है। लोभ के कारण नाते-रिश्ते टूट जाते हैं। लोभ भाव के अनुरूप पूर्ति न होने पर लोभ कर्त्ता के मन में वैरभाव उत्पन्न होता है और लोभ की अनुचित रीति से पूर्ति की जाती है, फलस्वरूप अन्य जनों के मन में वैरवृत्ति जमने लगती है। लोभवश ही लोग कीटनाशक दवाइयाँ बेचकर, छिड़ककर अनेक जीवों की घमासान हिंसा करते हैं। हिंसा पाप का मूल है।

संसार में जर, जोरू और जमीन सभी लोभ के कारण हिंसा, मन-मुटाव एवं वैर के कारण बनते हैं। इनके कारण सगे भाई भी एक दूसरे के प्राणों के ग्राहक बन जाते हैं। इतिहास इसका गवाह है। कुछ दिन पूर्व समाचार-पत्र में पढ़ा कि कोरोना से पिता के मर जाने पर श्मशान में अर्थी को अग्नि देने से पहले ही, पिता द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति के बँटवारे को लेकर भाई-भाई आपस में बुरी तरह लड़ पड़े, एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये। यह सब यही प्रमाणित करता है कि परिग्रह रूपी पाप का मन, वचन और काया से, करने, कराने और अनुमोदना का अधिक से अधिक अथवा सर्वथा त्याग करने पर ही इस अपरिग्रह व्रत (अणुव्रत अथवा महाव्रत) का सच्चा पालन हो सकता है।

शास्त्र में तो अपरिग्रह व्रत को धारण करने वाले महापुरुषों के चरित्र का ही वर्णन किया गया है। सभी तीर्थङ्कर, अनेक चक्रवर्ती, बलभद्र आदि अपरिग्रह व्रत लेकर ही अहिंसा व्रत का पालन करते हुए मोक्ष प्राप्त हुए हैं। उपासकदशाङ्गसूत्र में दस परिग्रही श्रावकों का वर्णन है जो भगवान महावीर से अपरिग्रह व्रतधारण कर बारहव्रती श्रावक बने। पूनिया श्रावक भी उदाहरण है जिसने अपना जीवन अपरिग्रही बनकर बिताया।

श्रावक के लिए तीन मनोरथ का नित्य चिन्तन आवश्यक कहा गया है, जिनमें पहला मनोरथ अपरिग्रह का ही है।

श्रावक के तीन मनोरथ

पहला–वह दिन धन्य होगा जिस दिन अपने पास रहे हुए थोड़े अथवा अधिक परिग्रह का त्याग करके परिग्रह के बोझ से हल्का बनूँगा।

दूसरा–वह दिन धन्य होगा जिस दिन मैं इस संसार से सर्वथा विरक्त होकर घर-परिवार का त्याग कर निर्ग्रन्थ प्रव्रज्या धारण करूँगा अर्थात् अगार धर्म छोड़कर सर्वोत्तम अनगार धर्म को धारण करूँगा।

तीसरा–वह दिन धन्य होगा जिस दिन जीवन के अन्तिम पड़ाव पर मैं संलेखना-संथारा धारण कर सकाम (पण्डित) मरण को प्राप्त करूँगा।

लोभ पर विजय

दशवैकालिकसूत्र के आठवें अध्ययन की 38-39वीं गाथा में कहा है-

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयणासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का नाश करता है, माया मित्रता का नाश करती है और लोभ सबका नाश कर देता है।

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायमज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे।।

उपशम भाव से क्रोध हरिए, मार्दव (मृदुता) भाव से मान जीतिए, आर्जव (सरलता) से माया जीती जा सकती है और सन्तोष भाव से लोभ जीता जा सकता है।

यह भी कहा जा सकता है कि क्रोध को जीतने से उपशम भाव (क्षमा भाव), मान को जीतने से मृदुता;

माया को जीतने से सरलता और लोभ का त्याग सन्तोष उत्पन्न करता है।

साधु जीवन में अपरिग्रह

जिजीविषा का भाव सभी जीवों में पाया जाता है अर्थात् सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। चाहे श्रावक (गृहस्थी) हो या साधु, सभी को जीवन जीने के लिए कम से कम कुछ वस्तुओं की आवश्यकता है, जिन्हें उनको अपने स्वामित्व में रखना ही पड़ता है। उनको अपने जीवन-निर्वाह के लिए रखना परिग्रह नहीं कहा जाता। जैसे साधु-सन्तों को अपना संयमी जीवन के निर्वाह हेतु कुछ उपकरण रखने ही पड़ते हैं, जैसे-

(1) काष्ठ, मिट्टी या तुम्बी के पात्र (केवल गिनती में तीन), (2) पात्र बाँधने के वस्त्र, (3) पात्र पोंछने का कपड़ा, (4) पात्र के नीचे बिछाने का कपड़ा, (5) पात्र ढ़कने का कपड़ा, (6) पात्र लपेटने का कपड़ा, (7) पात्रादि साफ करने का कपड़ा। ये सब पात्र से सम्बन्धित हैं, इनमें से जघन्य 3, मध्यम 5 और उत्कृष्ट 7 रख सकते हैं। इसके अतिरिक्त मात्रक (मूत्रादि परठने का पात्र) भी रखने की आज्ञा है। (8-10) ओढ़ने के लिए अधिक से अधिक तीन चद्दरें, (11) रजोहरण, (12) चोलपट्टक और (13) मुखवस्त्रिका। उपर्युक्त उपकरणों का राग-द्वेष रहित होकर सावधानीपूर्वक उपयोग करना कल्पता है। उनकी प्रतिलेखना और प्रमार्जना नियमित करनी जरूरी है।

दशवैकालिकसूत्र (6.20) के अनुसार-साधु दो कारणों से वस्त्र रखते हैं। (1) लज्जा निवारण के लिए (2) संयम के लिए। साधु-साध्वी इन वस्त्रों पर ममत्व नहीं रखें।

साधु अणुमात्र का भी सञ्चय नहीं करे। (दशवैकालिकसूत्र 8/24, उत्तराध्ययनसूत्र 9.19) दवा, नमक, घी, गुड़, तेल आदि पदार्थ साधु-साध्वी संग्रह कर कभी न रखें। संग्रह, लोभ के कारण होता है। ऐसा करने वाला तो गृहस्थी ही कहलायेगा। सूयगडंसूत्र (1.1, 1-2) में स्पष्ट किया गया है कि किञ्चित् भी सचित्त या अचित्त का परिग्रह रखने वाले की मुक्ति नहीं होती। साधु तो बाह्य परिग्रह का ही त्यागी नहीं होता वरन् आन्तरिक परिग्रह का भी त्यागी होता है। वह सत्कार, तिरस्कार, मान-अपमान, पूजा-प्रतिष्ठा में सदैव समभाव रखता है। न राग करता है, न द्वेष करता है। अपने शरीर पर भी ममत्व भाव नहीं रखता, बाईस परीषह समभाव से सहन करता है।

श्रावक-जीवन में अपरिग्रह

साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका ही वास्तव में चार तीर्थ हैं। इन तीर्थ को अपनाने से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

श्रावक भी अपनी आवश्यकताएँ कम से कम रखकर जीवन निर्वाह करे। जो अधिक प्राप्त हो गया है उसे जनहित में लगा दे। दान भी मोक्ष का मार्ग बताया गया है।

दानी के सदैव संसार में गुणगान होते हैं। उसके कर्म हल्के होते हैं। शास्त्रों में सुपात्रदान देने वाले मनुष्यों को सम्यक्त्व की प्राप्ति का उल्लेख अनेक स्थानों पर मिलता है जैसे ऋषभ भगवान के पूर्वभव धन्नासार्थवाह के भव में सुपात्रदान देने से समकित प्राप्त हुई। यह भी निश्चय रूप से बताया गया है कि जिस जीव को एक बार भी समकित प्राप्त हो जाती है उस जीव को अर्द्ध पुद्गल परावर्तनकाल में मुक्ति अवश्य मिल जाती है।

श्रावक परिग्रह कम करने के लिए, ममत्व भाव कम करने के लिए दान देकर पुण्य अर्जन करे। पुण्य नौ प्रकार से बाँधा जाता है-1. अन्न पुण्य, 2. पान पुण्य, 3. लयन पुण्य, 4. शयन पुण्य, 5. वस्त्र पुण्य, 6. मन पुण्य, 7. वचन पुण्य, 8. काय पुण्य और 9. नमस्कार पुण्य।

सभी जीव एक समान भाग्य लेकर नहीं जन्मते। उनका वर्तमान का भाग्य उनके पूर्वकृत पुण्य के उदय से मिलता है। कोई राजा के यहाँ जन्मता है तो कोई रंक के यहाँ। अभावग्रस्त मानव में फिर ईर्ष्या जागती है और वह

अनैतिक कार्य करने को अग्रसर होता है। यदि समृद्ध व्यक्ति उनकी स्वत: ही मदद करता रहे तो संसार में भाईचारा बढ़ेगा और अन्य ऐसे व्यक्तियों को भी प्रेरणा मिलेगी। यह तो अटल सत्य है कि **परस्परोपग्रहो जीवानाम्** के नियमानुसार संसार के सभी जीव जीने में परस्पर सहायक होते हैं। मानवता तो यही सिखाती है कि जो कुछ आपके पास है उसका परोपकार में उपयोग कीजिए। दूसरों के सुख पर ही हमारा सुख निर्भर है। जरूरतमन्दों को ऊपर वर्णित नव प्रकार का दान देकर अपना परिग्रह कम कर पुण्य बन्ध का योग प्राप्त करना चाहिए।

यदि समाज का, देश का हर व्यक्ति ऐसा करने लगे तो समाज, देश में खुशहाली आ जाएगी। परस्पर ईर्ष्या, जलन, लूट-खसोट, मारपीट, हत्या आदि की भावना ही नहीं रहेगी। दो देश भी परस्पर नहीं लड़ेंगे। सभी घरों में परस्पर एक-दूसरे का दु:ख समझकर आपस में मददगार होंगे। सब संसार अहिंसामय हो जाएगा। सभी सुखी हो जायेंगे। भगवान महावीर ने सबको यही उपदेश दिया है कि ''जीओ और जीने दो।'' यह भी अपरिग्रह की भावना का एक प्रकार से उपदेश है। स्पष्ट है कि संसार में अमन चैन के लिए हर मानव को अपरिग्रह की भावना रखनी चाहिए।

-7-न-12, जवाहर नगर, जयपुर-302004 (राज.)

लघु कविताएँ

डॉ. रमेश 'मयंक'

(1) साधक

आत्मा के भीतर विद्यमान
बन्धन-मुक्ति का ज्ञान
जो भी साधक सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र से
युक्त हो जाता, मुक्ति की ओर बढ़ पाता
परन्तु राग-द्वेष मोह कषाय के
भावों में लिप्त, कर्म बन्धनों से
मुक्त नहीं हो पाता

(2) जीव

जीव में जीवन-संस्कार के प्रति होता
सही दृष्टिकोण का विकास
वह भोग-वासनाओं से हटकर
योग, संवर, निर्जरा में करने लगता विश्वास,
तो लक्ष्य मुक्ति को बनाता है
सिद्धात्मा बन जाता है।

(3) विकार

जीव के विकार
क्रोध-मान-माया-मोह माने जाते
कर्म-बन्धनों को बढ़ाते,
मन-वचन-काया को दूषित बनाते,
पाप प्रवृत्तियाँ बढ़ाते,
बन्धनों का क्षय होने पर ही
मुक्ति की तरफ बढ़ पाते।

(4) सद्गुणों का प्रकाश

धर्म मंगलमय बन जाए
यदि धर्म-नीति के प्रति
आस्था उत्पन्न हो जाए।
जब भी धर्म की प्रेरणा से
जन हितार्थ निर्मल, उदात्त,
पवित्र भावनाएँ जागेंगी,
आत्मा-समाज, देश-विश्व से
विषमताएँ-विपदाएँ भागेंगी।
संयम से टल जाती भारी से भारी महामारी
शान्ति मिलती सर्वत्र होता उत्थान
ज्ञान-सिद्धि को पाता
विश्व अनर्थ से बच जाता धर्म सूर्य बनकर
सद्गुणों का प्रकाश फैलाता।

-बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राजस्थान)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 32
ISSN 2249-2011

English-section

Socio-Cultural Dimensions of Jīva Dayā (Ahiṃsā)

Dr. Priyadarshana Jain

Introduction

Man is at the center of the biosphere and coexists with micro and macro creatures be it family, friends, animals, birds, plants, insects, air, water, soil, etc. His history is the history of various traditions, cultures, customs, religion and philosophies observed by him to promote the scientific temperament and the larger understanding of the complex multi-dimensional reality that is with in him and in the world at large. Man as a steward is at the top of the food pyramid where he ought to nurture and use the primary producers ie, the plants and coexist with the primary consumers ie, the herbivores and the secondary consumers ie, the carnivores. In this pyramid, if the lower three layers are destroyed, the whole web of biosphere shall collapse and man's survival too would be at stake. The lower layers can survive without man but man cannot survive without them. Every creature has a role to play in the biosphere. So, his duty should be of conservation and not extravagant consumerism. The results of excessive exploitation of resources has resulted in species extinction, environmental degradation, climate change, global warming and all these are primarily due to erosion of values that make a man truly humane. It is only on the foundation of humanity that the pillar of spirituality can be erected and the roof of divinity be built according to Jainism, which is one of the oldest living religions followed by around five million people worldwide. *Live and let live, parasparopagrahojīvānām,*[1] *ahiṃsā, jīva dayā, karuṇa, satveshumaitri* are some of the popular phrases for a non-violent, compassionate, spiritual, awakened and enlightened way of life called JAIN WAY OF LIFE.

Jain tradition and lifestyle

Jainism is one of the oldest living religions, time and again preached by great teachers and enlightened souls called Arihantas, Tīrthaṅkaras and Jinas. They practiced and perfected non-violence, self-control and austerity and then preached the way to eternal peace, bliss, happiness which is within. They gave the complete and partial vows of non-violence, truth, non-stealing, celibacy and non-possession for the protection of the self, society, the world and the environment at large. Jain lifestyle is an eco-friendly lifestyle. Jain philosophy gives a rational view of life. Equality of all souls, respect for others' view point, and above all *Jīva-dayā* for all makes them follow strict vegetarianism and a life free of addictions and debaucheries/*kuvyasanas* like meat eating, taking to intoxicating drinks and drugs, gambling, hunting, etc.

Concept of Jīva dayā

Jīva dayā means compassion for all Jīvas ie, life forms. It extends not just to humans but to all creatures, be it micro or macro. The Jain scriptures speak of *atma-tulavivek*, ie., equality of all souls.[2] All living beings desire to live and none wants to die,[3] hence a *nirgrantha* (fetter less pious Jain ascetics) considers *prana-vadha*, killing/injury to any life form as the greatest sin and gives it up, come what may. They are tolerant and respect others' viewpoints. The Jains are followers of Jinas ie, conquerors who have revealed that there is life

in earth, water, fire, air and plants besides the two-sensed to five-sensed creatures. The entire universe is filled with micro-organisms. There is not a single space point where there is no life. One can count the number of sand grains on the sea shore but none can reveal the births taken by a Jīva in the cycle of transmigration. Every *jīva* has experienced all kinds of relations with every other *jīva* in the cycle of transmigration and all this is due to absence of *jīva-dayā* ie., compassion for all forms of life including our own life.

Whenever we talk about j*īva-dayā*, we assume it is compassion for other Jīvas, but what about our own *jīva*? Jainism says that :

Jīva vaho appavaho
Jīva dayā appano dayā[4]

The above verse reveals that violence towards other creatures is violence towards one's own self and compassion towards other jīvas is actually compassion towards one's own self. For these reasons those who desire one's welfare ought to avoid all kinds of violence towards all sentient beings. The Acārāṅga Sūtra says *whom who desire to kill, harm, abuse, injure etc is verily yourself.*[5] Just as suffering is not desired by you, it is so with all other creatures. Knowing thus the equality of all *jīvas* practice *dayā* ie, compassion. The essence of all learning is not to harm or kill any living being.[6] One needs to understand just two principles

- Non-violence of all living beings
- Equality of all living beings[7]

It is not easy to understand these two principles, one has to look deeper. But one who understands and firmly endeavors to refrain from all kinds of violence is wise and worthy of spiritual evolution.

Nature of the Self and Appaṇo dayā

Now, the next question is how to practice compassion towards oneself ie,*appano dayā*. For this, one needs to understand the nature of the self which is characterized by *upayoga* ie., knowledge and vision (*jnāna-darshana*). The self, also known as *jīva, atman, brahman, chetana* is pure consciousness. It existed in the past, exists in the present and shall ever exist. It is beyond time and space. It is immanent as well as transcendental. One ought to go beyond mind, body and speech to absorb in the pure self which is consciousness, existence, bliss. In other words, it is life, light and love and infinitely powerful and divine. The jīva is unaware of its true nature since time immemorial and so is bondaged and conditioned by the karmas. The jīva is a victim of its own ignorance and good and evil deeds and is caught in the quagmire of rebirth and suffering. So, what is the way out? Compassion towards oneself should lead to realization and liberation of oneself. And this can be possible :

I. through realization of the infinite potential through the teachings of the enlightened beings (*Tīrthaṅkaras* and other omniscients)
ii. when the jīva has right understanding of reality
iii. there is belief in the self through in-depth study of the seven/nine tattvas
iv. one applies logic/*anekanta* and common sense
v. experiences the self through deep meditation
vi. understands the *bheda* between body and soul, *jñāna* and *raga*, *jñāna* and *jneya*

There upon absorption in the self enables the jīva to overcome all conditioning,

transmigration and suffering.This is compassion/*dayā* towards oneself which begins with overcoming perversion, vowlessness, invigilance, passions and finally, the three channels of activity and finally accomplishing the liberated state.

Thus, real *jīva-dayā* begins with realization of the self, thereupon he sees all *jīvas* as his own self and refrains from all kinds of violence and this is termed as *para-dayā* ie, *dayā* for all beings. Thus, this bottom-up approach begets peace for oneself and for the society and the environment too stands to benefit from the application of this spiritual outlook. This indeed is the socio-cultural implication of *jīva-dayā* which springs from spiritual insight and recognition of inherent divinity in all beings. In the absence of spiritual quotient, neither humanity can be sustained nor divinity can be attained and the *jīva* remains trapped in the web of transmigration.

Sva-dayā and Para-dayā

This has been demonstrated by the *Tīrthaṅkar aarhats* and other *arhats* who walked on the path of liberation through the observance of right faith, right knowledge and right conduct which is inclusive of five great vows of *ahiṃsā* (non-violence), *satya* (truthfulness), *asteya* (non-stealing), *brahmacharya* (chastity) *aparigraha* (non-attachment/non-possessiveness). The *acharyas*, *upadhyayas* and *sadhus* ie., ascetics devoted to the contemplation of the self are the ones who observe *sva-dayā* as well as *para-dayā*. They endure all hardships voluntarily in order to overcome all material conditioning and are equanimous towards all creatures. This observance of *jīva-dayā* by them inspires the Jains to observe partial *jīva-dayā* and maintain a balance between their spiritual and material goals.

Jīva-dayā and the Nine Tattvas/Reals

There is not a single space point in the universe which is not habited by micro-organisms or any other life form. So, the way of life should be such that one minimizes the activities of mind, body and speech and steadily absorbs in the pure soul in order to transcend all material conditioning. This is what the pious Jain ascetics endeavor for all their life to realize the self which is god-like, pure, eternal, self-sovereign, potentially divine, independent of all that is non-self, including *karma*, *kashaya* (passion) and *kaya* (body). The *arhats* are those who have manifested their pure potential, the *gurus* are those who are manifesting their inherent potential and *dharma* is endeavoring to manifest the same. When the *jīva tattva* is realized, it gets disassociated with all *ajīva* ie, foreign matter. Thus, all *asrava* ie, influx of karma is arrested. This indeed is *sva-dayā*. The resultant of *sva-dayā* is stoppage and annihilation of karma called *samvara* and *nirjara* respectively and this eventually leads to *moksha* ie, liberation. This indeed is the spiritual implication of *jīva-dayā*. Jainism asserts that every soul can rise to this level. And so, the Jains have preached about the art of self-realization exhibiting *para-dayā* for all beings, irrespective of caste, creed, culture, customs, gender, nationality, etc. This indeed is the universal implication of *para-dayā*. This is the secular fabric of religion which is for *sarvajanahitāya, sarvajana-sukhāya* ie, for the welfare of all concerned.

Glory of Ahiṃsā/Jīva-dayā

From the above statement, it is clear that jīva-dayā is equivalent of *ahiṃsā* (non-violence) and *adhyātma* (spirituality). The *PrashnavyakaranaSutra* gives 60 names of *Bhagwati Ahiṃsā* which can be equated with *jīva-dayā*. They are enumerated with their English translation[8]:

1. *Dvipa-trāṇa-sharan-gati-pratishta : Jīva-dayā is the supreme refuge, shelter, worth pursuing and abode of bliss*
2. *Nirvana : Cause of liberation*
3. *Nivrtti : Mental peace*
4. *Samadhi : Equanimity*
5. *Shakti : Spiritual vigour*
6. *Kīrti : Fame*
7. *Kānti : Splendid aura*
8. *Rati : Love for all creatures*
9. *Virati : Abstinence from all sin*
10. *Srutānga : Wisdom*
11. *Trpti : Contentment*
12. *Dayā : Compassion*
13. *Vimukti : Freedom from bondage*
14. *Kshanti : Forgiveness*
15. *Samyaktva-aradhanā : Enlightened adoration*
16. *Mahati : Greatest vow*
17. *Bodhi : Right understanding*
18. *Buddhi : Right thinking*
19. *Drti : Steadfastness*
20. *Samridhi : Prosperity*
21. *Riddhi : Wealth*
22. *Vrddhi : Progress*
23. *Sthiti : Everlasting peace*
24. *Pushti : Nurturer of merit/punya*
25. *Nanda : Bestower of bliss for sva and para*
26. *Bhadra : Bestower of welfare*
27. *Vishuddhi : Bestower of purity*
28. *Labdhi : Bestower of omniscience*
29. *Vishishta Drishti : Bestower of supreme vision*
30. *Kalyaṇa : Bestower of holistic health*
31. *Mangal : Auspicious*
32. *Pramod : Happiness/delight*
33. *Vibhuti : Cause of spiritual prosperity*
34. *Rakshā : Protector*
35. *Siddhavasa : Bestower of liberation*
36. *Anasavo : Enables one to arrest influx of karma*
37. *Kevali-sthan : Abode of omniscients*
38. *Shiva : Blissful, destroyer of all evil*
39. *Samiti : Right exertion*
40. *Sheel : Right conduct*
41. *Sanyam : Self-restraint*
42. *Sheel-parigraha : Abode of chastity/ virtue*
43. *Saṃvar : Stoppage of karma*
44. *Gupti : Transcending mind, body & speech*
45. *Vyavasaya : Endeavour*
46. *Uccharya : Bestower of noble thoughts*
47. *Yajña : Adoration*
48. *Āyatan : Abode of all virtues*
49. *Apramad : Supreme awareness*
50. *Āshwas : Assurance*
51. *Vishwas : Trust*
52. *Abhay : Fearless*
53. *Sarvasyaamaghat : Declaration of non-violence*
54. *Choksha : Pure*
55. *Pavitra : Supremely pure*
56. *Shuchi : Supreme purity of dispositions/ bhaav*
57. *Pujā : Worthy of worship*
58. *Vimal : Blemishless*
59. *Prabhāsa : Divine light*
60. *Nirmalatara : Bestower of supreme purity*

From the above description, we infer the importance and the universality of *ahiṃsā/Jīva-dayā*. It is worth noting that *ahiṃsā* is termed as *Bhagwati ahiṃsā* (godlike). So, where there is *ahiṃsā* or *Jīva-dayā*, God is said to be there. The *Dashvaikalika Sutra* says that, *"that dharma is auspicious and supreme where there is ahiṃsā* (non-violence), *sanyam* (self-restraint) *and tapa* (austerity). *Even the celestial beings bow*

down to him whose mind is engrossed in such a dharma'[9]. Where all the three are present, it is *sva-dayā* and where only the first of the three is present, it is *para-dayā*.

It is said that such compassion or non-violence is the shelter house for those who are fearful, just as the sky is for birds so also *ahiṃsā* enables the beings to soar high in the sky of spirituality; just as water is for thirsty so also *ahiṃsā* is for the suffering creatures; it is like the food for the hungry; it is like the ship in the vast ocean where the *Jīvas* are drowning in all kinds of violence and suffering; just as the medicine is strength for the diseased so also *ahiṃsā* is for all those who are suffering in *samsāra* and it is the companion in the treacherous forest of the material world[10]. It is the bestower of *yoga* and *kshema* ie, spiritual and material well-being.[11]

Whatever health, wealth and happiness one enjoys, it is the fruit of *jīva-dayā* observed in the past and whatever deprivation, disease, suffering one goes through, it is the fruit of the *jīva-ahiṃsā* taken to in the past. Just as all wars end in peace and in signing peace treaties, so also solution to all social evils can be found in *jīva-dayā (karuṇā, maitrī, ahiṃsā).*

It is said in the *Bhakta parijñā* that nothing is higher than Mount Meru and there is nothing vaster than the sky, so also there is no *dharma* equal to *ahiṃsā*.[12] When one is sensitive to the sufferings of others ie, has empathy, only then one can practice *Jīva-dayā/ahiṃsā. Jīva-dayā* is right conduct only when it is accompanied with the determination of reality as it is, otherwise it is virtuous conduct which will beget meritorious karma and this is good but not good enough to realize final beatitude. Hence, it is said one must seek knowledge and then take to *dayā* (*paḍhamam-naaṇam, tao dayā).*[13] How can an ignorant person know what is virtue and what is evil? The essence of all learning is abstinence from all violence, in other words *jīva-dayā* is application of all learning. Wise is not one who has mastered many subjects, rather wise is one who does not harm anyone by thought, word and deed. Where such a spirit of *jīva-dayā* resonates only then there can be peace, justice, social harmony and universal brotherhood and all diverse cultures can be sustained.

Conclusion

The Jains are proud that no war has taken place in the name of this religion although many Jains have fought for a just cause. The crime rate is minimal in this community and overall, it is a peace loving and peace promoting community, running many schools, colleges, hospitals, animal welfare shelters, bird hospitals, etc. The philanthropic zeal of this community comes from the Jain monks and nuns who tread on the path of *jīva-dayā* day and night by thought, word and deed.

Jīva-dayā is not merely an action, rather it is right attitude, approach, perspective towards all that has life and is living. Abhayadaan ie, the gift of fearlessness is the greatest gift that any *jīva* can give to any other *jīva*.There are 8.4 million *jīva yonis*/life forms/species and these are grouped in

- Prithvikaya Earth-bodied
- Apkaya Water-bodied
- Teukaya Fire-bodied
- Vayukaya Air-bodied
- Vanaspati Plant-bodied
- Traskaya Mobile beings[14]

Proper understanding of animate and inanimate is a pre-requisite for realizing inner harmony. One need to have aholistic approach and so we can say that *jīva-dayā*/non-violence is primarily for self (conquering oneself) as well for the others. It is the science of detachment.

Plato spoke of political communism,

Karl Marx spoke of economic communism and Jainism speaks of spiritual communism which can be achieved through the application of *jīva-dayā*. Thus we can say

- Internal *jīva-dayā* = Equanimity/ Spirituality/Enlightenment
- External *jīva-dayā* = Compassion in Action

And for this we need to move from anthropocentric to bio-centric to deep ecology, from theoretical to practical or applied and above all harmless biological existence for living our universal responsibility for sustainable development. It is true that the more we sweat in peace, the less we bleed in war. We are qualitatively one, quantitatively many. What we need today is one world federation, as all life is interconnected. Peace, development and environmental protection are interdependent and collective responsibility of all. Lets all work for peace and save the planet earth. Peace is experienced by people who are awakened to the truth and who practice the truth. If we want peace we need to prepare for the inner war of fighting our attachment and aversion which is the root cause of all evil.If we want peace we need to prepare for peace through the application of *Jīva-dayā*.

Some Images

As you sow, so you reap

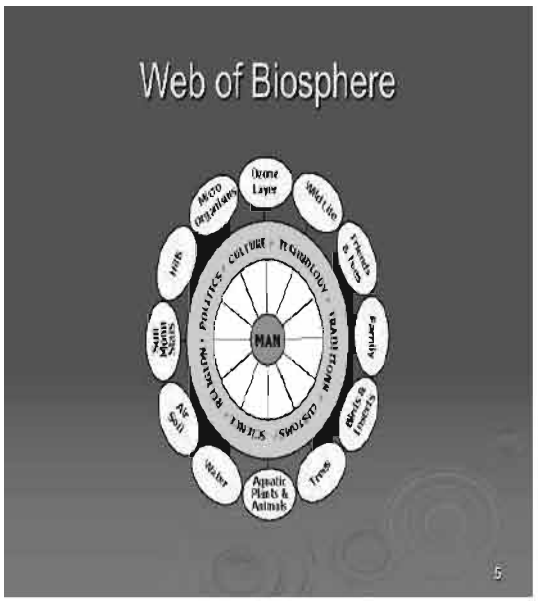

1. Tattvartha Sutra Ch.5.21, Trans Prakash and PoojaChabda, Pub by Jain SamskritiSamrakshakSangh, Sholapur.
2. Acaranga Sutra Ch 1.7, Trans Madhukar Muni, Pub By AgamPrakashanSamiti, Beawar.
3. Ibid Ch 1.2.3
4. SamanSuttam, 151, Compiled By JinendraVarni, Pub By BhagwanMahavir Memorial Samiti, New Delhi.
5. Ibid Ch 1.5.5
6. Sutrakrtanga Sutra Ch 1.11.10, Trans Madhukar Muni, Pub By AgamPrakashanSamiti, Beawar.
7. Ibid Ch 1.11.10
8. Prashnavyakarana Sutra 2.1.107, Trans Madhukar Muni, Pub By AgamPrakashanSamiti, Beawar.
9. Dashavaikalik Sutra Ch 1.1, Trans Madhukar Muni, Pub By AgamPrakashanSamiti, Beawar.
10. Prashnavyakarana Sutra 2.1.108, Trans Madhukar Muni, Pub By AgamPrakashanSamiti, Beawar.
11. Ibid 2.1.103
12. SamanSuttam, 158, Compiled By JinendraVarni, Pub By BhagwanMahavir Memorial Samiti, New Delhi.
13. Dashavaikalik Sutra Ch 4, Trans Madhukar Muni, Pub By AgamPrakashanSamiti, Beawar.
14. Ibid Ch 4

-Dept. of Jainology, University of Madras, Chepauk, Chennai-600005 (Tamilnadu)

priyadarsnajain@yahoo.in

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 38
ISSN 2249-2011

आत्म-चिन्तन

रिश्तों के जादुई रहस्य

श्री निपुण डागा (सी.ए.)

अचंतकालस्स समूलगस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो। तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगंतहियं हियत्थं।। (उत्तराध्ययनसूत्र 32.1)

अनादि अनन्त काल से मेरे और आपके जीव के साथ दु:ख की परम्परा चल रही है। भगवान महावीर इस गाथा से स्पष्ट रूप से बतला रहे हैं कि यह दु:ख आज या इस जन्म का नहीं, अपितु अनन्त काल का है। आगे प्रश्न यह उठता है कि आखिर यह दु:ख है क्या? इसका समाधान भगवान इसी अध्ययन की 7वीं गाथा में कहते हैं।

रागो य दोसोऽवि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति। कम्मं च जाइमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाइमरणं वयंति।। (उत्तराध्ययनसूत्र 32.7)

अर्थात् दु:ख जन्म-मरण के कारण होता है जिसका बीज 'मोह' या Attachment है। यह बात समझ में आ रही है कि अगर अनन्त सुख (मोक्ष) को प्राप्त करना है तो यह मोह, ममत्व की जड़ को समाप्त करना पड़ेगा। पर भगवान बड़े ही तार्किक और प्रायोगिक महामानव थे। उन्हें मालूम था कि मनुष्य को संसार में रहते हुए अनेक प्राणियों के साथ में मिलजुलकर अपना जीवन चलाना पड़ेगा। क़दम-क़दम पर रिश्ते बनेंगे जैसे कि माता-पुत्र, पति-पत्नी, गुरु-शिष्य, भाई-बहन आदि। यदि मनुष्य इन सम्बन्धों में ही उचित ढँग से व्यवहार नहीं कर पाया, राग-द्वेष करता रहा या अतिमोह में मदहोश हो गया तो फिर वह अपनी मञ्ज़िल से भटक जाएगा। इसलिए भगवान ने इसी उत्तराध्ययनसूत्र (जिसे आचार्यश्री हस्ती जैनधर्म की गीता कहते थे) के 26वें अध्ययन में 10 समाचारी का वर्णन किया है जो कि निर्ग्रन्थ मुनि को पालन करना अनिवार्य है। जब इसका स्वाध्याय करने का और अनुप्रेक्षा करने का अवसर प्राप्त हुआ तो यह विचार चला कि भगवान के हर शब्द प्राणिमात्र को जगाने वाले और मार्ग बताने वाले होते हैं। भले ही भगवान ने यह अध्ययन निर्ग्रन्थमुनि पर फरमाया, पर हम जैसे श्रावकों के लिए भी यह अध्ययन इतना ही महत्त्वपूर्ण हैं, ऐसा प्रतीत हुआ। ऐसा अनुभव में आया कि ये दस समाचारी वास्तव में 10 Protocols या 10 Magical Secrets of Relationship हैं जिन्हें वर्तमान के आधुनिक युग में हर घर में अनुसरण करना चाहिए। यहाँ कहीं भी आगम के मूल अर्थ को परिवर्तित करने के भाव नहीं हैं, अपितु इस अध्ययन का एक अलग दृष्टिकोण गृहस्थों के लिए सामने रखने का है। इसमें अगर अनन्त ज्ञानियों की कोई भी अविनय आशातना हुई हो तो पहले ही क्षमायाचना करता हूँ। आगे, एक-एक समाचारी को कैसे अब प्रायोगिक रूप से अपनी जीवनशैली में जोड़कर हमारे सम्बन्ध को बेहतर कर सकते हैं यह बताया जा रहा है-

1. आवस्सिया

साधु-जब भी साधु को कोई आवश्यक कार्य के लिए उपाश्रय से बाहर जाना होता है, तो भगवान की यह आज्ञा है कि उन्हें तीन बार 'आवस्सिया' अपने गुरु को बोलकर जाना चाहिए। इससे गुरु को ध्यान में रहता है कि उनके शिष्य कब, कहाँ जा रहे हैं। शिष्य भी अनुशासित रहकर कहीं भी ऐसे ही नहीं जा पाएँगे।

गृहस्थ-हमारे घरों में भी यह सख्त (Strict) अनुशासन होना चाहिए कि अगर घर का कोई भी सदस्य बाहर किसी आवश्यक कार्य के लिए जा रहा हो जैसे कि ऑफिस, स्कूल, शॉपिंग, घूमने आदि तो उन्हें इसकी सूचना घर के बड़ों को देकर जानी अनिवार्य है। देखिये, जब भी किसी नौजवान को या किसी को भी कोई गलत

कार्य के लिए बाहर जाना होता है, या फिर ऐसा कोई कार्य जिसे वह अपने घर वालों से छुपाना चाहता है तो वह बिना बोले घर से निकलने का प्रयास करता है। इसमें घर के बड़े भी शामिल होने चाहिए। यदि वे भी बाहर जा रहे हैं तो अपने छोटों को बोलकर जाएँ। यह करने से गलत कार्य करने वाले को डर रहेगा और यदि वह झूठ बोलना चाहेगा तो भी कुछ ही दिनों में पकड़ा भी जाएगा।

कुल मिलाकर यह समाचारी अपनाने से घर वालों को भी यथावत् अपने परिवारजनों की खबर भी रहेगी और कोई भी गलत कार्य करने से डर भी लगेगा।

2. निसीहियं

साधु–दूसरी समाचारी यह कहती है कि जैसे ही बाहर के आवश्यक कार्य से साधु निवृत्त हो जाए और वापस अपने स्थान पर पहुँचे तो उसे प्रवेश करते ही तीन बार 'निसीहियं' बोले। इससे यह सूचना बड़ों तक आ जाती है कि मैं लौट आया हूँ। गुरु को अब उनसे और कोई कार्य हो तो वे शिष्य को बता सकते हैं।

गृहस्थ–हमारे परिवार में भी यह नियम होना चाहिए कि जैसे ही हम घर पर लौटें, हमारे बड़ों को यह सूचना प्राप्त हो जाए। यह अक्सर देखा जाता है कि शहरों में Nuclear Families (एकल परिवार) एवं छोटे घर होते हैं। यहाँ घर के हर सदस्य के पास घर की चाबी होती है। उदाहरण के लिए आपके घर का बच्चा अपने दोस्तों के साथ घूमने (Party) गया है। अब अगर वह कुछ गलत काम करके आता है या देर रात तक आता है तो वह घर में बिना किसी को सूचना दिये सीधा प्रवेश कर अपने खुद के कमरे में चला जाएगा। क्योंकि पता है अगर मम्मी-पापा ने कुछ पूछ लिया तो सारी पोल खुल जाएगी। अत: घर में बड़ों को बता कर ही कमरे में प्रवेश होना चाहिए जिससे अनायास ही बहुत सारे कुकर्मों से हमारी पीढ़ी सुरक्षित रह पाएगी।

3. आपुच्छणा

साधु–प्रतिलेखना, आहार, विहार, निहार, स्वाध्याय आदि किसी भी कार्य को करने से पूर्व श्रमण निर्ग्रन्थ को अपने गुरुजनों से सविनय पूछकर आज्ञा प्राप्त करना अनिवार्य है। यह ही तीसरी आपुच्छणा समाचारी है।

गृहस्थ–गृहस्थों के लिए यह नियम बड़ा ही मैजिकल सिद्ध हो सकता है। छोटों को अगर कोई भी कार्य करना हो तो उसकी अनुमति/आज्ञा अपने बड़ों से प्राप्त करें। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. कई बार यह वाक्य बोलते हैं-'जो हुकुम में जोखम नहीं।' जो आज्ञा! बस यही घर का मन्त्र हो जाना चाहिए। 'Don't push, always pull'। अगर आपको आपकी कोई बात मनवानी हो तो उसे पुस अर्थात् फोर्स करके नाराज होकर नहीं बोलें जैसे कि बच्चा अपने माँ-बाप से बोल रहा है-'मैं पाँच दिन अपने दोस्तों के साथ घूमने कश्मीर जाऊँगा। मुझे पैसे दीजिए।' आप लोगों को क्या लगता है या फिर आप यदि खुद माँ-बाप हैं तो आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या आएगी? अधिकतर घरों में इस विषय से झगड़ा छिड़ सकता है। अब यदि बच्चा pull Strategy अपनाए और बोले-''अगर आप लोगों की अनुमति हो तो मैं अपने दोस्तों के साथ पाँच दिन कश्मीर घूमने जाना चाहता हूँ। क्या आपकी आज्ञा है?'' अब आपको क्या लगता है कि अनुमति मिलने के चान्स बढ़ जाएँगे और महाभारत की सम्भावना भी कम हो जाएगी। इसलिए आज से अपनी भाषा में एक परिवर्तन करने का हम सबको प्रयास करना चाहिए। 'आपुच्छणा' प्रश्न के रूप में आप अपनी बात को सामने वाले के सामने पेश कीजिए। इससे सामने वाले को सम्मानित भी अनुभव होता है और आपकी बात मनवाने के मौका भी बन जाते हैं। माँ-बाप को भी अपने बच्चों को कुछ कहने के लिए इस तरीके को अपनाना चाहिए। भगवान की इस समाचारी के पालन से घरों में अभूतपूर्व परिवर्तन आ सकता है।

4. पडिपुच्छणा

साधु–किसी विशिष्ट कार्य के लिए गुरुजनों से बार-बार पूछना 'पडिपुच्छणा' समाचारी है। अथवा

दूसरे साधु-साध्वियों के वैयावृत्त्य, शास्त्र-पाठन आदि कार्य के लिए गुरुजनों से पूछना भी इस समाचारी के अन्तर्गत आता है।

गृहस्थ–यह समाचारी अपने घर वालों का हृदय जीतने वाली सिद्ध हो सकती है। घर में हमारे जो दैनिक कार्य हैं वे तो हमने कर ही लिए, पर हम अपने परिवारजन से आगे होकर पूछे कि क्या मेरे लायक और कोई काम है? क्या अन्य किसी की कोई सेवा का कार्य है जो मैं कर सकता हूँ? सामने वाले को लगना चाहिए कि यह बड़ा ही सक्रिय एवं पहल करने वाला व्यक्ति है। जिनसे भी आपका रिश्ता है चाहे व्यवसाय में, घर में, पाठशाला में, सामाजिक जीवन में उनके लिए आपको हमेशा 'मै सदैव तैयार हूँ या मैं सदैव उपस्थित हूँ' ऐसा रहना चाहिए। देखिये आपके पिताजी ने या आपके बॉस ने आपको काम बताया और वह आपने कर दिया वह कोई बड़ी बात नहीं है, पर यदि उनके बिना बोले आपने काम कर लिया, वह एक योग्य विनयवान मनुष्य की पहचान होगी। इस वाक्य को अपने दिलो-दिमाग में याद रखें। 'जो बोला जाता है, वह तो सभी करते हैं, पर जो नहीं बोला गया, वह जब आप करने लग जाते हैं' तो वह दर्शाता है आपकी प्रोएक्टिव मनोदृष्टि। अगर आप नौकरी करते हैं, तो भी भगवान का यह सिद्धान्त आपको प्रमोशन दिलाने में मदद कर सकता है। आप आगे होकर अपने सेठ की जिज्ञासा व्यक्त करें और उनको अन्य कार्य के लिए पूछें। यह करने मात्र से सेठ खुश होगा। ऐसे करने से आप सहज ही किसी भी व्यक्ति के दिल में स्थान बना सकते हैं।

5. छंदणा

साधु–इस समाचारी में साधु को कहा गया है कि यदि वह आहार, पात्र, वस्त्र इत्यादि कुछ लेकर आया हो, तो सबसे पहले वह अपने गुरु या अन्य बड़े साधु को कहे कि इनमें से आप अपनी इच्छानुसार ग्रहण करके मुझे उपकृत कीजिए।

गृहस्थ–यह समाचारी जितनी सरल प्रतीत होती है, उतनी है नहीं। यह सीधे मेरे ममत्व को तोड़ने में सहायक है। एक दिन आप बहुत दिनों के पश्चात् शॉपिंग करने जाते हैं और पूरे दो घण्टे लगाने के बाद आपकी मनपसन्द के कपड़े खरीद कर लाते हैं या आप नया मोबाइल खरीद कर लाते हैं। घर पर लाते हैं और परिवार में से किसी को वह पसन्द आ जाता है और वह उसे रखना चाहता है.... अब? आपका जुड़ाव उस वस्तु से कितना होगा? इसलिए घरों में यह समाचारी होनी चाहिए कि कोई भी नयी वस्तु लाने के बाद उसे बड़ों को प्रस्तुत करनी चाहिए। यह करने से एक अपनत्व का वातावरण घर में फैलता है। पर छंदणा को अमल में लाते समय एक साधक को बड़ी गहराई से खुद के मन का अवलोकन करना पड़ेगा कि क्या उसकी आसक्ति उस वस्तु पर तो नहीं आ रही?

6. इच्छाकारो

साधु–इस समाचारी में एक मुनि दूसरे साधुओं की इच्छा जानता है और तदनुरूप परिचर्या करता है। इसमें साधु खुद की इच्छा भी गुरुजन के सामने रखता है–''मेरी इच्छा इस कार्य को करने की है।''

गृहस्थ–जिनके साथ हमारा उठना-बैठना है, उनकी आदतें, उनकी इच्छाएँ आदि हमें निरीक्षण करते रहनी चाहिए। गुरु ने या बड़ों ने हमें काम बोला मतलब कि हम अभी तक उनको समझ नहीं पाए। पहले सिर्फ आँखों के इशारों पर काम हो जाया करता था। आज भी समर्पित शिष्य अपने गुरु के हाव-भाव से परख लेता है कि उनकी इच्छा क्या है। भगवान भी यही कह रहे हैं, अपने आस-पास वालों को परखे और तदनुरूप आचरण करे। इससे सामने वाले के दिल में जगह बनते देर नहीं लगेगी। इसका दूसरा मतलब यह भी है कि हम जब भी कोई बड़े या गुरुजन के पास जाएँ तो उनसे जिज्ञासु होकर यह कहे, कि मेरी इच्छा है आपसे ज्ञान सीखने की, आपकी अनुकूलता हो तो ज्ञान या फिर आपका अनुभव हमसे साझा करें। बड़ों के पास उनके अनुभव का ज्ञान होता है जो केवल उनके समीप रहकर उनसे पूछने पर प्राप्त होता है।

7. मिच्छाकारो

साधु–दिनभर में अगर किसी भी महाव्रत में

स्खलना या किसी जीव की हिंसा आदि कोई भी दोष लगा हो तो उसके लिए साधु मिच्छा मि दुक्कडं कहते हैं। दिन में दो बार प्रतिक्रमण करना आवश्यक बताया है।

गृहस्थ–विचार यह करना है कि जब एक संयमी आत्मा के लिए भगवान ने 2 बार प्रतिक्रमण का विधान बताया है जिनके जीवन में वैसे ही अल्प दोष होते हैं, तो फिर मेरे-आपके लिए मिच्छाकार समाचारी कितनी अनिवार्य होगी जो कि दिनभर इतने दोष करते हैं। हमारे घर में एक नियम बनना चाहिए कि रात को सोने से पहले सभी परिवारजन आपस में क्षमायाचना करके ही सोएँ। शायद कोई विरला ही घर होगा जहाँ अनबन कहासुनी नहीं होती होगी। इसलिए जरूरी है कि उसी दिन में हमारा खाता हम खत्म करके सोएँ और जीवमात्र से क्षमायाचना करके सोएँ।

8. तहक्कारो

साधु–गुरु, स्थविर आदि कोई वाचना, उपदेश या किसी कार्य के लिए प्रेरणा देते हों, तो उसे नम्रतापूर्वक स्वीकार करना 'तहत्ति' कहना, तथाकार समाचारी है।

गृहस्थ–यह बहुत ही मैजिकल मनोवैज्ञानिकसूत्र है जो भगवान ने तहक्कार समाचारी में हमें दिया है। घर में यदि कोई बड़े मुझे कुछ बोल रहे हैं, सिखा रहे हैं आदि तो उनकी बात स्वीकार करें। 'हाँ बोलें' हमने हमारे घर में एक सेवक को रखा, उसकी एक आदत यह समाचारी समझाने में बड़ी मदद करती है। उसको हम कभी-कभी कोई-भी काम बोलते, तो वह तुरन्त बोलता जी भईया, जी भाभीजी! अभी करता हूँ काम भले ही वह एक घण्टे बाद करता है, पर उसके जी या हाँ बोलने से मनोवैज्ञानिक रूप से हम खुश हो जाते हैं और न ही क्रोध आता। मतलब समझ में आया कि कभी-भी सामने वाले आदरणीय, बड़े व्यक्ति ने आपको काम बताया जो आपको पता है आपको अन्त-पन्त करना ही होगा, तो तुरन्त हाँ बोल दीजिए। तहत्ति कर दीजिए। दूसरा, तहत्ति का अर्थ यह भी है कि जब सामने वाला आपसे बातचीत कर रहा है तो आप हाँ बोल के या फिर मुख को हिलाकर यह दर्शाएँ कि आप उनकी बात सुन रहे हैं। आपने यह निजी अनुभव से लोगों को प्रशिक्षण देते हुए देखा होगा कि अधिकतर लोग हाँ या नोडिंग (मुख को हिलाकर) ही नहीं करते, इसलिए सामने वाले को उनसे बात करने का मन भी नहीं करता और उनके मित्र भी जल्दी से नहीं बनते। इसलिए भगवान के इस रामबाण सूत्र से न सिर्फ अपने बड़ों की आँखों के तारें बनेंगे, अपितु आपके मित्र और चाहने वाले भी अधिक होंगे। अपने बॉस को प्रसन्न करने के लिए भी यह कारगर सिद्ध होगा।

9. अब्भुट्ठाणं

साधु–गुरु या ज्येष्ठ साधु आ रहे हों तो अपने आसन से उठकर, 'पधारिए' इस प्रकार कहते हुए हाथ जोड़कर उनके सम्मुख जाना अब्भुट्ठाणं समाचारी है।

गृहस्थ–यह हमारी भारतीय संस्कृति शुरू से ही रही है कि यदि हमारे यहाँ कोई अतिथि पधारते हैं हम उनका खड़े होकर, आगे जाकर सत्कार करते हैं। पाठशाला में भी जैसे ही गुरुजी आते हैं, बच्चों को सिखाया जाता है खड़े होने के लिए। भगवान की यह समाचारी कुछ अंश में अब भी हमारे समाज में जीवित है, ऐसा कहा जा सकता है।

10. उवसंपया

साधु–दूसरे गण के आचार्य/उपाध्याय/बहुश्रुत या विशिष्ट साधु के पास गुरु की आज्ञा से रहना 'उवसंपया' है।

गृहस्थ–हमारे पारिवारिक जीवन में भी जितना हम ज्ञानी या आदरणीय लोगों के समीप रहेंगे तो धीरे-धीरे हम भी उनके जैसा बनने लग जाएँगे। जैसी संगत, वैसी रंगत। आजकल बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ भी अपने कर्मचारियों को अलग-अलग स्थानों पर रहने भेजती है, जिससे उनके सम्पर्क में रहकर वे अपना ज्ञान बढ़ा पाएँ। परिवार में भी हम जितना हमारे बड़ों के पास रहेंगे उतना उनके अनुभव से सीख पाएँगे। हमें हमारे बच्चों को भी उनकी छुट्टियों में ऐसे लोगों की संगत में भेजना

चाहिए जहाँ से उन्हें कुछ सीखने को मिले। क्योंकि याद रखें सद् का सङ्ग करने से सत् का सङ्ग स्वत: हो जाता है।

जैसे हर कम्पनी या व्यवसाय को चालु करने से पहले एक चार्टर बनाया जाता है नियम/कानून का और उस कोड ऑफ कण्डक्ट का अनुसरण हर कर्मचारी को करना पड़ता है, वैसे ही हमारे घरों में भी 10 समाचारी रूप नियम चार्टर बनना चाहिए। जब घर में यह नियम बन जाएगा तो अनुसरण करते समय नहीं लगेगा और हमारे रिश्ते बेहतर बनेंगे।

भगवान ने भी यह ही 26वें अध्ययन की पहली गाथा में कहा-

समायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं
जं चरिताण णिग्गंथा, तिण्णा संसार-सागरं।।

अर्थात् इस समाचारी का यथारूप पालन करने से सभी प्रकार के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दु:खों से छुटकारा मिलेगा।

-बी 13, शिवालय मार्ग, सेठी कॉलोनी, जयपुर-302004 (राज.)

धार्मिक पत्रिकाओं का न करें कदापि अनादर

डॉ. दिलीप धींग

धर्म, संस्कृति और जीवन-मूल्यों की सुरक्षा और प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं का ऐतिहासिक और व्यापक योगदान है। कई परिवारों में केवल बड़े बुजुर्ग ही पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। तरुण पीढ़ी न तो इन पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ती है और न ही बड़े उन्हें प्रेरित करते हैं। कभी-कभी तो बड़े भी छोटों के मोहात्मक बचाव में बोलते हैं कि बच्चों के पढ़ाई बहुत है या युवाओं को व्यवसाय सम्भालना पड़ता है, इसलिए धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं के अवलोकन का उन्हें समय नहीं मिलता है। जबकि दैनिक समाचार-पत्र, सोशल मीडिया, इण्टरनेट आदि के लिए उन्हें समय मिल जाता है। इसके अलावा नई पीढ़ी की हिन्दी और मातृभाषा से नियोजित-अनियोजित दूरी बन रही या बनाई जा रही है। नियमित स्वाध्याय की प्रतिज्ञा से यह दूरी कम की जा सकती है।

जब बड़े संसार से विदा हो जाते हैं तब शायद सर्वाधिक उपेक्षा किसी व्यक्ति की नहीं, अपितु घर में आने वाली धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं की होती है। जैसे समाचार-पत्र की दैनिक जीवन में उपयोगिता होती है, वैसे ही धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं की सामाजिक जीवन में उपयोगिता होती है। प्राय: धार्मिक-पत्रिकाएँ मासिक या पाक्षिक होती हैं। उन्हें दो-चार सप्ताह में देखा-पढ़ा जा सकता है। इससे आगे सोचें तो किसी श्रेष्ठ पत्रिका के समाचार खण्ड को छोड़कर दूसरी सारी सामग्री सदैव पठनीय होती है। यहाँ तक कि समाचार भी सन्देशपरक हो तो हमेशा उपयोगी बने रह सकते हैं। अत: धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के प्रति हर परिवार में आदर का भाव होना चाहिये।

यह भी एक व्यावहारिक सत्य है कि पुरानी पत्र-पत्रिकाओं को घर में सदैव सहेज कर रखना सबके लिए सम्भव नहीं होता है। इसलिए जब कभी पुरानी पत्र-पत्रिकाओं का विक्रय, विसर्जन, हस्तान्तरण या स्थानान्तरण करना पड़े तो आदर और विवेक के साथ करना चाहिये। उन्हें कचरे में या अपवित्र स्थान पर नहीं रखना, नहीं फेंकना चाहिये।

इसके बावजूद किसी को लगता है कि उनके परिवार में आने वाली पत्रिका का अब कोई उपयोग नहीं है तो पत्रिका की सदस्य संख्या और पते के साथ सम्बन्धित प्रकाशन कार्यालय या सम्पादक को इस आशय का एक लिखित निवेदन भेज देना चाहिये। ऐसा करने से अपव्यय और अनादर रुकेगा और पत्रिका उन जिज्ञासुओं तक भेजी जा सकेगी, जहाँ उन्हें पढ़ा जाता हो। प्रबुद्ध पाठक यदि कहीं किसी पत्र-पत्रिका या सत्साहित्य का अनादर देखें तो उसे रोकने में मदद करें। आपका इस प्रकार का छोटा-सा सहयोग भी समाज, साहित्य, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के लिए काफी हितकारी हो सकता है।

-निदेशक : आईसीपीएसआर, 7, अय्या मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-01 (तमिलनाडु)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 43
ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

गुणवान बनने के तीन सूत्र

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

अध्यात्म से जुड़ाव रखने वाले प्रत्येक जीव, हर आत्मा का एक ही सपना, एक ही लक्ष्य होता है सिद्ध अवस्था को प्राप्त होना। हम यह भी निश्चित रूप से जानते हैं कि सिद्ध प्रभु पूर्णत: निर्दोष हैं अर्थात् उनमें किञ्चित् मात्र भी दोष नहीं है। दोषरहित आत्मा ही अनन्त सिद्धों के साथ विराजित होने की अधिकारिणी है। यदि हमें भी संसार से विलग होना है, सिद्धों की ज्योत में संलग्न होना है तो दोषों का निस्तारण और गुणों का आलिङ्गन करना ही होगा। प्रभु महावीर ने अपनी आत्मा को ऊँचा उठाने के बहुत ही सुन्दर और श्रेष्ठ सूत्र दिए। उन सूत्रों को अपने जीवन में अपनाकर हर आत्मा गुणवान बनने में सक्षम हो सकती है।

1. गुणदर्शन

कहते हैं 'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि' जैसा हमारा देखने का नज़रिया होता है हमें संसार वैसा ही नज़र आता है। पतझड़ के मौसम में जब पेड़ से पत्ते गिर जाते हैं, घास भी जब तेज गर्मी से सूखे भूसे में परिवर्तित हो जाती है तब गधा ऐसी सूखी घास को खाने में आनाकानी करने लगता है। उस समय गधे का मालिक धोबी उसकी आँख पर हरा चश्मा लगा देता है, गधे को घास हरी दिखती है, फिर वह उसे मजे से खाता है। यह तो मात्र एक उदाहरण है यह समझने के लिए कि नज़र बदलते ही नज़रिया बदल जाता है।

संसार में एक भी पदार्थ, एक भी व्यक्ति, एक भी द्रव्य, एक भी जीव ऐसा नहीं जो पूर्णत: गुणरहित हो। एक न एक गुण तो सबमें पाया ही जाता है। आप सर्प को ही ले लीजिए, अधिकांशत: लोगों के लिए यह हानिकारक जीव है, परन्तु उसके विष से भी कई प्रकार की औषधियाँ बनती है, वह किसान मित्र के नाम से भी जाना जाता है। कबूतर की बीट भी सूजन-दर्द निवारक होती है, आक से भी औषधियाँ बनती हैं। इसी प्रकार अधम से अधम व्यक्ति में भी कुछ न कुछ अच्छाई अवश्य होती है। प्रभु ने फरमाया है-''घृणा पाप से करो, पापी से नहीं।'' क्योंकि उस पापी में भी अवश्य कुछ न कुछ गुण तो रहा हुआ है। यदि हमारी आँखों पर भी गुणग्राहकता का चश्मा लगा लें तो जैसे गधा सूखे भूसे को भी हरा महसूस कर अपनी क्षुधा शान्त कर लेता है ठीक वैसे ही निकृष्ट से निकृष्ट जीव में भी हम गुणों को खोजने में सक्षम हो सकेंगे। जिसने अपनी दृष्टि में गुण देखने की योग्यता विकसित कर ली, उसे सभी में गुण ही गुण दिखाई देंगे।

दो तरह की दृष्टि होती है एक भँवरे की, एक मक्खी की। भँवरा फूलों के पराग में से मकरकन्द (मीठा रस) चुनता है वहीं मक्खी यदि एक तरफ मिष्ठान्न तो दूसरी तरफ विष्ठा हो तो वह विष्ठा पर बैठना अधिक पसन्द करती है।

हमें हमारी दृष्टि भँवरे की तरह बनानी है, न कि उस मक्खी की तरह। उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम अध्ययन में प्रभु महावीर ने सूअर का उदाहरण देते हुए फरमाया है कि एक बर्तन में चावल भात है फिर भी सूअर उसे त्यागकर विष्ठा की ओर आकर्षित होता है। इसी प्रकार हर जीव में गुण और दोष दोनों रहे हुए हैं। यदि हमने सूअर की तरह दोषों पर ही दृष्टि डाली तो हमारा भी दोष रूपी विष्ठा से ही पाला पड़ने वाला है। प्रकृति का एक सामान्य नियम है कि जो जैसे विचार करता है वह शनै: शनै: वैसा ही बन जाता है, अत: जो गुणों को देखता है उसके जीवन-आँगन में गुण रूपी आमवृक्ष की डालियों पर मिठास, स्नेह और शान्ति रूपी मञ्जरियाँ लहलहा

उठती हैं। श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से सुना है कि-''दूसरों के दोष देखते रहने से स्वयं के दोषों को खत्म करने की इच्छा कम होती जाती है, निर्दोष होने की भावना शिथिल होने से दोष खत्म नहीं हो पाता।''

नारियल बाहर से भूरा, कठोर एवं रेशे वाला होता है और भीतर से स्निग्ध, सफेद, मधुर होता है। नारियल को 'श्रीफल' कहा जाता है, क्योंकि दृष्टि बाहरी रूप पर नहीं, अपितु अन्दर के गुण पर है ठीक वैसे ही हमें अपने अन्दर के गुणों का विकास करना हो, अपने मन और आत्मा को दोषों से बचाकर सुरक्षित रखना हो तो गुणों पर दृष्टि रखनी होगी। यदि दृष्टि-दोष हो जाए तो उसका इलाज सम्भव है पर दोष-दृष्टि हो जाए तो सम्भालना मुश्किल हो जाता है। यदि गुणज्ञ बनकर गुणों की प्रशंसा और अनुमोदना करना प्रारम्भ कर दें तो दोष-दृष्टि से मुक्ति पाई जा सकती है।

2. गुणवर्णन

अपनी आत्मा को दोषरहित बनाने का दूसरा चरण है गुणवर्णन। जैसे ही यह दूसरा क़दम उठायेंगे तो सिद्धों से हमारी दूरी में कमी आएगी। जब दृष्टि गुणग्राही हो जाती है, हमें जीव में गुण के दर्शन होने लगते हैं तब मुख से गुणों का वर्णन कर जिह्वा को पवित्र करें। इस गुणवर्णन की तो इतनी महिमा बताई गई है कि यदि महापुरुषों का गुणवर्णन करते हुए उत्कृष्ट रसायन (भाव) आ जाए तो जीव तीर्थङ्कर नाम गोत्र का बन्ध कर लेता है, संसार सीमित कर लेता है, निकट भवों में अपने चरम लक्ष्य मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। तत्त्वार्थसूत्र में आचार्य उमास्वातिजी फरमाते हैं- ''परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य।'' अर्थात् जो जीव दूसरों की निन्दा करता है, स्वयं की प्रशंसा करता है, दूसरे के सद्गुणों को छिपाता है वह जीव नीच गोत्र का बन्ध कर लेता है। इसी तत्त्वार्थसूत्र में एक सूत्र और आता है 'केवलिश्रुत-संघ-धर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य।' अर्थात् श्रुतकेवली, संघ, देव-गुरु-धर्म का अवर्णवाद अर्थात् अवगुण करने से दर्शन मोहनीय कर्म का बन्ध होता है। किसी के गुण वर्णन करना इतना आसान भी नहीं होता, क्योंकि इसमें जीव की मान कषाय आड़े आ जाती है। किसी अन्य के गुण वर्णन करने के लिए हृदय की उदारता सबसे अधिक आवश्यक होती है।

जैसे-जैसे हम उन्नत विचारों की ओर अग्रसर होते हैं, हमारे मन के भाव भी निर्मल एवं उन्नत होने लगते हैं और जीवन में झलकने लगते हैं। महान् आत्माओं के गुणगान करने से, भीतर में उनके प्रति बहुमान करने से गुणों का भण्डार विकसित होता है। उनका गुणगान करने से भव-भव की कर्म रूपी बीमारी का निदान होता है। जितना रस हमें दूसरों के दोषों का बखान करने में आता है उतना अन्य किसी कार्य में नहीं आता। पर सच यह है कि दूसरों के दोषों का वर्णन न करने से, दूसरा तो उन दोषों से बचे न बचे, पर स्वयं की आत्मा मैली होने से बच जाती है। वर्णन करना ही है तो स्वयं के दोषों का करो ताकि उनकी सत्ता हमारी आत्मा से खत्म हो सके। गुण वर्णन करने की कला से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। कितनी भी प्रतिकूल परिस्थितियाँ आ जाएँ, जो जीव मधुरवाणी से दूसरों के छोटे-छोटे गुणों की भी व्याख्या करता है वह जीव हमेशा प्रेम और आदर को अवश्य प्राप्त करता है।

3. गुणग्राहकता

गुणवान बनने की दिशा में तीसरा क़दम होता है, गुणग्राहकता। जहाँ कहीं भी कोई-सा भी गुण, किसी में भी दिखे, उसे जीवन में उतारने का प्रयास करना करना चाहिए। एक चींटी से हम मेहनत और लगन सीख सकते हैं, मधुमक्खी से परिवार, समाज के साथ सामञ्जस्य बैठाना सीख सकते हैं, कबूतर आदि पक्षियों से रात्रि-भोजन त्याग सीख सकते हैं, वृक्षों से दान देना, पृथ्वी से सहनशीलता, कोयल से मीठा बोलना सीख सकते हैं; ये तो मात्र कतिपय उदाहरण हैं। समझना मात्र इतना है कि जहाँ भी गुण बटोर सको, इकट्ठा करो और अपनी आत्मा

के गुणरूपी बैंक बैलेन्स को बढ़ाते जाओ। गुणवान बनने के लिए गुणों को आत्मसात् करते जाएँ। भले ही गुण कहीं से भी मिलें, उन्हें भीतर में जमा करते जाएँ तो एक न एक दिन इस क्रिया में भावों का भी विस्तार अवश्य होगा। गुणों का संकलन करते रहने से, उन गुणों के जीवन में प्रकट होने की सम्भावना प्रबल हो जाती है। जिस जीव के भीतर निर्दोष होने की उत्कण्ठा पैदा हो जाती है उसे सदैव निजदोष ही दृष्टिगोचर होते हैं, पर दोषों पर दृष्टिपात होता ही नहीं। क्योंकि हम दूसरे के दोषों को तभी तक देखते हैं जब तक अपने दोषों को निकाल फेंकने का पुरुषार्थ प्रारम्भ नहीं होता। जैसे ही निजदोष काँटे के समान आत्मा में चुभने लगते हैं, दोषों का दर्द सहन नहीं होता। जीव उनसे मुक्त होने में इतना संलग्न हो जाता है कि पर दोष देखने के लिए क्षणमात्र का भी समय नहीं मिलता। गुणग्राहकता मानव की ऐसी उपलब्धि होती है जो जीवन को सार्थक करके सफलता के शिखर पर और आगे बढ़ा देती है। स्वयं के गुण और दूसरे के दोषों पर नज़र रखने के बजाय दूसरों के गुण अपनाओ और स्वयं के दोष मिटाओ। गुणग्राहकता की विशेषता निज में विकसित कर गुणवान बनें। गुणवान एक दिन भगवान बन जाता है। भगवान बनना है, सिद्धों से साक्षात्कार करना है तो गुणानुरागी बनना होगा।

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

माध्यस्थ भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

मनुष्य का निष्पक्ष भाव कहलाता माध्यस्थ भावना
राग-द्वेष मध्य सम सन्तुलन ही तो है माध्यस्थ भावना
सिद्धान्तों का सार यही, जीव विकार मुक्त बन जाए
विकार मुक्त बनता तभी, जब माध्यस्थ भावना भाए
अहंकार का त्याग करें, करें कामनाओं की मर्यादा
हो न किसी की उपेक्षा, न अपेक्षाएँ भी हों ज्यादा
अमर्यादित रहता तनाव में, पैदा करता उलझनें अनेक
पर को देता बड़ी व्यथा, दु:खी रहता उससे हर एक
शुभभावों के सङ्ग आत्म लक्ष्य से बनना है निर्गुण
समता और सहिष्णुता से विकसित होते हैं उदात्त गुण
न अनुकूलता में रम्य बनें, न प्रतिकूलता से रहें व्यथित
माध्यस्थ भाव है आदर्श स्थिति, रहें सदा संयमित
वीतरागता वीतद्वेषता साध्य है
माध्यस्थ भाव है साधन
वक्रता को छोड़ने से, ऋजु निर्मल होगा आराधन
सुख में हर्षित मत हो, सुख दु:ख में बदल जाएगा
सुख-दु:ख में सम रहने से भाग्य बदल जाएगा
माध्यस्थ भावना के नित चिन्तन से
स्वभाव ही बदल जाएगा
मिट जाएँगे कष्ट क्रन्दन तू चित्त को सुधार
राग-द्वेष की गाँठ मिटा दे, यही भावना का सार
अपने सुख-दु:ख में राग-द्वेष सबसे बड़ा उलझाव
माध्यस्थ भाव रखने से ही मिलती है शान्ति की छाँव
राग-द्वेष क्षय प्रक्रिया से आरम्भ करें आराधना
मोहनीय का सम्पूर्ण क्षय कर,
चारित्र गुण को है प्रकटाना
हर प्रसङ्ग में साधें हम माध्यस्थ भाव की साधना
अनुष्ठानात्मक अभ्यास से सधती है तथारूप भावना
संयोग-वियोग, इष्ट-अनिष्ट,
सुख-दु:ख की न हो कामना
समस्त गुणों की प्राप्ति में सहायक है माध्यस्थ भावना
'मरुदेवी' ने अप्रमत्त हो माध्यस्थ भावना है भाई
अनुप्रेक्षा से आचरित कर त्वरित मुक्ति है पाई
'माध्यस्थ भावना' की अनुप्रेक्षा कर ले भवी प्राणी!
मार्ग दिखला रही हमको 'मुदित' जिनवाणी।

-1101 वुड साइड, जी साउथ गोखले रोड़, प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 46
ISSN 2249-2011

शोधालेख

जैन संस्कृति में पर्यावरण-चेतना

डॉ. एन. के. खींचा

मानव समाज की ज्वलन्त समस्या बढ़ती जनसंख्या एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण पर्यावरण प्रदूषित होने से मानवजाति ही नहीं, बल्कि जीवमात्र के अस्तित्व को भी गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है। अपरिमित प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन से सभी सन्त्रस्त हैं। ऐसी गम्भीर समस्या के समाधान हेतु जैन संस्कृति विवेक[1] पर जोर देती है। इस संस्कृति का मूलमन्त्र है-जो भी करो विवेक से करें, जागकर करें, मूच्छा[2] में न करें। जैन संस्कृति के अनुसार वनस्पति में भी जीव हैं, जिन्हें वनस्पतिकायिक जीव कहते हैं। इसी कारण वनस्पति का काँटना-छाँटना आदि का जैन संस्कृति में निषेध है। जैनाचार में हरितकाय पेड़-पौधों की शाखा/टहनी/पत्ते तोड़ना भी वर्जित है। इसी प्रकार फलों में भी कच्चे फल तोड़ना वर्जित है। जो फल पक कर स्वयं ही गिर जाते हैं, वे ही ग्राह्य हैं। क्योंकि वे अचित्त[3] (अजीव) और अनवद्य होते हैं।

जैन संस्कृति की प्राकृत कथा कृति 'वसुदेवहिण्डी' के बन्धुमतीलम्भ में वर्णित है कि जैनदर्शन का मूल जीवदया है। पर्यावरण चेतना की दृष्टि से वनस्पति में जीव होने से उस पर करुणा, दयाभाव रखने की अनिवार्यता है। वसुदेवहिण्डी में पर्यावरण के महत्त्व की दृष्टि से उपयोगी वृक्षों में शाल, तिलक, कुरबक, चम्पक, अशोक, कमल, कुमुद, पनस, कल्पवृक्ष, चित्ररस आदि का विस्तृत विवरण है।

जैन संस्कृति में पर्यावरण चेतना के अन्तर्गत चैत्य वृक्षों को पर्याप्त स्थान दिया गया है। वनस्पति, पशु-पक्षी एवं मानव एक-सी चेतना के विभिन्न भेद हैं। वनस्पति में जीव होने के कारण जैन संस्कृति में सर्व प्रकार की कच्ची वनस्पति को अभक्ष्य[4] मानते हैं। इस अभक्ष्यता में पर्यावरण की विविध प्रदूषणों से सुरक्षा एवं पेड़-पौधों के अस्तित्व की रक्षा का भाव निहित है। इस क्रम में गोम्मटसार, सर्वार्थसिद्धि, षट्खण्डागम, राज वार्तिक, लाटी संहिता आदि ग्रन्थ पठनीय हैं।

जैन संस्कृति में भोगवृत्ति[5] के प्रति संयम[6] अहिंसा[7] और अपरिग्रह[8] पर सर्वाधिक बल दिया गया है। इन्हीं जीवन मूल्यों के आधार पर अनेकों आचार नियमों (Conduct rules) का निर्धारण हुआ है, जिनका पालन आज भी पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिए आवश्यक है।

जैन संस्कृति के सर्वाधिक प्राचीन आगम आचाराङ्गसूत्र में 2600 वर्षों पूर्व यह देशना की गई थी कि **तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं छज्जीवणिकायसत्थं समारंभेज्जा, नेवन्नेहिं छज्जीवनिकायसत्थं, नेवन्ने समारंभवेज्जा, छज्जीवणिकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा।**[8]

अर्थात् न केवल प्राणी-संसार एवं वनस्पति जगत् में जीवन की उपस्थिति है, अपितु आगम सूत्र में कहा गया है कि पृथ्वी, पानी और वनस्पति के आश्रित होकर अनेकानेक जीव-अपना जीवन जीते हैं। अत: इनके दुरुपयोग, विनाश अथवा हिंसा से उनका भी विनाश होता है।

प्रश्न उठता है कि क्या हम जल, वायु, पृथ्वी और अग्नि तत्त्व के अभाव में जीवन की कोई कल्पना भी कर सकते हैं? ये तो स्वयं जीवन के अधिष्ठान हैं। अत: इनका दुरुपयोग या विनाश स्वयं के जीवन का ही विनाश है। इसलिए जैन संस्कृति में उसे हिंसा अथवा पाप कहा गया है। इसलिए जैन संस्कृति पग-पग पर जीवन-चर्या, व्यवहार में पर्यावरण चेतना एवं प्रदूषण निवारण की

पालना, नियम बनाकर शताब्दियों पूर्व से करती आई है।

आचाराङ्गसूत्र के प्रारम्भ में ही पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, वनस्पति और त्रस कायिक जीवों की हिंसा के कारणों एवं उनकी हिंसा से बचने के निर्देशों की चर्चा की गई है।

एक जीव का जन्म, विकास और अस्तित्व दूसरे जीवों पर आश्रित (Coexistence) है। दो तरह के दृष्टिकोण इस संसार में व्याप्त हैं। एक दृष्टिकोण (Point view) यह भी रहा है कि यदि एक जीवन, दूसरे जीवन पर आश्रित है तो हमें क्या यह अधिकार है कि हम जीवन के दूसरे रूपों का विनाश करके भी अपने अस्तित्व को बनाये रखें। विश्व के पूर्वी देशों में **जीवो जीवस्य भोजनम्** तथा विश्व के पश्चिमी देशों में अस्तित्व के लिए संघर्ष (Struggle for existence) के सिद्धान्त इसी दृष्टिकोण के कारण अस्तित्व में आये। इनकी जीवनदृष्टि हिंसक रही। इन्होंने जीवन और विकास के लिए विनाश से विकास का मार्ग चुना। आज भी पूर्व से पश्चिम तक इसी जीवनदृष्टि का बोल बाला है।

किन्तु अब विज्ञान यह बताता है कि जीवन के दूसरे रूपों का अनवरत विनाश करके हम मानव के अस्तित्व को भी नहीं बचा पायेंगे।

इसी सम्बन्ध में दूसरी जीवनदृष्टि यह भी रही है कि एक जीवन जीवन के दूसरे रूपों में परस्पर आधारित है। जैनाचार्य जैन संस्कृति को, जीवों के पारस्परिक रूप को अपने ग्रन्थों, महाग्रन्थों, नियम-सारणियों में गद्य-पद्य, कथानक, काव्य, रूपक, नाटक, चित्रकला, संगीत, मूर्तिकला एवं मन्दिरों तथा अतिशयों के रूप में सदैव प्रस्तुत कर मानव चेतना को पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण से अनवरत जोड़ते ही रहे हैं। जैन संस्कृति में इसे **परस्परोपग्रहो जीवानाम्** के रूप में उद्घाटित किया गया है।[9]

आज से लगभग 1850 वर्षों पूर्व आचार्य उमास्वाति ने बहुमूल्य सूत्र दिया था **परस्परोपग्रहो जीवानाम्**' अर्थात् जीवन एक-दूसरे के सहयोग (cooperation) पर आधारित है। विकास का मार्ग हिंसा[10] (violence) या विनाश नहीं, परस्पर सहकार है। एक दूसरे के पारस्परिक सहकार या सहयोग पर जीवन यात्रा (Life cycle) चलती है। जीवन के दूसरे रूपों के सहभागी बनकर ही हम अपना जीवन जी सकते हैं। जीव जगत पारस्परिक सहयोग पर आधारित है।

हमें जीवन जीने के लिए वनस्पति जगत् की परम आवश्यकता होती है। वनस्पति को भी जीवन जीने के लिए जल, वायु, प्रकाश एवं खाद की आवश्यकता होती है। वनस्पति भी अपना भोजन प्रकाश संश्लेषण (Photo synthesis) की क्रिया से बनाते हैं, जिसके लिए कॉर्बन-डाई-ऑक्साइड गैस की आपूर्ति प्राणी जगत् से ही होती है।

वनस्पति से प्राप्त ऑक्सीजन गैस जो हमारे लिए प्राण वायु है वह वनस्पति के स्टोमेटा छिद्रों (Stomata) से प्राप्त होती है। वनस्पति जहाँ ऑक्सीजन देती है, वहाँ साथ ही अनाज (खाद्यान्न), सब्जियाँ, फल, आदि-आदि से हमारा जीवन चलता है। **अत: सदा अप्रमत्त भाव से यत्नशील रहना चाहिए।**[11]

जीवन परस्पर लेन-देन की क्रिया से, सहयोग एवं सहकारिता से चलता है। जीवों के विनाश का हमें अधिकार नहीं है, क्योंकि उनके विनाश में हमारा भी विनाश निहित है। दूसरे शब्दों में दूसरे की हिंसा, वस्तुत: हमारी ही हिंसा है। इसलिए जैन आगम आचाराङ्गसूत्र में कहा गया है कि जिसे तू मारना चाहता है, वह तो तू स्वयं ही है।[12] क्योंकि यह तो तेरे एवं मेरे अस्तित्व का आधार है। परस्पर सहयोग लेना और दूसरों को सहयोग देना यही प्राणीजगत् की आदर्श स्थिति है। इसी मूल भावना को ध्यान में रखकर जैन संस्कृति के नायकों ने जल, वायु, भूमि, तथा खाद्य-सामग्री के प्रदूषण से बचने के लिए आम व्यक्तियों, श्रावकों, तथा साधकों के लिए आचार-नियमों का प्रतिपादन किया। उन्होंने आमजन

के लिए अणुव्रत[13] एवं साधु-साध्वी, मुनि, श्रमण आदि के लिए महाव्रतों[14] का प्रतिपादन किया। साथ ही साथ नियम भंग करने की दशा में प्रायश्चित्त विधानों का भी सजगता एवं विवेक से प्रतिपादन किया ताकि प्रकृति का संरक्षण हो सके।

आचाराङ्गसूत्र के प्रथम अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि स्थावर जीवों के साथ एकात्मकता की अनुभूति और तदनुरूप क्रियान्विति जागरूकता है। आन्तरिक पर्यावरण शुद्ध हो तो समता,[15] मैत्री,[16] करुणा एवं मुदिता स्फुटित होंगे। तब जीवन सरस बन जायेगा और बाह्य पर्यावरणीय चेतना एवं संरक्षण के लिए मजबूरी नहीं, बल्कि सहर्ष ही जीवन मूल्यों की स्थापना हो सकेगी।

यद्यपि एकेन्द्रिय जीवों का विकास कम होता है, किन्तु वे चेतन हैं, जीव हैं उनकी आत्मा और हम पञ्चेन्द्रिय की आत्मा समान है। जो हमें प्रिय हैं वहीं उन्हें भी प्रिय हैं। यही 24वें तीर्थङ्कर महावीर की देशना है-

सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं
तम्हा पाणवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं।।[17]

सभी जीवों को अपना जीवन प्रिय है[18] अत: प्राणिवध अकरणीय है। अस्वाभाविक प्राणनाश, समस्त प्राणि-समूह के जीवन, गति एवं दिशा को प्रभावित करता है। अत: यह आत्मौपम्यभाव, पर्यावरण-चेतना एवं पर्यावरण-संरक्षण ही जैन जीवन संस्कृति है।

पर्यावरण सन्तुलन न बिगड़े, सभी जीव अपने स्वभाव में रहें। कई बार जीवन में प्रशंसा, सम्मान, पूजा, अभिलाषा आदि तथा दु:ख, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष आदि कारणों से कृत-कारित-अनुमोदना आदि के रूप में हिंसा का उदय होता है जिससे पर्यावरण असन्तुलन बढ़ता है। यों समझें कि जब भी कोई जीव, किसी दूसरे जीव को नुकसान पहुँचाता है तो पर्यावरण असन्तुलित हो जाता है।

व्यवहार में अशुद्ध चित्तवृद्धि के कारण जीव ही जीव का शत्रु बनता है तथा व्यक्ति की चित्त शुद्धि से जीव ही जीव का मित्र बनता है। चूँकि मानव विवेकवान् बुद्धि सम्पन्न है, विचारवान् है। अत: वह सभी जीवों का सम्मान करे, प्रकृति के साथ छेड़छाड़ न करे। समता में रहें तभी **मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ** सार्थक हो सकता है। साथ ही जैन संस्कृति का मूल **परस्परोपग्रहो जीवानाम्** भी व्यवहार जगत् में लागू हो सकता है।

प्राणातिपात (हिंसा) का संयम संसार में किसी भी जीव की किसी भी प्रजाति को नष्ट होने से बचा सकता है तथा पर्यावरण सन्तुलन स्थापित करने में सहायक हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. दशवैकालिकसूत्र 4/8
2. दशवैकालिकसूत्र 6/8, 6/21
3. आचाराङ्गसूत्र द्वितीय स्कन्ध सूत्र 324
4. आचाराङ्गसूत्र द्वितीय स्कन्ध सूत्र 390
5. जैन सांस्कृतिक चेतना के स्वर-प्रो. भागचन्द जैन भास्कर
6. उत्तराध्ययनसूत्र 12/44
7. नन्दीसूत्र चूर्णि 5/38
8. उत्तराध्ययनसूत्र 8/17, आचाराङ्गसूत्र 1-1-7-63
9. तत्त्वार्थसूत्र 5/21
10. उत्तराध्ययनसूत्र 2/27, परम पुरुषार्थ अहिंसा-नेमिशरण मित्तल।
11. दशवैकालिकसूत्र 8/16
12. तत्त्वार्थसूत्र 7/1, आचाराङ्गसूत्र 1/5/5/170
13. तत्त्वार्थसूत्र 7/1, पृष्ठ 294-295, स्था 5/2
14. स्थानाङ्गसूत्र 266, उत्तराध्ययनसूत्र 23/23, दशवैकालिकसूत्र, अ. 4, तत्त्वार्थसूत्र 7/1/2
15. सूत्रकृताङ्ग 1/8/16, 1/10/6
16. मूलाचार 29
17. दशवैकालिकसूत्र 6/11
18. दशवैकालिकसूत्र 6/11, आचाराङ्गसूत्र 2/2/3
19. उत्तराध्ययनसूत्र 6/2, आवश्यकसूत्र 4/22

-सीनियर फैलो, आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली
-544, सिद्धार्थ नगर, जवाहर सर्किल, जयपुर

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 49
ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (14)

(केवलज्ञानावरणीय कर्म)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– केवलज्ञानावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

समाधान–जिस कर्म के कारण जीव को केवलज्ञान प्रकट नहीं हो सके, उसे केवलज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं। इस कर्म की ऐसी विशेषता है कि जब तक यह कर्म उदय में रहता है तब तक सर्वघाती रूप में ही उदय में रहता है। इस कर्म का देशघाती उदय नहीं होता है। यही कारण है कि इस कर्म के उदय रहते जीव को केवल ज्ञान प्रकट नहीं हो पाता है।

जिज्ञासा– क्या केवलज्ञान की प्राप्ति मात्र केवलज्ञानावरणीय कर्म के क्षय होने से हो जाती है?

समाधान–नहीं, केवलज्ञानावरणीय कर्म के साथ ही सम्पूर्ण ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है तथा दर्शनावरणीय व अन्तराय कर्मों का क्षय भी अनिवार्य है। मोहनीय का सम्पूर्ण क्षय तो दसवें गुणस्थान के अन्त में हो जाता है, उसके बाद में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय तीन घाती कर्मों का भी बारहवें गुणस्थान के अन्त में एक साथ सम्पूर्ण क्षय होता है, तब कहीं जाकर तेरहवें गुणस्थान के प्रथम समय में उस जीव को केवलज्ञान की प्राप्ति होती है।

जिज्ञासा– केवल ज्ञान की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

समाधान–1. केवलज्ञान के द्वारा समस्त द्रव्यों की समस्त पर्यायों को सीधे आत्मा से परिपूर्ण रूप से प्रत्यक्ष जाना जाता है। दूसरे शब्दों में अनन्तकाल पहले की, अनन्तकाल बाद की तथा वर्तमान की सभी रूपी-अरूपी द्रव्यों की समस्त पर्यायों को सीधे आत्मा से प्रत्यक्ष जाना जाता है।

2. केवलज्ञान प्रकट होने के बाद वापस नहीं जाता है। सिद्धावस्था में भी अनन्तानन्त काल तक, सदाकाल बना रहता है।
3. केवलज्ञान शाश्वत तथा अप्रतिपाती होता है। मति आदि चार ज्ञानों के बिना यह अकेला ही परिपूर्ण रूप में होता है।
4. जितना केवली भगवन्त जानते हैं, उसका अनन्तवाँ भाग ही वे प्रकट कर पाते हैं, क्योंकि पदार्थ अनन्त होते हैं, आयु सीमित होती है तथा वाणी क्रम से ही प्रवृत्त हो पाती है।
5. तीर्थंकर, सामान्य केवली केवल ज्ञान द्वारा पदार्थों को जानकर जो कथन करने योग्य होता है, उन्हें वचनयोग की सहायता से प्रकट करते हैं। देशना रूप वह वचनयोग श्रोताओं के लिए द्रव्यश्रुत होता है। क्योंकि उस देशना रूप द्रव्यश्रुत को सुनकर श्रोतागण अपने भीतर में भाव श्रुत उत्पन्न कर लेते हैं। सामान्य केवलियों, तीर्थंकरों का वचनयोग श्रोताओं के भाव श्रुत की उत्पत्ति में सहायक बनने के कारण उसे द्रव्य श्रुत रूप माना जाता है।
6. केवलज्ञान के साथ में भावश्रुत नहीं होता है। क्योंकि भाव श्रुत, श्रुत ज्ञान रूप है। मति, श्रुत आदि चार ज्ञान क्षायोपशमिक हैं, जबकि केवलज्ञान क्षायिक ज्ञान है।
7. केवल ज्ञान असहाय, अकेला, अखण्ड, अक्षय, अनन्त, अविकल्पित तथा अनावरित ज्ञान है। रूपी-अरूपी, सूक्ष्म-बादर सभी द्रव्यों एवं उनकी सभी पर्यायों को प्रत्यक्ष जानने वाला होता है।
8. सर्वक्षेत्र अर्थात् सम्पूर्ण लोकाकाश तथा अलोकाकाश में रहे हुए समस्त पदार्थों को उनकी

त्रैकालिक अनन्त पर्यायों को केवलज्ञान से जाना जाता है।

9. सर्वभाव अर्थात् गुरु, लघु, गुरुलघु तथा अगुरुलघु इन सब पर्यायों को जानने वाला केवलज्ञान होता है।
10. केवलज्ञान तीर्थ और अतीर्थ दोनों अवस्थाओं में प्राप्त हो सकता है।
11. केवलज्ञान स्वलिङ्ग, अन्यलिङ्ग तथा गृहस्थलिङ्ग में से किसी भी लिङ्ग में रहते हो सकता है, किन्तु भावों में स्वलिङ्ग-रत्नत्रय आराधन अनिवार्य है। केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् सामान्य केवलियों की यदि लम्बी आयु शेष है तो अन्यलिङ्ग, गृहस्थलिङ्ग वाले भी स्वलिङ्ग (जैन साधु का वेश) धारण कर लेते हैं।
12. केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् कोई भी देवता उनका संहरण नहीं कर सकते हैं।
13. केवलज्ञान के धारक तीर्थंकर भगवान एवं सामान्य केवली महाविदेह क्षेत्र में सदाकाल मिलते हैं।
14. केवलज्ञान में परिणाम वर्धमान तथा अवस्थित ये दो मिलते हैं। हीयमान परिणाम नहीं होता है। तेरहवें गुणस्थान में अन्तर्मुहूर्त्त आयु शेष रहते तथा चौदहवें गुणस्थान में वर्धमान परिणाम होते हैं। तेरहवें गुणस्थान में यदि अधिक आयु हो तो उत्कृष्ट देशोन क्रोड़ पूर्व तक अवस्थित परिणाम ही रहते हैं।
15. केवलज्ञान के रहते तेरहवें गुणस्थान में किसी-किसी के अन्तर्मुहूर्त्त आयु शेष रहते केवली समुद्घात होती है, तीर्थंकरों के भी केवली समुद्घात हो सकती है। सब के होना अनिवार्य नहीं है।
16. केवल ज्ञानी तेरहवें गुणस्थान में महाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा पृथक्त्व करोड़ (2 से 9 करोड़) सदाकाल मिलते हैं। चौदहवें गुणस्थान वाले तो कभी मिलते हैं, कभी नहीं भी मिलते हैं। यदि मिले तो अधिकतम पृथक्त्व सौ तक मिल सकते हैं।
17. एक समय में एक साथ उत्कृष्ट 108 केवली नये बन सकते हैं। पूर्व प्रतिपन्न तो सिद्धों की अपेक्षा अनन्त हैं। केवलियों का जघन्य क्षेत्र लोक का असंख्यातवाँ भाग होता है और उत्कृष्ट क्षेत्र केवली समुद्घात की अपेक्षा से सम्पूर्ण लोक प्रमाण होता है।
18. केवली भगवन्तों का उपदेश छदमस्थों की तरह नहीं होता। छद्मस्थों द्वारा तो भाव श्रुत के आधार पर द्रव्यश्रुत रूप उपदेश दिया जाता है, किन्तु तीर्थंकर, केवली भगवन्त मन में सोचकर या चिन्तन करके नहीं बोलते। उनके भाव मन नहीं होता। तीर्थंकर जो उपदेश देते हैं, वह तो तीर्थंकर नाम कर्म के उदय के कारण होने वाला वचनयोग (वचनात्मक प्रवृत्ति) ही है। कहा भी है कि सभी जीवों की दया, रक्षा एवं कल्याण की भावना से ओतप्रोत होने से तीर्थंकर भगवान उपदेश (देशना) फरमाते हैं।
19. केवल ज्ञान से सम्बन्धित केवल ज्ञानावरणीय ऐसी कर्म प्रकृति है, जिसका पहले से लेकर दसवें गुणस्थान तक जब तक बन्ध होता है, तब तक सर्वघाती रूप ही बन्ध होता है। उदय भी पहले से बारहवें गुणस्थान तक जब तक रहता है, तब तक सर्वघाती रूप ही उदय रहता है। दूसरे शब्दों में यह एक ऐसी कर्म प्रकृति है जिसका कभी क्षयोपशम होता ही नहीं है।
20. केवलज्ञान की ऐसी विशेषता है कि इसके प्रकट होते ही संसार की समस्त लिपियाँ, बोलियाँ, भाषाएँ, कलाएँ, विद्याएँ, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि केवलज्ञान में स्पष्ट झलकने लग जाते हैं, केवली के ज्ञान से कुछ भी छुपा नहीं रहता है।
21. उत्कृष्ट श्रुतज्ञानी चौदह पूर्वों के ज्ञान से, दृष्टिवाद के ज्ञान से, सम्पूर्ण द्वादशाङ्गी के ज्ञान से जितना जानते हैं, उससे अनन्तगुणा केवलज्ञानी केवलज्ञान के द्वारा जानते हैं। उत्कृष्ट श्रुतज्ञानी अथवा चार

ज्ञान के धारक को तो उपयोग लगाना (सोचना-विचारना) पड़ता है तब वस्तु तत्त्व का विशद एवं स्पष्ट ज्ञान होता है, किन्तु केवलज्ञान में तो बिना उपयोग, बिना सोचे, बिना विचारे सब कुछ प्रत्यक्ष, स्पष्ट एवं परिपूर्ण जानने में आता है।

22. केवलज्ञान से जानने को हस्तामलकवत् शब्द के द्वारा भी बतलाया जाता है। जिसका अर्थ है-हथैली में रखे हुए आँवले को जैसे हम प्रत्यक्ष जानते हैं, उसी प्रकार केवल ज्ञान से सब कुछ पदार्थों को प्रत्यक्ष जान लेते हैं। हस्तामलकवत् का दूसरा अर्थ करते हैं कि-हथैली में रहे हुए निर्मल जल के समान। जिस प्रकार हथैली में रहे हुए निर्मल जल को तथा हथैली की रेखाओं आदि को हम प्रत्यक्ष जान लेते हैं, ठीक इसी प्रकार केवलज्ञान से सम्पूर्ण द्रव्यों की सम्पूर्ण पर्यायों को एक साथ सीधे आत्मा से प्रत्यक्ष जान लेते हैं।

जिज्ञासा- केवल ज्ञानावरणीय को सर्वघाती क्यों माना जाता है?

समाधान- क्योंकि जो पदार्थ, जो विषय मात्र केवलज्ञान से ही जाने जा सकते हैं, अन्य ज्ञानों से नहीं जाने जा सकते उनके जानने में यह केवलज्ञानावरणीय कर्म पूरी तरह बाधक बनता है। जैसे अत्यन्त सूक्ष्म एवं अरूपी पदार्थ केवलज्ञान से ही प्रत्यक्ष जान सकते हैं, उन्हें जानने में पूरी तरह से बाधक बनने के कारण केवलज्ञानावरणीय को सर्वघाती माना जाता है। दूसरे शब्दों में जो अपने से सम्बन्धित विषय को (जानने के गुण का) पूरी तरह से घात करे, वह सर्वघाती कहलाता है।

जिज्ञासा- केवली भगवन्तों का उपयोग कितने समय में बदलता रहता है?

समाधान- केवली भगवन्तों का उपयोग प्रतिसमय बदलना माना जाता है। एक समय केवलज्ञान में उपयोग रहता है तो दूसरे समय में केवल दर्शन में उपयोग रहता है। यही क्रम चलता रहता है। यहाँ एक बात विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि केवलज्ञान-केवल दर्शन का गुण तो केवलियों में, तीर्थंकरों में, सिद्ध भगवन्तों में सदाकाल शाश्वत ही रहता है, किन्तु उनका उपयोग अर्थात् आत्मा की जानने देखने रूप पर्याय प्रतिसमय बदलती रहती है। भगवती सूत्र 28/8 में ज्ञान को साकार तथा दर्शन को अनाकार मानते हुए इनके एक साथ (युगपत्) होने का निषेध किया गया है।

जिज्ञासा- क्या अनन्त केवलियों के केवलज्ञान से जानने में अन्तर होता है?

समाधान- चूँकि केवल ज्ञान क्षायिक ज्ञान है, सम्पूर्ण ज्ञानावरणीय कर्म, सम्पूर्ण घाती कर्मों के क्षय होने से प्रकट होता है, इसलिए वह अनन्त जीवों में भी एक समान ही प्रकट होता है। भेद-भिन्नता तथा अन्तर तो क्षायोपशमिक ज्ञान में होते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि अनन्त काल पहले जिन्हें केवलज्ञान हुआ, आज जिन्हें महाविदेह आदि में केवलज्ञान हो रहा है तथा भविष्य में अनन्तकाल बाद भी जिन्हें केवलज्ञान प्रकट होगा, उन सभी तीनों काल के केवलियों का केवल ज्ञान पूर्णतः एक समान ही होता है। उनके जानने में कोई अन्तर नहीं होता है। हाँ, इतना अवश्य है उनके देशना देने में, उपदेश फरमाने में शब्दों की दृष्टि से, क्षेत्र, व्यक्ति, वस्तु, अध्ययन, वर्ग, शतक, पद आदि के कथन में अन्तर हो सकता है, परन्तु मौलिक सिद्धान्त, सार एवं निष्कर्षों में भाव की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं होता है।

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

ध्यान

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

❀ "मैं कौन हूँ" का ध्यान हो, निज का निज में अवधान हो। साधक प्रज्ञावान हो, तुम स्वयं भगवान हो।।

-संकलनकर्त्ता-श्री धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 52
ISSN 2249-2011

अभिवन्दन

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने की भावी आचार्य की घोषणा
महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. होंगे भावी आचार्य

जिनशासन गौरव, आगम मर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने संवत्सरी के पावन प्रसङ्ग पर दिनांक 11 सितम्बर, 2021 को अपराह्न में वाचनी के समय क्षमा एवं सहनशीलता पर मंगल उद्बोधन फरमाते हुए रत्नसंघ के भावी आचार्य की घोषणा की–निगोद से लेकर निरञ्जन बनने का मार्ग तीर्थंकर भगवान ने क्षमा एवं सहनशीलता को बताया है। .....सहन करके ही निगोद से निरञ्जन बना जा सकता है। इस मार्ग पर चलने वाला पट्टावली में गाया जाता है। जो पट्टावली आपके सामने आ रही है, वह भी समता से सहन करने वालों की है–इसी क्रम में, मैं चतुर्विध संघ के सामने कह रहा हूँ कि **रत्नसंघ का भविष्य में सञ्चालन (भावी आचार्य) महेन्द्र मुनिजी करेंगे।** यह चतुर्विध संघ को आज संवत्सरी महापर्व पर सूचना कर रहा हूँ। किसलिए कर रहा हूँ–यह जगह (आचार्य पद) माला पहनने की नहीं, यह प्रशंसा के गीत सुनने की नहीं। यह सहन करने की जगह है, घर का बड़ा आदमी सहन नहीं करेगा तो घर नहीं चल पायेगा। एक भोला है, एक कमजोर है, एक होशियार है, एक मन्दबुद्धि है, आदि–आदि.....। माँ–बाप सबको लेकर नहीं चलें, सहन करना छोड़ दें तो घर भी नहीं चलेगा। ऐसे ही समाज भी नहीं चलेगा। संघ भी नहीं चलेगा। सहनशक्ति बढ़ाने हेतु सूचना कर रहा हूँ– **''रत्नसंघ का भविष्य में सञ्चालन (भावी आचार्य) महेन्द्रमुनिजी करेंगे– सम्भालेंगे''** सूचित रहे।

परमश्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा व्यक्त उद्गार–पूज्य गुरुदेव के उद्घोषित वचनों का श्रवण कर, भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने भावविह्वल अवस्था में कृतज्ञ होकर फरमाया–पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती ने मुझे संयम प्रदान कर, संसार का भार कम किया था और आपश्री ने मुझ कमजोर हृदय वाले पर इस गौरवशाली संघ का भार वहन करने का उत्तरदायित्व दिया है। यह आपकी अनन्त–अनन्त कृपा है। आपके जयवन्त शासन में आप जो भी आज्ञा, आदेश, निर्देश देंगे, उसकी पालना करने में, मैं कटिबद्ध रहूँगा। संघ का संरक्षण, संवर्द्धन आपश्री के निर्देशन में होता रहे और मैं आपकी आज्ञा–आराधना करता रहूँ। आपकी कृपादृष्टि का वर्षण सदैव की भाँति होता रहे।

12 सितम्बर को प्रवचन में सन्त-सतियों के भावपूर्ण उद्गार एवं भावी आचार्य के मनोभाव

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के उद्गार– ''नमो आयरियाणं'' आचार्य भगवन्तों को नमस्कार करने के पश्चात्।

परमार्थ के प्रकाश से प्रकाशित होता है,
गुरुदेव जीवन आपका।
पर पदार्थ के प्रभाव से मुक्त है,
गुरुदेव मनन आपका।।
चिन्मयता की चाँदनी में चलकर,
चमकता है गुरुदेव! चिन्तन आपका।
गुण-गौरव की गरिमा से गुञ्जित है,
गुरुदेव गणिपद आपका।।

अभिनन्दन एवं अभिवन्दन के इन पावन क्षणों में अध्यात्मयोगी, आगम–अध्येता पूज्य आचार्य भगवन्त

के पावन पादारविन्दों में अपनी भावनाओं के अक्षत अर्पित करने का सौभाग्य उपलब्ध होने पर मानस तरङ्गायित हो सहसा इस सत्य को स्वीकार कर रहा है कि गुरुदेव आप महान् हैं। आपका निर्णय महान् है। गुरुदेव! आपने जिस कुशलता, दक्षता और शालीनता से निर्णय फरमाया है वह हमारी सोच से परे था, हर समय सेवा में रहने वाले छोटे सन्तों को भी आभास तक नहीं था। इस प्रकार के निर्णय से यह भी निश्चित हो गया कि जिनशासन में रत्नसंघ कितना महान् है। हमने तो आज तक इतिहास में आँखों से पढ़ा है, कानों से श्रवण किया है कि पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. एवं पूज्य श्री दुर्गादासजी म.सा. की पद के प्रति कितनी निस्पृहता थी कि 24 वर्ष के लम्बे अन्तराल तक दोनों पूज्य एक-दूसरे को आचार्य मानते रहे, आचार्य कहते रहे, परन्तु गुरुदेव ने तो उस स्वर्णिम इतिहास में और चार चाँद लगा दिये हैं-स्वयं आचार्यपद पर प्रतिष्ठित रहते हुए पद के प्रति निर्लेपता, निर्मोहता, निसङ्गता का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने श्रीमुख से भावी व्यवस्था का निर्णय फरमाया। यह निर्णय संघ के लिए हर्ष का विषय है तो गुरुदेव के गणिपद की गौरव-गरिमा को जिनशासन के गगन को गुञ्जायमान करने वाला प्रसङ्ग है। भाग्यशाली रहे हैं वे लोग जिन्होंने कल का नज़ारा स्वयं की आँखों से देखा। भाग्यशाली रहे हैं वे लोग जिन्होंने गुरुदेव को अपने श्रीमुख से अपने संघ की बागड़ोर को सम्भालने की घोषणा करते सुना।

श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. जिनका मेरे जीवन पर अगणित उपकार है, अनन्त उपकार है, आपके माध्यम से ही मैंने गुरुदेव को पाया है। गुरुदेव, जिनका जीवन विशाल है, अनुकम्पा विशाल है, कृपा विशाल है और संघ की सारणा, वारणा, धारणा और विचारणा विशाल है, ऐसे गुरुदेव को पाने में मेरी पहली सीढ़ी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ही रहे हैं। मैं इस प्रसङ्ग पर यह कहना चाहता हूँ-श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. से कि आपके साथ सचेतन अतीत है गुरु हस्ती का शासनकाल। आपने देखा है आपके साथ प्रभावी वर्तमान है, गुरु हीरा ने अपने पुण्य प्रभाव और अतिशय तप-जप के तेज के साथ संघर्षों की शृङ्खला में भी शासन की दीप्ति को दिग्दिगन्त में फैलाया है और आपके साथ है उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ जो आपके उज्ज्वल, उन्नत, ऊर्ध्वमुखी शासन की गति-प्रगति में सहायक सिद्ध होंगी। हम सभी आपके साथ हैं, भले ही चातुर्मास के दौरान सभी सन्त-सती यहाँ उपस्थित नहीं हैं, पर मैं सभी सन्तों को यहाँ याद करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ-आपके आचार्य रूपी शरीर के हार्ट (हृदय) हैं-पूज्य गुरुदेव। आपके हार्ट में गुरुदेव विराजे हुए हैं तो गुरुदेव के हार्ट में हमेशा-हमेशा के लिए आप विराजमान हो गये हैं। गुरुदेव के कल के (संवत्सरी) निर्णय से यह बात सत्य सिद्ध हो गई-वह शिष्य भाग्यशाली होता है जिस शिष्य के दिल में गुरु विराजते हैं, मगर उससे भी बढ़कर वह शिष्य परम भाग्यशाली, सौभाग्यशाली होता है जिस गुरु के दिल में शिष्य स्थान पाता है। आपने आपकी सेवा और समर्पणशीलता से गुरुदेव का दिल जीत लिया, इसीलिए गुरुदेव हार्ट के रूप में आपके साथ और आपके भीतर हमेशा-हमेशा रहेंगे।

आपके आचार्य रूपी शरीर में मुख बनेंगे-श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.। वे मधुरव्याख्यानी हैं उन्हें बोलना अच्छे से आता है, उन्हें तोड़ निकालना अच्छे से आता है तो जोड़ना भी अच्छे से आता है। यह सोच रहे होंगे तोड़ निकालना कैसे? तो संघ में, समाज में आई हुई समस्या का तोड़ निकालना अच्छे से आता है तो साथ ही संघ में संस्कारों से, सद्गुणों से जोड़ना उन्हें बखूबी आता है अर्थात् इस दृष्टि से उनमें दोनों कलाएँ मौजूद हैं। आप भी उनकी इन दोनों कलाओं का उपयोग कर विकृतियों को विदाकर संस्कृति को सदा-सदा के लिए जीवन्त एवं प्राणवन्त बनायेंगे।

आपके आचार्य रूपी शरीर की नाक हैं-श्रद्धेय श्री नन्दिषेणमुनिजी म.सा.। मैंने पिछले कुछ सालों में उनकी सेवा में रहते हुए बहुत नज़दीक से देखा है कि श्रद्धेय श्री नन्दिषेणमुनिजी म.सा. की घ्राणेन्द्रिय तेज है एवं वे

नासिका की तरह संघ की शोभा को बढ़ाने वाले सेवाभावी सन्त हैं।

आपके आचार्य रूपी शरीर के मस्तक हैं–श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., जिनका दिमाग कम्प्यूटर की तरह चलता है। उनकी यादें उनकी बातें जबरदस्त हैं, उनकी शक्ति का, उनकी सोच का आप उपयोग शासन प्रभावना में बहुत अच्छे से कर पायेंगे। (इसी प्रकार मुनिश्री ने अपने प्रवचन में विभिन्न सन्तों एवं साध्वियों को भुजा, नयन, कान, हाथ, पेट, अंगुलि के रूप में सहयोगी बताया। अन्त में आपने फरमाया)

आपके दो चरण बनेंगे–इस संघ के सभी श्रावक और श्राविकाएँ, जो आपके एक आदेश, एक निर्देश, एक सन्देश, एक संकेत पर अपने हजारों लाखों क़दमों को बढ़ाकर संघ की आभा को बढ़ाने वाले बनेंगे।

आप सोच रहे होंगे–म.सा. ने खुद को अलग रखा, पर मैंने अलग नहीं रखा, मैं बनूँगा आपके चरणों की धूल। जैसे आपश्री ने पूज्य गुरुदेव की तन–मन से अहर्निश सेवा की, शायद उसका शतांश भी न कर सकूँ, पर मैं आपके साथ आपकी परछाई बनकर प्रतिक्षण–प्रतिपल सेवा कर अपने आपको धन्य बना सकूँ। इसी शुभ भावना के साथ.....।

श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. के उद्‌गार–पंच परमेष्ठी भगवान को भावपूर्वक वन्दन–नमन।

धर्मानुरागी सज्जनों! वीर प्रभु के जयवन्त शासन में पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी म.सा. ने इस महान् रत्नसंघ की नींव रखी थी। उन्हीं की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए आचार्यश्री गुमानचन्द्रजी म.सा. ने इस संघ के मान और गौरव को अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ाया। आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म.सा. ने रत्नत्रय की अभिवृद्धि हेतु क्रियोद्धार कर, रत्नसंघ की गौरव गरिमा का वर्धन किया था। आचार्य श्री हमीरमलजी म.सा. ने संघ में उत्कृष्ट भक्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर अपना जीवन गुरु–सेवा में अग्लान भाव से समर्पित कर दिया। इसके बाद आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. ने प्रवचन–प्रभावना के माध्यम से जनरञ्जन ही नहीं भवी जीवों की कुमति का निकन्दन भी किया, फिर आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. जो इस संघ में ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करने वाले महान् आचार्य हुए। इसी क्रम में जीवन–निर्माण के शिल्पकार आचार्यश्री शोभाचन्द्रजी म.सा. ने सेवा का आदर्श रख संघ की शोभा को बढ़ाया। इतिहास के निर्माता और रचयिता आचार्य श्री हस्ती ने इस संघ पर महान् उपकार किये तथा शासन की प्रभावना करते हुए गुरु हीरा के रूप में अनमोल रत्न प्रदान किया, जो पिछले 30 वर्ष से शासन की निरन्तर अभिवृद्धि कर रहे हैं। इसी क्रम में कल हमने देखा कि संघ की उन्नति, अभिवृद्धि तथा सुरक्षा हेतु सहनशीलता की प्रेरणा के साथ पूज्य गुरुदेव ने भविष्य का निर्णय फरमाते हुए पूज्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के सक्षम हाथों में संघ को सौंपा है। एक बात ध्यान रखना, जहाँ हमारी सोच समाप्त होती है–वहाँ पर गुरुदेव की सोच प्रारम्भ होती है। किसी को कल्पना भी नहीं थी कि ऐसा अभूतपूर्व निर्णय गुरुदेव संवत्सरी के दिन फरमायेंगे। पूज्य गुरुदेव दूरद्रष्टा हैं, हमारी दृष्टि बाहरी है–गुरुदेव की दृष्टि अन्तस्तल तक पहुँचने वाली है। गुरुदेव ने रहस्य को जानकर सोच समझकर संघ हित में निर्णय फरमाया है। आज भले ही सबको विस्मय हुआ हो, पर जब भविष्य देखेंगे–तब हम कहेंगे कि गुरुदेव की सोच कितनी महान् थी। इस परम्परा में सभी आचार्य 60 वर्ष की वय के पहले आचार्य बने हैं, परन्तु वय तेजस्विता में बाधक नहीं होती है– नीति कहती है–"**तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।**"

गुरु हस्ती की उम्र मात्र साढ़े पन्द्रह वर्ष थी, संघ में बड़ी वय वाले सन्तरत्न थे, पर गुरु शोभा ने योग्यता देख विश्वास के साथ गुरु हस्ती का आचार्य पद हेतु मनोनयन किया, जो भविष्य में महान् आचार्य हुए। गुरु शोभा की तरह ही आज गुरुदेव ने देखा, भले ही सड़सठ वर्ष की अवस्था है, परन्तु योग्यता विशिष्ट है, इस गहराई को जाना। परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के प्रसङ्ग अनेक हैं, जिनको मैं यथासमय कहता रहूँगा, गुण गाता रहूँगा। परन्तु अभी इतना ही कहूँगा कि गुरुदेव के

वरदहस्त एवं उनकी अनुकम्पा से ही मैं आज इस जीवन में आगे बढ़ा, साथ में पूज्य म.सा. का मुझ पर अनन्त उपकार है, वात्सल्यमय पिता और ममतामयी माता को छोड़कर निकला, परन्तु आपने इतना वात्सल्य एवं ममता दी कि जीवन में कभी उनकी कमी महसूस ही नहीं होने दी। आज मेरा कर्त्तव्य है-इन महापुरुषों ने मुझे बहुत दिया है, जीवन निर्माण किया है, आपके शासन और अनुशासन में रत्नत्रय की मैं अभिवृद्धि करता रहूँ। आपसे (श्रावक-श्राविकाओं से) निवेदन है कि बाहर की चर्चा और पञ्चायती को छोड़कर अपने जीवन में रत्नत्रय की प्रगति का आयाम प्रस्तुत करना है। अब हमें हमारे विकास का चिन्तन करना है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र के आधार पर ही संघ विकास के राजमार्ग पर आगे बढ़ सकता है। आपको जो दायित्व सौंपा है, उसको वहन करने में आप सक्षम हैं, मजबूत कन्धे वाला वृषभ मञ्ज़िल पर पहुँचता है। इसी प्रकार आपके कन्धे भी इस दायित्व को निर्वहन करने में सक्षम है। अन्त में हृदय के भावों के साथ कोटि-कोटि बधाई।

श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा गीतिका के माध्यम से उद्गार-

मन महेन्द्रमुनिसा के गुण गाये जा,
चरणों में शीश झुकाये जा।। टेर।।

दिन श्रावणसुदी 9 आया, माता सोहनी दिल आनन्द छाया।
पारसमल सा मन हर्षाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा.....।। 1।।
दिन वैशाख सुदी 14 आया, गुरु हस्ती से संयम पाया,
गुरु चरणों में रह ज्ञान पाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा.....।। 2।।
जोधपुर में ही जन्म पाया है, जोधपुर में ही संयम पाया है,
जोधपुर का गौरव बढ़ाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा.....।। 3।।
गुरु चरणों में श्रद्धा रखकर के गहरा, शास्त्र ज्ञान पाया है,
सरस वाणी से अमृत बरसाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा...।। 4।।
गुरु सेवा में सदा तत्पर रहते, सन्तों की सेवा मन से करते,
गुरु हीरा भक्त हनुमान कहाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा..।। 5।।
तपस्या भी आप हमेशा करते रहते, प्रमाद कभी नहीं करते,
अध्यवसायी पदवी पायेजा, मन महेन्द्रमुनिसा.....।। 6।।
दिन भादवा सुदी 5 आया, रत्नसंघ में आनन्द छाया,
भावी आचार्य पदवी पायेजा, मन महेन्द्रमुनिसा.....।। 7।।
चरणों में 'गुणवन्त' वन्दन करता, चेहरा देख मन खिल जाता,
सन्त-सतियों पर भी कृपा बरसाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा। 8।

व्याख्यात्री महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. के उद्गार-पंच परमेष्ठी को नमन, पूज्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्य श्री को भावपूर्ण वन्दन-नमन!

हमें आज बात ऐसे महापुरुष की करनी है, जो चाहे वर्तमान में संसार में है, मगर भविष्य में सिद्ध होंगे। कहा भी है- समर्पण से साधना का प्रारम्भ होता है और सिद्धत्व से साधना का अन्त होता है। ऐसी साधना-आराधना में अप्रमत्त बन आगे बढ़ने वाले, सेवा में तत्पर रहने वाले भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. जिनके जीवन में सहयोग की भावना भी अति सुन्दर रही हुई है।

स-यानी समर्पण दो प्रकार का-मिलना और घुलना। दूध में पानी मिलाने पर अग्नि के ताप से पानी भाप बन जाता है यानी दूध से अलग हो जाता है। मगर दूध में शक्कर के घुल जाने पर किसी अग्नि के ताप की ताकत नहीं कि शक्कर से दूध को अलग कर सके। भावी आचार्यप्रवर का गुरु हीरा के प्रति जो समर्पण है- वह मिलने वाला नहीं, घुलने वाला है।

ह- यानी हृदयवान होना। आपकी करुणा, अनुकम्पा, दु:खी को देख द्रवित हो जाना आदि आपके सम्यक्त्वी होने का गारण्टी कार्ड है।

यो-यानी योजनाबद्ध कार्य। आपकी दिनचर्या को देखकर समझ आता है कि सब कुछ करते हुए भी आपका स्वाध्याय क्रम निरन्तर गतिमान रहता है।

ग-गर्व रहित होना। आपश्री ने प्रवचन में फरमाया कि जिन्हें आत्मशुद्धि करनी है-वे गुरुदेव के पास प्रायश्चित्त लेकर शुद्धीकरण कर सकते हैं। भगवन्त के द्वारा यह कार्य आपश्री को सौंपा हुआ था, लेकिन आपको उसका कोई अहंकार नहीं। कल ही हमने देखा भगवन्त के द्वारा भावी आचार्य की घोषणा किये जाने पर श्रद्धेय महाराज साहब (महान् अध्यवसायी, भावी आचार्यश्री) ने बहुत सुन्दर भाव फरमाये।

यह कब होता है-जब भीतर में अहंकार का अंश भी न हो और जीवन विनय से पूरित हो।

मन ने हृदय से एक प्रश्न किया- कौन होते हैं आचार्य? तो हृदय ने बड़ी श्रद्धा से, बड़ी आस्था से कहा- सुनो मेरे मन! कौन होते हैं आचार्य!

1. जिनके जीवन में शास्त्र स्वयं व्याख्या पा जाये।
2. सिद्धान्त सत्य बनकर उभर आये।
3. पूर्व-अपूर्व श्रुत-सा नज़र आये।
4. ज्ञान-विज्ञान बनकर आत्मज्ञान में समा जाये-वे होते हैं आचार्य।

हम अनन्त पुण्यवान हैं कि- हमें आज से एक नहीं-दो आचार्यों के दर्शन-वन्दन का लाभ मिलेगा। बस अन्त में, मैं यही कहना चाहूँगी कि हम क्या गायें आपश्री की गुणगाथा, क्योंकि हर आगम की गाथा ने, गाई है यशोगाथा आपकी।

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का उद्बोधन

जगत् को परम इष्ट और परम मंगल, पंच परमेष्ठी भगवन्तों को भावपूर्वक वन्दन-नमन। जीवन के अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त को वन्दन-नमन। धर्मानुरागी बन्धुओं! मेरा मन प्रश्न कर रहा है, आज मेरा बोलने का दिन है या चुप रहने का? मुखर होने का या मौन रहने का? आज का दिन तो स्व से स्व का चिन्तन करने का दिन है, इस जयवन्त शासन में अनुशासित रहने का दिन है।

बोलना क्यों नहीं? क्योंकि मैं जो कल था, वही आज हूँ। **गुरुदेव के शासन में कल भी मैं मुनि पर्याय में था, आज भी हूँ और कल भी मुनि पर्याय में रहूँगा। गुरुदेव ने जो संघ की व्यवस्था की है-वह भविष्य की है, वर्तमान में सोचने की आवश्यकता नहीं है।** सभी व्यवस्थाओं को आपके (गुरुदेव के) चरणों में रहकर आपके आदेश-निर्देश के अनुसार ही करूँगा। यह पद गुरुदेव ने किस सोच और समझ से दिया, यह मुझे मालूम नहीं, मैं तो मुनि पर्याय में ही जीना चाहता हूँ। चतुर्विध संघ मुझे सहयोग करे, यह मैं इसलिए नहीं बोलना चाहता हूँ क्योंकि चतुर्विध संघ आज मुझे अलग दृष्टि से, अलग स्वरूप में, मुझे देख रहा है। गुरुदेव ने संघ की व्यवस्था दी है, उसका मैं समादर करता हूँ, लेकिन गुरुदेव के जयवन्त शासन में मेरे लिए अलंकार आदि का उच्चारण, उपयोग न करें। गुरु आज्ञा के आगे मैं न कुछ कहना चाहता हूँ, न बोलना चाहता हूँ। मैंने गुरुदेव की आज्ञा का पालन आगम की उक्ति '**आणाए मामगं धम्मं**' के साथ अपना कर्त्तव्य समझ कर किया है, आपके शासन की दीप्ति हेतु मैं कटिबद्ध हूँ, लेकिन वर्तमान में व्यवस्था हेतु आपसे निवेदन है कि मुझे मुक्त रखें, मन की चाहना भी नहीं है। मैं तो आज तक आपकी सेवा में रहा, मुझे तो एक भी स्वतन्त्र चातुर्मास का अनुभव नहीं है, फिर भी गुरुदेव ने मुझे जो चार-संघ की जिम्मेदारी दी है-यह गुरुदेव का महान् उपकार है।

बोलना आज मैं इसलिए चाहता हूँ क्योंकि आज मुझे उपकारी के उपकारों की बात कहनी है- भले ही आज गुरुदेव के चौविहार उपवास चल रहा है, लेकिन गुरुदेव महान् हैं। आपने संघ अभ्युदय हेतु एक-दो घण्टे का समय ही नहीं, पूरी 83 वर्ष की उम्र में 59 वर्ष की दीक्षा पर्याय में अपना सर्वस्व संघ हेतु समर्पित किया है, कर रहे हैं एवं करते रहेंगे। आपने आज तक संघ को सब कुछ दिया है, दे रहे हैं, देते रहेंगे। बोलना आज मुझे उपकारियों के उपकार के लिए है। मुझ पर आज मेरे सांसारिक परिवार वालों का अनन्त-अनन्त उपकार है। मेरे माता-पिता, भाई-भाभियों का अनन्त उपकार है, मैं आज अपने बुआजी को भी नहीं भूलूँगा, जिनका मेरी दीक्षा में, अन्तर से, बाहर से खूब सहयोग और उपकार रहा। गुरुचरणों में पिता-पारस और माता-सोहनी को छोड़कर आया, पर यहाँ पर मुझे पिता जैसा वात्सल्य गुरु हस्ती से एवं माता जैसी ममता गुरु हीरा से प्राप्त हुई। मैं भाग्यशाली हूँ, मुझे दोनों गुरुदेवों का प्यार और दुलार प्राप्त हुआ। मुझे अनेक बातें कहनी है-वे याद आ रही हैं, जिन्हें मैं समय-समय पर कहता रहूँगा। गुरुदेव ने मेरा

जीवन गढ़ा तथा सँवारा है। इस अल्पज्ञ को आज महान् बनाया है, गुरुदेव ने अपने अनन्त पुरुषार्थ से मुझे तैयार किया है। भव-भव में भी, मैं इनके उपकारों से उऋण नहीं हो सकता हूँ। इन महापुरुषों के लिए जितना कहा जाए, उतना कम है। गुरु का उपकार है। जो आज सभी सन्त-सतीवृन्द और संघ बधाई दे रहे हैं, परन्तु बधाई से पेट भरने वाला नहीं है। जिस उत्साह उमंग से आप बधाई दे रहे हैं, उसी बधाई की तरह उत्साहपूर्वक सहयोग करें। आज तक संघ को सहयोग ने वर्धापित किया है, वैसे ही जयवन्त शासन को सहयोग की भावना से बढ़ाते रहेंगे तो ही बधाई स्वीकार है।

हमारे गुरुदेव सागर से भी अधिक गम्भीर हैं, गहन हैं, देखा कल का आपने नज़ारा, सभी सन्त-सतीवृन्द दिन-रात साथ में हैं, फिर भी किसी को पता नहीं कि गुरुदेव ऐसी घोषणा करेंगे। नाम किसी का भी हो, संघ में साथ सभी का होता है। कहते हैं-

''किसी का नाम होता है, किसी का काम होता है।
जलती है बाती, पर दीपक का नाम होता है।।''

बिना सन्तों के सहयोग के सेवा भी नहीं हो सकती है, हमारे देवेन्द्रमुनिसा चौबीस घण्टे ही बॉडीगार्ड की तरह सेवा में तत्पर रहते हैं, पर इनको भी और किसी को भी पता नहीं था कि गुरुदेव इस तरह निर्णय करने वाले हैं। **मुझे चार-पाँच दिन पूर्व इतिहास के कई उदाहरणों द्वारा बताया कि किस प्रकार अपने आपको गौण करते हुए, संघ की दीप्ति को बढ़ाना, भूतकाल की घटनाओं को बताते हुए, भविष्य में किस प्रकार संघ को सक्षम, समृद्ध बनाने हेतु प्रेरणा प्रदान की है- इन बातों से मुझे जरूर थोड़ा आभास हुआ कि गुरुदेव द्वारा कोई निर्णय होना है, पर इतना जल्दी और इस दिन होगा-यह मुझे भी पता नहीं था।** अभी चातुर्मासकाल है, वरिष्ठ सन्तरत्न श्री गौतममुनिजी म. सा., श्री नन्दीषेणमुनिजी म. सा., श्री प्रमोदमुनिजी म. सा. दूरस्थ विराज रहे हैं। साध्वीप्रमुखा जी तथा बड़ी साध्वियाँ भी नहीं हैं। सहज में पर्वाधिराज पर्युषण की साधना-आराधना हेतु आए हुए श्रद्धालुओं की धर्मसभा में घोषणा होगी, किसी को पता नहीं था और गुरुदेव ने इस घोषणा से सबको आश्चर्य में डाल दिया। गुरुदेव ने यह घोषणा संघ के भविष्य की सुरक्षा हेतु की है, परन्तु वर्तमान हेतु यह घोषणा नहीं है। आप मुझे बाँधें नहीं, सेवा कार्य करने से व्यक्ति की महिमा घटती नहीं है। सेवा तो एक आदर्श है, चौदह पूर्वधारी गौतमस्वामी भी बेले-बेले की तपस्या कर, स्वयं गोचरी हेतु पधारते थे, तो मैं मुनि-पर्याय में जाऊँ-इसमें कोई बाधा नहीं है। **वर्तमान का यह आदेश भावी हेतु है-** नई कोई व्यवस्था स्वीकार नहीं है। बैठने आदि की व्यवस्था पूर्ववत् ही रहेगी। पट्टे पर चौकी लगाकर बैठने से नहीं, गुरु-आज्ञा, आराधना और सहयोग से ही यह रत्नसंघ की गौरवशाली परम्परा आगे बढ़ी है। आप सहकार में चरणों की धूल के बजाय फूल बनें।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. 65 वर्ष की वय में गोचरी जा सकते हैं- मैं क्यों नहीं? हमारे गुरुदेव का आदर्श रहा है, भावी की व्यवस्था भले ही मुझे दी है, पर स्वयं इस पद पर रहते हुए भी छोटे मुनि चाहे वह योगेशमुनिजी हो, मनीषमुनिजी हों, विनम्रमुनिजी या रवीन्द्रमुनिजी, या चाहे वृद्ध सन्त हों, बाल सन्त हों सेवा का अवसर आवे तो तैयार रहते हैं, **सेवा से कोई छोटा नहीं होता, पद की गरिमा कम नहीं होती।** गुरु हस्ती 66 वर्ष की उम्र में भी सेवा के हर कार्य में तत्पर रहते थे। सोईन्तरा गाँव की बात है-विहार में तीन सन्त ही थे, आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सिर पर चोट थी, उपचार चालू था, आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के साथ शीतलमुनिजी म.सा. थे, भयंकर गर्मी का समय था, नौ मील का विहार कर सोईन्तरा पहुँचे, शीतलमुनिसा गोचरी में पधार गये, मैं पानी लेकर आया। उसमें जीवाणी निकल गयी, मुझे जीवाणी निकालना आता नहीं था, मैं तो घर में कुँवारे पद पर था तथा यहाँ भी छोटा था। प्यास भी भयंकर लग रही थी, मन में चिन्तन था, शीतलमुनिजी म.सा. कब

पधारेंगे, लेकिन गुरुदेव स्वयं (गुरु हस्ती) उठकर आये, जीवाणी भी निकाली और कृपा करके विधि भी बतायी; फिर पानी वापरने से कण्ठ तृप्त हुआ, ऐसे ही गोविन्दगढ़ की बात है-अजमेर से पहले चार सन्त थे, मैं नया था, छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा. थे। विहार चल रहा था। गुरुदेव आगे पधार गये, मैं साथ में था। दो सन्त पीछे आ रहे थे। पहुँचने के बाद गुरुदेव स्वयं पात्र लेकर 67 वर्ष की उम्र में पानी लाने को तत्पर थे। मैं उस आदर्श परम्परा में पला हूँ। मैं लाने हेतु तैयार था, परन्तु गुरुदेव ने कहा तू थका हुआ है, तुझे घरों की जानकारी नहीं है। मेरे बार-बार आग्रह करने पर पानी लाने हेतु, घरों की जानकारी प्रदान कर महती कृपा की।

श्रद्धेय दयामुनिजी म.सा., श्रद्धेय कैलाशमुनिजी म.सा. (जिनका स्वर्गगमन हो गया), ज्ञानमुनिजी अस्वस्थ हो गये। आचार्य पद पर होते हुए भी आँगन पर बैठकर (गुरु हीरा) स्वयं सेवा में लग गये। यह है आचार्य पद पर रहकर सेवा का आदर्श, कभी जरूरत पड़ने पर स्वयं प्रतिलेखना आदि सेवा कार्य भी कर देते। अभी-अभी पर्युषण से पूर्व रवीन्द्रमुनिजी का लोच था, जिनका लोच बहुत कठिन है, परन्तु इनका धैर्य जबरदस्त है, तीन घण्टे लगते हैं, हर बार दो सन्तों के सहयोग से होता है, यहाँ पर अभी सन्तों की कमी है, मनीषमुनिजी व्याख्यान में पधारे, हालाँकि महासतियाँजी विराज रही हैं, अकेले महासतियाँजी भी एक घण्टे व्याख्यान देने हेतु तत्पर हैं, परन्तु आचार्य श्री विराज रहे हैं, गुरु सभा में वे प्रारम्भ में व्याख्यान दें-यह उचित नहीं है। मनीषमुनिजी ने भी कहा-मैं वापस आकर सहयोग कर दूँगा, परन्तु 83 वर्ष की उम्र में उतरने-चढ़ने में श्वास भरता है, फिर भी गुरुदेव स्वयं ऊपर पधार गये, गुरुदेव के अचानक पधारने से हम आश्चर्य में पड़ गये। पृच्छा की-भगवन्! आप कैसे पधारे? गुरुदेव ने कहा भाई तुम सब इतनी सेवा करते हो-कुछ मैं भी तो करूँ, गुरुदेव के वचन सुनते ही मेरा कमजोर हृदय पिघल गया, गुरुदेव ने हाथ में राख ली और लोंच करने विराज गये। मैंने कहा अभी मनीषमुनिजी आ जायेंगे, परन्तु नहीं, इस उम्र में इस पद पर होते हुए भी हमारे गुरुदेव छोटे-छोटे कार्य करने में भी संकोच नहीं करते हैं। मैंने रवीन्द्रमुनिजी को कहा कि गुरुदेव के हाथ लग गये, तुम्हारा तो कल्याण हो गया। रवीन्द्रमुनिजी की दीक्षा के बाद पहली बार गुरुदेव के हाथों से लोंच कराने का मौका मिला। ऐसे सरल और महान् हैं हमारे गुरुदेव। इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि इन आदर्श महापुरुषों को देखते हुए मुझ पर प्रतिबन्ध उचित नहीं है। मुझे व्यवस्था संघ हेतु गुरुदेव ने भावी के लिये दी है, वह स्वीकार है, व्यवस्था में अब कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। चार वर्ष से बात चल रही है, मोफतराजसा ने भी मुझे निवेदन किया था, **मैंने कहा-मेरी एक प्रतिशत भी इच्छा नहीं है। गुरुदेव यह व्यवस्था किसी और को देवें। इस पद हेतु अनेक गुणी सन्त संघ में हैं। दीक्षा पर्याय में छोटों को भी गुरुदेव यह व्यवस्था दे सकते हैं, मेरे मन में रत्ती मात्र भी चिन्तन नहीं रहेगा,** सुमति बाबू ने कहा-यह सेवा का पुरस्कार मिला है, नहीं-मुझे तो हमेशा गुरुदेव के आदेश-निर्देश की पालना करते हुए सेवा में ही रहना है। गुरु हस्ती ने मुझे यह वचन फरमाया था कि तुम्हें-इनकी (आचार्य श्री हीरा की) सेवा में रहना है। मैं कितनी सेवा कर पाया या नहीं, यह बात अलग है। सेवा में रहने से ही लोगों में भ्रम था, लेकिन सेवा में रहने से ही पद मिलता तो पहले ही दे देते। मगर गुरुदेव हर बात का मन्थन करते हैं, सोचते हैं। गुरुदेव ने आगे का सोचते हुए- निर्णय फरमाया है। मन की इच्छा न होते हुए भी स्वीकार है, परन्तु निवेदन यही बारम्बार है **आपके जयवन्त शासन में मैं आचार्य नहीं, मुनि पर्याय में ही रहूँगा। आपकी कृपा का वर्षण सदा रहे, उत्तरदायित्व आपका ही है।** आपको ही सम्भालना है, आपकी सन्निधि में मेरी योग्यता का विकास हुआ है, आगे भी आपको ही करना है। आपके विराजते हुए मुझे न किसी बात का चिन्तन करना है, न चिन्ता करनी है। आपने आज तक बहुत दिया ही दिया है, सम्भाला ही

सम्भाला है, ऐसे ही सम्भालते रहें, आपके अनन्त उपकारों को याद करता रहूँ- बारम्बार गुरुदेव से यही निवेदन है कि आपका वरदहस्त बना रहे, छत्र-छाया बनी रहे। चतुर्विध संघ से क्षमायाचना, उपदेश में, आदेश में, निर्देश में सन्त-सतियों से भी पालना में, गोचरी, वाचनी में किसी का दिल दु:खा हो तो चतुर्विध संघ से क्षमायाचना करता हूँ।

-संकलनकर्त्ता-सुमतिचन्द मेहता, पीएड्सिटी

रत्नसंघ के भावी आचार्य महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का संक्षिप्त परिचय

महामन्दिर-जोधपुर में लोढ़ा परिवार में संघ-सेवी, सन्त-सेवी, सेवाभावी श्रावकरत्न वीरपिता श्री पारसमलजी लोढ़ा के घर-आङ्गन में सरल हृदया-सेवाभावी सुश्राविका वीरमाता श्रीमती सोहनकँवरजी लोढ़ा की रत्नकुक्षि से विक्रम सम्वत् 2011, श्रावण शुक्ला नवमी, रविवार, तदनुसार 08 अगस्त 1954 को जन्मे बालक ने पूर्वभव की पुण्यवानी से स्वस्थ तन, स्वस्थ मन तो पाया ही, परिपूर्ण इन्द्रियाँ और लम्बा आयुष्य भी प्राप्त किया।

लाड़-दुलार से पले बालक ने जोधपुर के जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट (स्नातक) तक का व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त किया तथा एम.कॉम के छात्र रहे। परिवार के संस्कारों से संस्कारित उस युवक ने धार्मिक अध्ययन में भी रुचि और भावना से काफी-कुछ सीखा। युवावस्था में धर्माचार्य-धर्मगुरु की सेवा-सन्निधि में ज्ञानाभ्यास करते-करते जब अध्यात्मयोगी-युगमनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का प्रेरक- प्रभावी जीवन देखा तो युवाहृदय में संयम की महत्ता का बोध जागृत हुआ। गुरु हस्ती की सन्निधि से प्रभावित युवाहृदय के मन-मस्तिष्क में दीक्षित होकर शासन-सेवा में लगने की पुरजोर भावना से उन्होंने माता-पिता एवं पारिवारिक-परिजनों से दीक्षा की आज्ञा-अनुमति तो ली ही, गुरुवर्य से सदा-सदा के लिए श्रीचरणों में रहने की बात भी कही। दीर्घद्रष्टा गुरु हस्ती ने विक्रम सम्वत् 2032 की वैशाख शुक्ला चतुर्दशी तदनुसार 24 मई, 1975 को सूर्यनगरी-जोधपुर में युवाहृदय को भागवती दीक्षा प्रदान कर संयमी-जीवन में प्रवेश करवाया।

स्व-पर कल्याण कामना से दीक्षित सन्तरत्न ने आचार्य भगवन्त से बोल-थोकड़ों एवं शास्त्रों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया। गुरु हस्ती ने मुनिश्री की योग्यता-क्षमता-पात्रता देखकर **'महान् अध्यवसायी'** जैसा गौरवशाली विशेषण प्रदान किया। गुरु हस्ती के स्वर्ग-गमन पश्चात् महान् अध्यवसायी मुनिश्री ने गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा की सेवा-सन्निधि और आज्ञा-अनुशासन में अपने-आपको समर्पित कर दिया। आचार्य श्री हीरा ने 'सरस व्याख्यानी' विशेषण प्रदान किया। संघ व्यवस्था में संघनायक के निर्देश-आदेश-संकेत को चरितार्थ कर रत्नसंघ में वर्तमान में ज्येष्ठ और महान् सन्तरत्न के रूप में जन-जन के मन में छा गये।

भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की साध्वाचार की अप्रमत्त, अन्तश्चेतना का बाहर-भीतर सक्रिय स्वरूप एवं सन्तुलन से सभी चिरपरिचित हैं जो कि धाय माँ के विरुद से उपमित हैं। आपश्री के साध्वाचार, साधना, आराधना, संघीय व्यवस्थाओं एवं दैनिक चर्या के हर कृत्य में विनय भाव, सेवाभावना से सतत सन्नद्धता के साथ प्रवचन, वाचनी, गोचरी आदि में अथक तत्पर रहते हैं। सभी सन्त-सतीवृन्द एवं श्रावक-श्राविका अर्थात् चतुर्विध संघ को सर्वोपरि मानकर स्वसाधना करते हुए स्व-पर कल्याणार्थ सजग सक्रियता प्रेरणा-पुरुषार्थ से सभी विस्मित होकर आनन्द एवं ऊर्जा की अनुभूति के साथ सश्रद्धा नतमस्तक होकर स्वात्मा को भावित करने की अभीप्सा से यथारुचि, यथाशक्य तप-त्याग, व्रत- प्रत्याख्यान, सामायिक-स्वाध्याय, जप आदि नियम ग्रहण करते हैं।

-नौरतनमल मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 60
ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (9)

श्री पी. शिखरमल सुराणा

33. यदि जीवन में लोकप्रिय होना हो, सफल होना हो, प्रगति के पथ पर अग्रसर होना हो ...तो सबसे ज्यादा 'आप' शब्द का.., उसके बाद 'हम' शब्द का.... और सबसे कम 'मैं' शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए। दूसरों को सम्मान देने से स्वयं को भी सम्मान प्राप्त होता है ...एक-दूसरे के प्रति विश्वास एवं सौहार्द बढ़ता है। इसी प्रकार, जब हम सबको साथ लेकर आगे बढ़ते हैं ...तो कठिन और दुष्कर कार्य भी बहुत आसानी से सम्पन्न हो जाते हैं। संगठित होने से शक्ति का सञ्चार होता है। 'मैं' शब्द बहुधा अभिमान तथा स्वयं ही श्रेय लेने का स्वार्थी एवं आत्मकेन्द्रित प्रयास है। प्रयास करें कि इसका उपयोग नहीं करना पड़े। यदि कभी करें भी, तो सिर्फ उसी समय...जब आपकी परिस्थितियाँ इसके लिये आपको विवश करें एवं अन्य कोई विकल्प उपलब्ध ही न हो।
34. खुशी अपने आप नहीं मिलती ... यह हमारे अपने कर्मों से ही प्राप्त होती है। सत्य तो यही है कि हमें दुःख भी कभी अपने आप नहीं मिलता। वह भी हमारे अपने कर्मों का ही प्रतिबिम्ब है। जीवन स्वयं हमारे कर्मों की एक सशक्त प्रतिध्वनि है। हमारे हरेक कर्म की एक तत्काल एवं निश्चित प्रतिक्रिया होती है....जो हमारे ऊपर अपना पूर्ण प्रभाव डालती है। यदि हम सकारात्मक कर्म करेंगे तो निश्चित रूप से हमारे मन और मस्तिष्क पर उसका सकारात्मक तथा प्रसन्न कर देने वाला प्रभाव होगा। सर्वत्र सुख, प्रसन्नता तथा खुशी की प्रतिध्वनि होगी। इसके विपरीत नकारात्मक दृष्टिकोण से कर्म करने पर ...उसका विपरीत प्रभाव स्वयं हम पर पड़ेगा और फिर हमारे मन एवं मस्तिष्क में दुःख, कष्ट और पीड़ा के अलावा कुछ नहीं रहेगा।
35. विश्वास की रक्षा अपने प्राणों से भी अधिक करनी चाहिए। हमारे प्रति सबके मन में गहन विश्वास ही हमारी प्राणवायु है ...और यह एकाएक उत्पन्न नहीं हो जाता। इसके लिए निरन्तर, सार्थक एवं स्वार्थरहित प्रयास करने पड़ते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण एवं विचार के साथ निरन्तर सत्य एवं नैतिकता के ...कठिन, परन्तु सम्भावित मार्ग पर चलना होता है। जब पूर्ण समाज हमारे प्रति पूरी तरह आश्वस्त हो जाता है ....तभी हमारी विश्वसनीयता सहज स्वीकार्य होती है। इतने परिश्रम और त्याग के द्वारा अर्जित की गई ...विश्वसनीयता की पूँजी सुरक्षित सम्भाल कर रखना हमारी अपनी ज़िम्मेदारी है ....और इसकी रक्षा हमें अपने प्राणों से भी अधिक करनी होगी। यदि हमने एक बार भी अपनी विश्वसनीयता को खो दिया....तो फिर इसको पुनः प्राप्त करना असम्भव तो नहीं ...तो आसान भी नहीं होगा।
36. अगर दिल ही साफ़ न हो तो, चमकता चेहरा किसी भी काम का नहीं। ऐसे चेहरे की तुलना एक ऐसे स्वर्ण-पात्र से की जा सकती है...जिसमें सिर्फ़ घातक विष भरा हो। चेहरे और शरीर का आकर्षण क्षणिक होता है....इसके विपरीत मन के बन्धन ...शरीर तथा चेहरे की सुन्दरता पर अथवा शरीर के रहने या न रहने पर निर्भर नहीं करते हैं। सत्य यही है कि सिर्फ सौन्दर्य से आकर्षित होकर उत्पन्न हुए रिश्ते सुन्दरता के नष्ट होते ही तत्काल नष्ट हो जाते हैं। अतः अपने मन तथा मस्तिष्क को आकर्षक, सरल, सहज, सुन्दर एवं सर्व स्वीकार्य बनायें। अन्ततः केवल आन्तरिक सौन्दर्य ही पूर्ण स्थायित्व के साथ आकर्षित कर सकता है।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य *(Book Review)*

Dr. Dharm Chand Jain

CHASTITY (From Lust to Love) Upādhyāya Amar Muni, **Publisher :** Jainsindia Trust, **Email :** admin@jainsindiatrust.com, 9884533399, 044-35220000, **Copies Available at :** (1) Veerayatan, Rajgir-803116, Distt. Nalanda (Bihar) (2) Mr. Vinod Kumar, Siyat House, 4th floor, 961, Poonamallee High Road, Purusawalkam, Chennai-600084 (Tamilnadu), (3) M. Prasanchand Jain, 138, Udyog Vihar, Shankar Chowk Road, Phase I, Gurgaon-122001 (Haryana) **Page :** 172, **First Print :** January 2021, **Price :** Rs. 249/-.

The book 'Chastity' is a translation of 'Brahmacharya darśana' of Upādhyāya Amar Muniji. He was a great thinker and writer on Jainism. He wrote separate books on five primary vows. Brahmacharya Darśana is one of them. This book has three sections. In the first section 'Discourses' Upādhyāya shri discusses on self-refinement, inner conflict, focal point of power, the essence of life, the illuminated life, influence of Brahmacharya etc. In the second section 'Principles' it enlightens upon self-control, physiology, psychology, ethics and religion in the perspective of Brahmacharya, Brahmacharya is not limited upto physical restraint, it includes restraint over all sensual perversions and attachments that make the soul impure. Chastity is the source of energy, the vital power of life. The third section deals with the tools like Āsana, prāṇāyāma, the power of resolve, selection of food, nine fences for observance of chastity. Brahmacharya is considereed as the best austerity.

This book gives intense thoughts on importance of chastity, its application and tools for its observance. It is a greater need to todays life where graph of rapes and unlawful relationships is increasing. The book has been translated into English by Dr. Pratibha Jain. Trustee of Jainsindia Trust Shri N. Sugal Chand Jain has published the book and Aacharya Chandanaji has written a valuable foreword on it. Book is readable by everyone for self purification.

WHO IS A SAINT?-Upādhyāya Rishi Praveen, **Publisher :** Jainsindia Trust, **Email :** admin@jainsindiatrust.com, 9884533399, 044-35220000, **Copies Available at :** (1) Mr. Vinod Kumar, Siyat House, 4th floor, 961, Poonamallee High Road, Purusawalkam, Chennai-600084 (Tamilnadu), (2) M. Prasanchand Jain, 138, Udyog Vihar, Shankar Chowk Road, Phase I, Gurgaon-122001 (Haryana) **Page :** 100, **First Print :** January 2021, **Price :** Rs. 99/-.

This book guides us for a true Guru or Saint. A guru can help us in choosing the right things and walking on the right path. A guru is not worshiped for his external garb or appearance, but for his virtues. He follows a rigorous way of life to attain the qualities of contentment and non-possession, he observes five great vows and maintains equanimity amidst all kind of situations.

Namaskāra mantra mentions five types of Saintly beings, among whom three are still present here-Āchārya, Upādhyāya and Sādhu. Arihanta and Siddhas are presently not available, but they are quite worthy of reverence. Their qualities inspire us for spiritual upliftment.

This book has three sections. In the first section introduction has been given by Upādhyāya Praveen Risi ji, section second mentions qualities of Sādhu, Upādhyāya, Āchārya, Arihant and Siddha. Section third bears 12 chapters on Karma, Mahāvrata, restraing the senses, passions, Samiti, Gupti, Yoga Satya, ratnatrya, Five fold Ācāra, Kṣamā, Parisaha Jaya & Sallekhana Santhārā.

In this way this book emphasizes on the

qualities of true guru and guides people to decide about the real teacher or guru, through whom right path is attained.

SURVIVE OR THRIVE (Turn around your leadership journey from fear to joy)-Aastha Tatia, **Publisher :** Wings Publication, 907, Sneh Nagar, Sapna Sangeeta Road, Agrasen Square, Indore-452001 (MP), **Email :** mybooks@wingspublication.com, **Page :** 36 + 116 = 152, **Price :** Rs. 599/- $ 15. Also available as an e-book.

This book is inspiring for the leaders and others who want really go ahead with full enthusiasm and right direction. Book has been written by an author having academic background in engineering and management and also bearing adequate experience of nine years in corporate world. It contains 11 chapters with forward of Murali Sundaram, happiness coach, Author and founder-TLC Masterminds. It also has reviews of prominent personalities like D. R. Mehta, Digambar Kamat, Shekhar Suman, Deepak Chausaria etc.

It gives vision to change oneself for his better thought process, behaviour and leadership. The person who wants to change others according to him, should change himself first. The situations will be automatically positive and supporting. The author writes the book in very interesting way presenting self story of a great change. Questions given after every chapter are sufficient to analyse oneself and to proceed in the right direction. A reader can learn much more from this book for thriving himself with required evaluation of the self. Generally we live with our image, but not with the truth. This book suggests to drill the right path. It would be better to assess the book from it's a few extracts :

1. The thoughts come from your core, your deep-rooted beliefts (p. 23).
2. Our brains are designed to look for negatives (p. 26). We are so obsessed with these beliefs of ours because they are the reality for us, they are the truth (p. 29). Something that you have cultivated over years will not change overnight (p. 37).
3. Accepting others starts with first accepting ourselves (p. 39). This would require effort- massive and consistent (p. 50).
4. Stand guard to your mind. You cannot let any limiting belief spoil the garden (p. 53).
5. Do you create a positive and energetic work environment for the team to work in or there's a lot of unnecessary, unproductive pressure around? (p. 54)
6. Your beliefs are the foundation on which your successful life is built. (p. 54).
7. Self-love is at the core. If this is missing, you cannot build a strong life structure (p. 69).
8. The world would notice through its own lenses (p. 79).
9. In fact if you want to go beyond your fears, bring in gratitude, practise gratitude, experience gratitude, where there is gratitude, fear cannot exist (p. 89).
10. Listening is a skill that you can learn and master with practice. (p. 97).
11. What's amazing is that all the power resides within you. There's nothing that is outside. You tap into this power within to create the life that you desire (p. 107).
12. Self-awareness can be developed over time with practice just like any other muscle (p. 114). If only you can practice self-awareness again and again and yet again, nothing can deter you. You will thrive (p. 115).

Book is really helpful to evolve power within the self, which can make life easier and also leadership influential.

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 63
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के वर्षावास में ज्ञानाराधना, धर्माराधना तथा तपाराधना से आत्मविशुद्धि कर धन्य हुए श्रावक-श्राविका

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति-रात्रिभोजन त्याग एवं शीलखंध के प्रबल प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम **श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6** श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन में एवं **व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3** महिला स्वाध्याय भवन, पीपाड़ शहर में चातुर्मासार्थ सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

पीपाड़शहर को सन् 1997 के बाद अब 2021 में रत्नसंघीय आचार्यप्रवर का चातुर्मासिक संयोग प्राप्त होने से सभी को दिन-रात ज्ञानाराधना, धर्माराधना, संवर-साधना का सुयोग प्राप्त हुआ। पीपाड़ संघ के सभी श्रावक-श्राविका, युवारत्न बन्धु, आबाल-वृद्ध धर्मोल्लास में संलग्न हैं।

प्रवचन प्रभावना में भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. के द्वारा प्रवचन फरमाया जा रहा है, जिसे सभी श्रावक-श्राविका रुचिपूर्वक श्रवण कर श्रद्धा के साथ धर्म साधना-आराधना में आगे बढ़ रहे हैं।

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणांग सूत्र की वाचना फरमा रहे हैं। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. धार्मिक शिक्षण कराते हैं, जिनके सरल, सुबोध विवेचन से धर्मश्रवण करने वालों में सहज जिज्ञासाओं का प्रादुर्भाव होता है। सभी की जिज्ञासाओं का समाधान भी करते हैं। श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. कर्मग्रन्थ विषय पर ज्ञानार्जन करवा रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में महिला स्वाध्याय भवन में दोपहर 1.45 से 2.45 बजे तक 59 थोकड़ों की कक्षा चल रही है।

जैनधर्म संस्कार पाठशाला के बालक-बालिकाएँ ज्ञानार्जन में रुचि के साथ सायंकाल समूह में एकत्रित होकर पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वन्दन का लाभ लेने के साथ बाल सुलभ उत्साह उमङ्ग के साथ मनोरम वातावरण सृजित कर देते हैं। प्रतिदिन प्रति-एक घर में सुबह 8 बजे से सायंकाल 6 बजे तक अखण्ड नवकार महामन्त्र का जाप चल रहा है।

युवक परिषद् के सदस्य पूज्य गुरुचरण सन्निधि में एवं श्राविका मण्डल एवं युवती मण्डल की सदस्याएँ महासती मण्डल की सेवा में क्रमिक संवर-साधना का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

आगत श्रद्धालुओं एवं पीपाड़ संघ के आबाल-वृद्ध सभी श्रावक-श्राविकाओं में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व पर 'महाकुम्भवत्' भरपूर उपस्थिति, धर्मोल्लास, उत्साह-उमङ्ग के चलते ज्ञानाराधना, तपाराधना, धर्माराधना में बना उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। युवक-युवतियों और बालक-बालिकाओं में सामायिक-प्रतिक्रमण, बोल-थोकड़े सीखने की भावना वृद्धिगत हुई। ज्ञानाराधन में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ने अच्छा पुरुषार्थ किया। व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 सहित चतुर्विध संघ का समागम होने से सभी श्रद्धालुओं को, श्रावकों को सन्तों की सेवा में एवं

श्राविकाओं को महासतीमण्डल की सेवा में पर्युषण पर्वाराधना का अनुपम लाभ मिला एवं दया, संवर, पौषध, साधना-आराधना का पर्युषण पर्व पर प्रवर्धमान स्वरूप दृष्टिगोचर हुआ।

पीपाड़ के सभी परम्पराओं के सुज्ञजनों, बहिनों और बुजुर्गों ने तपाराधन एवं संवर-पौषध की साधना में अपनी भागीदारी निभाई। राता उपासरा में प्रवचन-सभा में सभी को स्थान सुलभ नहीं होने से संघमंत्री, अध्यक्ष की भावना से जयभवन में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के प्रवचन का कार्यक्रम आठों दिवस चला।

देश के विभिन्न सुदूरवर्ती-निकटवर्ती क्षेत्रों से गुरुचरण सन्निधि में आठ दिवसीय साधना-आराधना हेतु आबाल-वृद्ध श्रद्धालु श्राविकाएँ बंगारपेट, गोटन, कुम्भकोणम, बैंगलोर, ब्यावर, जैतारण, चेन्नई, जयपुर, खेरली, नागौर, जोधपुर, कलकत्ता, मेड़ता, निमाज, धनारीकलां, सवाईमाधोपुर, आलनपुर, बाबई, कोटा, मैसूर, कोप्पल, कोलीडम, पीपलियाँकलां, बलदोरा, बीजापुर, माधोनगर, भड़गांव, लासूर, धूलिया, गदग, बालोतरा, पाली, रतलाम, बल्लारी, पुन्नमल्लै, नोखा, बगड़ी, सियाट, किलपॉक, तिरुवल्लूर, अहमदाबाद, मुम्बई इत्यादि क्षेत्रों से आये एवं सभी ने प्रार्थना, प्रवचन, अन्तगड़ सूत्र वाचन, उभयकाल प्रतिक्रमण, नवकार मंत्र जाप आदि सभी धर्मचर्याओं में अधिक से अधिक सामायिक, संवर, दया, पौषध यथाशक्ति तपस्या करते हुए- पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना करते हुए अपने आराध्य के श्री चरणों में विविध ज्ञानाराधना, तपाराधना, धर्माराधना एवं साधना-आराधना करके अर्घ्य अर्पित किये।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के अष्टदिवसीय प्रसङ्ग पर लगभग 50 तेले, अनेकों बेले तथा उपवास, एकासन, आयंबिल, नींवी आदि की तपस्या, अनगिनत हुई एवं अठाई एवं अठाई से ऊपर की तपस्याएँ इस प्रकार हैं-1. श्रीमती बिमलादेवीजी धर्मसहायिका श्री कमलजी बोहरा, पीपाड़-8 की, 2. श्रीमती चुक्कीदेवीजी धर्मसहायिका श्री किस्तूरचन्दजी बाघमार, पीपाड़-8 की, 3. सुश्री पलकजी सुपुत्री श्री आशीषजी बोहरा, पीपाड़-9 की, 4. सुश्री आस्थाजी सुपुत्री श्री श्रेणिकजी कटारिया, पीपाड़- 8 की, 5. श्री किशोरजी लुंकड़, चेन्नई-8 की, 6. श्रीमती पुष्पादेवी जी धर्मसहायिका श्री राणमलजी कांठेड़, पाली- 8 की, 7. श्री महेन्द्रजी कांठेड़, पाली- 8 की, 8. श्री नरेशजी चौपड़ा, बालोतरा-8 की, 9. श्री धनराजजी भण्डारी, बालोतरा-8 की, 10. सुश्री खुशबूजी सुपुत्री श्री विजयराजजी पारख,पीपाड़-8 की, 11. श्रीमती विजयाजी धर्मसहायिका श्री गौतमचन्दजी कटारिया, पीपाड़- 8 की, 12. श्रीमती दीपिकाजी धर्मसहायिका श्री निखिलजी कटारिया, पीपाड़-8 की, 13. श्री निखिलजी राजेन्द्रजी कटारिया, पीपाड़- 8 की, 14. श्रीमती अंजुजी धर्मसहायिका श्री अशोकजी बोहरा, पीपाड़-8 की, 15. श्री महेन्द्रजी हस्तीमलजी बोहरा, पीपाड़- 8 की, 16. श्री एवं श्रीमती सज्जनराजजी लुणावत (सजोड़े), पीपाड़- 8 की, 17. श्री दिलखुशजी बरड़िया, पीपाड़- 9 की, 18. श्री पदमजी कवाड़, पुन्नमल्लै/पीपाड़- 9 की, 19. सुश्री महिमाजी सुपुत्री श्री महावीरजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 20. श्री अशोकजी सुपुत्र श्री मूलचन्दजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 21. श्रीमती हेमलताजी धर्मसहायिका श्री रमेशचन्दजी बोहरा, पीपाड़-11 की, 22. श्री रमेशचन्दजी सुपुत्र श्री मूलचन्दजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 23. श्री पवनजी सुपुत्र श्री महेन्द्रजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 24. श्रीमती चेतनाजी धर्मसहायिका श्री पवनजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 25. श्रीमती रेखाजी धर्मसहायिका श्री पदमजी लुणावत, पीपाड़- 9 की, 26. श्रीमती पूजाजी धर्मसहायिका दीपकजी मूथा, पीपाड़-13 की, 27. श्री गौतमजी सुपुत्र श्री नवरतनजी मूथा, पीपाड़- 18+होकर बढ़ रहे हैं। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के पावन प्रसङ्ग पर गुरुचरणों में आकर- श्रीमती इन्द्राजी बाफना ने 9 की, श्री किशोरजी लुंकड़, चेन्नई ने 8 की, श्री मनीषजी बागरेचा, गोटन (श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी के सांसारिक बहनोई) ने सात की तपस्या एवं सुश्राविका वन्दनाजी मूथा, चौकड़ीकलाँ ने 9 की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से ग्रहण किये।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के पावन प्रसंग पर राता उपासरा, श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक स्वाध्याय भवन, श्री जयमल स्वाध्याय भवन (जय भवन) एवं श्री जयमल महिला स्वाध्याय भवन में चारों ही धर्मस्थानों पर दया, संवर, पौषध करते हुए प्रतिक्रमण, सामायिक-स्वाध्याय साधना-आराधना करने वालों से पूरित रहे तथा संवत्सरी के दिन तो चारों ही धर्मस्थानों में आगत श्रावक-श्राविकाओं सहित पीपाड़ श्री संघ के चारों संघ के श्रद्धालुओं ने सांवत्सरिक प्रतिक्रमण एवं दया, संवर, पौषध करने पर सभी भवनों में ऊपर-नीचे सभी मञ्ज़िलों पर भरपूर उपस्थिति रही। जैसे कि धर्मश्रद्धा का सैलाब आ गया हो एवं 84 लाख जीव योनियों के प्रति क्षमा/मैत्री भाव का महाकुम्भ का दृश्य प्रतीत हो रहा था।

पर्युषण महापर्व के दिवसों में महासतियाँजी एवं महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने प्रवचन फरमाया एवं अन्तगड़ सूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने एवं मध्याह्न में कल्पसूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया।

संवत्सरी के पश्चात् 14 सितम्बर, 2021 को संघ एवं सहयोगी सस्थाओं के पदाधिकारी गुरुदेव के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष श्री सुभाषचन्दजी गुन्देचा एवं मंत्री श्री नवरतनजी गिड़िया 15 सितम्बर, 2021 को जोधपुर संघ के 250 श्रावक-श्राविकाओं के साथ गुरुदेव के श्रीचरणों में आगामी चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। श्राविका संघ की अध्यक्षा श्रीमती सुमनजी सिंघवी एवं युवक परिषद् अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने गुरुदेव के श्रीचरणों में जोधपुर संघ की भावभीनी विनति प्रस्तुत की। साथ ही गजेन्द्रजी चौपड़ा ने श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनिजी म.सा. को भावी आचार्य बनने पर जोधपुर संघ की ओर से बधाई गीत प्रस्तुत किया। 19 सितम्बर को वीरभ्राता श्री जतनराजजी लोढ़ा-जोधपुर अपने परिवार के 50 सदस्यों सहित गुरुचरणों में दर्शनार्थ उपस्थित हुए। इसी दिन संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत गुरुदेव के दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित हुए। 20 सितम्बर को मण्डावर संघ, प्रतापनगर-जोधपुर संघ, शिरपुर संघ एवं महुवा संघ के साथ अनेक स्थानों से श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित होकर गुरुचरण सन्निधि का लाभ लिया।

23 सितम्बर, 2021 को पीपाड़ के युवारत्न श्री गौतमजी मूथा सुपुत्र श्री नवरतनमलजी मूथा, सुपौत्र श्री देवराजजी मूथा ने जय भवन की प्रवचन सभा में भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से 30 (मासक्षपण) की तपस्या के पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा में उपस्थित होकर गुरुदेव के मुखारविन्द से 31 के प्रत्याख्यान ग्रहण कर अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। प्रात: प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं भावी आचार्य, परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने तप के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डालते हुए युवारत्न श्री गौतमजी मूथा की तपस्या के अनुमोदना के रूप में अधिक से अधिक तपाराधन करने की पुरजोर प्रेरणा प्रदान की। प्रवचन सभा में युवारत्न श्री गौतमजी मूथा की तपस्या के उपलक्ष्य में उनके मित्रगण एवं पारिवारिकजनों श्री गौतमजी गांधी, श्री पंकजजी कोठारी, श्रीमती सपनाजी कांकरिया, सुश्री हिमांक्षीजी एवं सुश्री भव्याजी, संतोषजी ललवाणी, निर्मलजी मूथा, पुर्णिमाजी मूथा, अखिलजी लुणावत, गजेन्द्रजी चौपड़ा एवं शिखाजी संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। पीपाड़ संघ की ओर से तपस्वीरत्न श्री गौतमजी मूथा का माला, शॉल, साफा, सामायिक के उपकरण, प्रशस्ति-पत्र एवं अभिनन्दन पत्र के माध्यम से सम्मान किया गया। अभिनन्दन-पत्र का वाचन रत्नसंघ के पूर्व मन्त्री श्री परेशजी मूथा ने किया। कार्यक्रम का सफल सञ्चालन श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने किया।

संवत्सरी के पश्चात् विभिन्न संघों का आवागमन निरन्तर जारी है। अब तक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री

हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा में उपस्थित होकर निम्नांकित संघों ने दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लेते हुए अपने-अपने क्षेत्रों की चातुर्मास एवं शेखेकाल की विनतियाँ प्रस्तुत की। जिसमें प्रमुख-प्रतापनगर-जोधपुर, महामन्दिर-जोधपुर, कोटा, सोजत रोड़, भोपालगढ़, जयपुर, नागपुर, चेन्नई, मदनगंज-किशनगढ़, मण्डावर, भोपालगढ़, महुवा, शिरपुर, धुलिया, सुमेरगंजमण्डी, पाली, गुलेजगढ़, गजेन्द्रगढ़, मुम्बई, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर, जलगाँव, धुलिया, केलसी, देई आदि।

पीपाड़ श्री संघ में सुव्यवस्थाओं की ओर पूरा ध्यान दिया जा रहा है, चाहे सन्त-सती हो अथवा आगन्तुक श्रावक-श्राविका, कोरोना काल को देखते हुए सभी की सुरक्षा-सुव्यवस्था के लिए श्रावक संघ सेवारत है। पीपाड़ संघ सभी पधारने वाले दर्शनार्थियों की आवास एवं भोजन व्यवस्था के लिए विशेष रूप से तत्पर हैं। श्रावक संघ, श्राविका संघ, युवक परिषद्, बालिका मण्डल के सभी सदस्य आतिथ्य सत्कार सेवा में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

-गिरीश जैन

सन्त समागम से तपोमयी हुई जयपुर नगरी

मानसरोवर-जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती **मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी महाराज साहब आदि ठाणा-3** का वर्ष 2021 का पावन वर्षावास जन-मन में अपार उत्साह और उमङ्ग के साथ सतत गतिमान है। मानसरोवर क्षेत्र ही नहीं सम्पूर्ण जयपुर के गुरुभक्त स्वयं को धन्य मानते हुए धर्म-आराधना, त्याग-प्रत्याख्यान, जप-तप आदि में तो अग्रसर हो ही रहे हैं,साथ ही चातुर्मास के आनन्द भरे इन क्षणों में मुनिराज के विराजने से जयपुर के इस कोने से उस कोने तक हर कोई पुलकित है, हर्षित है और प्रसन्नचित्त है।

बड़ी तपस्याओं में अब तक 4 मासखमण, 2 पन्द्रह, 9 ग्यारह, 25 नौ, 60 से अधिक अठाई, छह, पचौले, 165 से अधिक तेले, अनगिनत उपवास आदि तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। एकाशन, आयम्बिल, नींवी, उपवास एवं तेले की लड़ी, दया, संवर पौषध आदि का क्रम चातुर्मास प्रवेश से ही अनवरत चल रहा है।

युवक एवं युवतियों में धर्मबोध के आस्वादन हेतु महाराज साहब के सान्निध्य में रविवारीय कक्षाओं के आयोजन का क्रम अनवरत रूप से गतिमान है, जिसमें श्री राजेन्द्रजी लूंकड़, ईरोड (राष्ट्रीय अध्यक्ष-भारतीय जैन संघटना) ने 'Key of Success' (सफलता की चाबी), डॉ. सुषमाजी सिंघवी ने 'युवा अपनाएँ अपरिग्रही जीवन-शैली' विषय पर अपने ओजस्वी वक्तव्य से उपस्थित जनमानस में विषय के प्रति चेतना का सञ्चार किया। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी महाराज साहब द्वारा उपस्थित युवाओं को प्रेरणादायी उद्बोधन दिए जा रहे हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के मंगलमय पावन दिवसों में भी यहाँ सम्पूर्ण जयपुर शहर एवं अन्य क्षेत्रों से पधारे अपार जनसमूह के रूप में मेले जैसा आवागमन रहा। आठों ही दिन प्रवचन के समय ऐसा लगा जैसे जन सैलाब उमड़ पड़ा हो, चाहे वह प्रवचन हॉल हो या पीछे का पाण्डाल, नीचे का हॉल हो या सीढ़ियाँ या बालकनी सभी स्थान श्रावक-श्राविकाओं से खचाखच भरे हुए थे। इन दिनों प्रतिदिन लगभग 1500 तथा क्षमापना पर्व के दिन लगभग 2,200 श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित होकर असीम श्रद्धा-भक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया।

पर्युषण पर्व के आठों ही दिन श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी महाराज साहब ने अपने मुखारविन्द से अंतगडदसासूत्र का वाचन एवं उसमें वर्णित चारित्रात्माओं के विषय में फरमाते हुए बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ कई सारी नवीन धारणाओं से जनमानस को अवगत कराया।

महासती श्री दिव्यप्रभाजी महाराज साहब ने आठों ही दिन क्रमशः ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, संयम, शील,

दान एवं क्षमा दिवस के रूप में प्रेरणास्पद प्रवचन फरमाए। महासतीजी ने फरमाते हुए कहा कि ज्ञान पौष्टिक दूध की तरह है। दर्शन उस दूध में जावण डालने से स्थिर दूध (दही) की तरह श्रद्धा में स्थिर करता है और उसमें से चारित्र रूपी मक्खन को तपाकर तप रूपी घी निकलता है। इस तरह आगे के विषयों को बहुत ही प्रभावी ढंग से विवेचना कर महासतीजी ने जन-जन के अन्तर्मन को जाग्रत किया।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी महाराज साहब ने अपने प्रवचनों में आध्यात्मिकता के साथ जीवन जीने के सूत्र दिए और साथ ही अंतगडदसासूत्र में वर्णित प्रसङ्गों को सामने रखकर समसामयिक विषयों पर प्रभावी प्रवचन फरमाया जिसमें विशेषकर देवकी महारानी के मातृ-हृदय पर चर्चा करते हुए उपस्थित जनसमूह से आह्वान किया कि उस माँ की ममता एवं उसके उपकारों का बदला आज किस रूप में चुकाया जा जा रहा है अर्थात् वर्तमान का हश्र यह है कि फादर का कोई आदर नहीं, मदर की कोई कदर नहीं। महाराज साहब ने तीखा प्रहार करते हुए कहा कि आज माता-पिता के प्रति हम जैसा व्यवहार करेंगे उसका परिणाम अंततः वही वापस लौटकर आता है। मातृभक्ति और पितृभक्ति के अनेक उदाहरण देकर फरमाया कि धर्म की शुरुआत खुद से एवं घर से होती है, तभी जाकर धर्मस्थानक में की गई धर्मप्रवृत्ति प्रभावी बनती है। इसी कड़ी में सुदर्शन सेठ की धर्म-श्रद्धा एवं दृढ़ता तथा श्रावकत्व के गौरव की चर्चा की, साथ ही नन्हें एवन्ता अनगार के धर्म संस्कारों की चर्चा कर वर्तमान में धर्म संस्कारों की कितनी जरूरत है इसका विशद विवेचन किया और भी अनेक प्रासङ्गिक विषयों पर मुनिराज ने विवेचना कर जनमानस को धर्म संस्कारों के प्रति प्रेरित किया।

प्रतिदिन अपराह्न 2 से 3 बजे तक श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी महाराज साहब ने जैनधर्म के मौलिक इतिहास के माध्यम से ऋषभदेव से लगाकर लोकाशाह तक सात दिन तक मुख्य-मुख्य ऐतिहासिक घटनाओं का जिक्र किया। अनेक लोगों ने इन घटनाओं को पहली बार सुनकर आह्लाद भाव का अनुभव किया, तो आठवें दिन श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी ने लोकाशाह से लेकर वर्तमान संघनायक तक पट्टावली का वाचन कर अनेक अनछुए प्रसङ्गों को जनमानस के समक्ष रखकर वैसा ही जीवन जीने की प्रेरणा दी।

प्रतिदिन अपराह्न 3 से 4 बजे तक आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के प्राचार्य श्री दिलीप जी जैन एवं श्री शैलेन्द्रजी मुणोत ने प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन करवाया और अनेक लोगों ने उत्साह से भाग लेकर ज्ञानवर्धन किया। संघ की ओर से स्थानक में आठों ही दिन नवकारमन्त्र का अखण्ड जाप हुआ, जिसमें दिन में श्राविकावर्ग और रात्रि में श्रावकवर्ग ने पूर्ण उत्साह के साथ अपनी सहभागिता निभाई। सायंकालीन प्रतिक्रमण के समय लोगों की अधिकता को देखते हुए चार-चार स्थानों पर प्रतिक्रमण किया गया।

प्रतिदिन लगभग 250-300 लोगों द्वारा पौषध एवं संवर किए गए। संवत्सरी के दिन पौषध एवं संवर करने वालों की संख्या लगभग 800 रही। पर्युषण पर्व जरूर सम्पन्न हुआ, मगर आज अभी भी मानसरोवर स्थानक के प्राङ्गण में श्रावण एवं भाद्रपद की तरह प्रवचन में मेला लगा रहता है जिसमें अनन्त चतुर्दशी की उपस्थिति देखकर ऐसा आभास हो रहा था मानो फिर से पर्युषण लग रहा है। प्रवचन में स्थानीय एवं दर्शनार्थियों का निरन्तर आवागमन के साथ मेला लगा रहता है। *-धर्मचन्द जैन (पाटोली वाले), मन्त्री*

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा 24 सितम्बर को श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी महाराज साहब की सन्निधि में श्राविका स्थापना दिवस पर 'स्वस्थ तन, स्वस्थ मन' प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन दोपहर 12:45 से 3:30 तक किया गया। शिविर में लगभग 150 श्राविकाओं ने भाग लिया। श्री जितेन्द्रजी गुप्ता द्वारा एक्युप्रेशर, श्रीमती महकजी डागा द्वारा हितभूख, मितभूख पर एवं प्रोफेसर श्रीमती सुशीलाजी पारीक द्वारा 'परिवार कैसे रखें खुशहाल' पर लाभकारी प्रशिक्षण दिया गया। समापन सत्र पूर्व श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने अपने मर्मस्पर्शी उद्बोधन में फरमाया कि आत्मविकास के लिए जीवन में आदर्श, आस्था, आलम्बन एवं आचरण का समावेश करेंगे तो जीवन उन्नतिशील एवं प्रगतिशील बन पायेगा। *-मीनल गोलेच्छा, अध्यक्ष*

महारानीफार्म, जयपुर-साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. आदि ठाणा का उत्तम स्वाध्याय भवन, महारानी फार्म, जयपुर में पूर्ण उत्साह एवं उमङ्ग से चातुर्मास गतिमान है। उपवास, आयम्बिल, एकाशन, नींवी एवं तेले की लड़ी निरन्तर चल रही है। अष्ट दिवसीय पर्युषण पर्व में नवकार मन्त्र का अखण्ड जाप हुआ दिन में श्राविकाओं ने तथा रात्रि में श्रावकों ने सहभागिता की। संवर, पौषध, अष्ट प्रहर पौषध एवं तपाराधन हुआ। यहाँ पर 10-12 बेले, 60-62 तेले, चौला, 4 पचोला, 3 अठाई, 4 नौ दिवसीय, 3 ग्यारह दिवसीय तथा एक 16 दिवसीय तपस्याएँ सम्पन्न हुई। पर्युषण पर्व में अंतगडदसासूत्र के वाचन एवं प्रवचन में अच्छी संख्या रही। 18-19 सितम्बर को अनन्त चतुर्दशी के अवसर पर धर्मचक्रक की आराधना हुई, जिसमें 42 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, दयाव्रत एवं बेले की तपस्या की। महासती पुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा-3 मानसरोवर में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की सेवा में अध्ययन आदि का लाभ ले रहे हैं। दर्शनार्थियों एवं साधकों का आवागमन बना हुआ है। महारानी फार्म संघ अतिथि सेवा में तत्पर है।

-केवलचन्द जैन (सर्राफ), सह संयोजक

अजमेर में पर्युषण पर्व पर हुई विशेष धर्मक्रियाएँ

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती सेवाभावी **श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-4 एवं **व्याख्यात्री महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.** आदि ठाणा-8 के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण के प्रथम ज्ञान दिवस पर 200-250 लोगों ने 100 गाथाओं का स्वाध्याय कर ज्ञानदिवस को सार्थक किया। दूसरे दर्शनदिवस पर 36 वन्दना की प्रेरणा की गई, उसमें भी 120-150 भक्तगणों ने 36 वन्दना की। तीसरे चारित्र दिवस के अवसर पर रात्रि संवर के कार्यक्रम में 25-30 श्रावकों की उपस्थिति रही। चौथे तपदिवस में पौरसी से लेकर दिवस चरिम तप की तथा 5 द्रव्य आहार की मर्यादा 100-125 लोगों ने ग्रहण कर निर्जरा का लक्ष्य रखा। पाँचवाँ दानदिवस और छठा शीलदिवस पर दान और दया की प्रेरणा की गयी, उसमें शक्ति-भक्ति अनुसार लोगों ने भाग लिया। आत्मशुद्धि के 7वें दिवस पर 12 भावना एवं आठवें क्षमा के पर्व पर आलोयणा के कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं ने पूर्ण सक्रियता दिखायी और 250-300 ने भाग लिया।

प्रात: प्रार्थना श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा., अन्तगडदसासूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. और महासती श्री रक्षिताजी म.सा. तथा प्रवचन श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. एवं महासतियाँजी म.सा. के हुए। दोपहर में कल्पसूत्र का वाचन और विवेचना की। श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. और श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने लोगों में रसप्रद बनाकर समूह को भावविभोर कर दिया।

अपराह्न 3 बजे से नित्य नवीन प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता लोगों में ज्ञान वर्धन करने में निमित्त बनी। पौषध और संवर की साधना में प्रतिकूलता होते हुए भी कइयों ने प्रथम बार भाग लिया। श्री रोहकजी कोठारी 4 वर्ष और श्री धीरजी नाहर 8 वर्ष के नन्हें-मुन्ने बालकों ने भी संवर की साधना की। नवकार महामन्त्र के आठ के अखण्ड जाप में भी युवा एवं बुजुर्गों ने स्वेच्छा से शामिल होकर कर्मनिर्जरा की।

पर्युषण पर्व के दौरान 80-90 तेले, चार 5 उपवास, 25 से अधिक अठाई और 9 उपवास, दो 11 उपवास की तप आराधना हुई। इसके अलावा बेला, चोला और छह उपवास की तपस्याएँ भी सम्पन्न हुईं। एकाशन, उपवास, आयम्बिल तथा नींवी करने वालों की बहुत अधिक संख्या रही। सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्तामरस्तोत्र, पच्चीसबोल, कर्मग्रन्थ और स्तोक (थोकड़ा) सीखने वालों की रुचि बनी हुई है।

पर्युषण के आठ दिनों में आठ दिन निवृत्ति परक साधना में-1. हरी सब्जी का त्याग, 2. टीवी, मोबाइल-

अखबार पढ़ने का त्याग, 3. एक विगय का त्याग, 4. जूते चप्पल का त्याग, 5. वाहन का त्याग, 6. रात्रिभोजन का त्याग, 7. स्नान का त्याग और 8. क्रोध का त्याग एवं अब्रह्म का त्याग रहा। प्रवृत्ति परक साधना में प्रतिदिन-1. एक घण्टे का मौन, 2. एक घण्टा नवकार मन्त्र का जाप, 3. संवर या पौषध, 4. पाँच सामायिक, 5. देवसिय/राइय प्रतिक्रमण, 6. आधा घण्टा स्वाध्याय, 7. सत्ताईस लोगस्स, 8. णमो सिद्धांण की 8 माला रखी गयी। इस साधना में 475 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया, संघ के सदस्य स्वेच्छा से सेवा में तत्पर हैं।

-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मन्त्री

गोटन में प्रथम बार सन्त एवं सतियों का चातुर्मास बना ज्ञानाराधना एवं तपाराधना का केन्द्र

जिनशासन गौरव, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती **तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4** सामायिक-स्वाध्याय भवन में एवं **व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4** नाहर आराधना भवन, जैन कॉलोनी, गोटन में चातुर्मासार्थ सुख-साता पूर्वक विराज रहे हैं।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का गोटन में 13 जुलाई, 2021 को बिना पूर्व सूचना के सामायिक-स्वाध्याय भवन में मंगल प्रवेश हुआ। गुरु भगवन्तों के प्रवेश के दिन तीन तेले के पच्चक्खाण हुए। व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 का 22 जुलाई को नाहर आराधना भवन में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ।

प्रवेश से ही निरन्तर प्रवचन, प्रार्थना, वाचनी, धर्मचर्चा गतिमान है। प्रतिदिन संवर साधना में भी श्रावक भाग ले रहे हैं। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. के प्रवचन से ज्ञान गंगा बह रही है। जैन-रामायण का वाचन भी प्रमोदमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से चल रहा है, जिसमें जैन तथा जैनेतर लोग उत्साह से भाग ले रहे हैं। तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. निरन्तर स्वाध्याय एवं बेले-बेले की तपस्या कर रहे हैं। श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में साधु-साध्वी और वैरागी-वैरागिनों का अध्ययन सुचारु रूप से चल रहा है। गुरुभगवन्त के प्रवेश से गुप्त तपस्याएँ निरन्तर चल रही हैं। जिसमें छोटे बच्चे-बच्चियाँ बढ़-चढ़कर अपना उत्साह दिखा रहे हैं।

भगवान महावीर विकलाङ्ग समिति, जयपुर तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ गोटन के संयुक्त तत्त्वावधान में विकलाङ्ग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें निकटवर्ती क्षेत्रों के दिव्याङ्गों और विकलाङ्गों को लगभग 650 उपकरण वितरित किये गये।

पर्युषण पर्व के अवसर पर गोटन के श्रावक-श्राविका एवं बाहर के लगभग 60-70 श्रावक-श्राविकाओं ने धर्माराधना की। आठ दिवस तक अखण्ड नवकार मन्त्र का जाप हुआ। हरसोलाव, खवासपुरा, बोरून्दा, लाम्बा, बारनी, नाड़सर आदि आसपास के क्षेत्रों से भी भक्तजन पर्युषण पर्व पर धर्माराधना के लिए पधारे। अब तक गुरु भगवन्त के सान्निध्य में 35 अठाई, 50 तेले, 5 का एक, 9 के तीन, 10 के छह, 11 के सात, 17 की तपस्या तथा उपवास, आयम्बिल, एकाशन की तपस्याएँ भी निरन्तर गतिमान हैं। 15 वर्ष की बालिका सुश्री यशस्वी ओस्तवाल ने 31 की तपस्या कर कीर्तिमान स्थापित किया है। गोटन के इतिहास में इतनी कम आयु में मासखमण की यह प्रथम तपस्या है। गोटन क्षेत्र में दर्शनार्थी आगन्तुकों का आवागमन प्रवेश से ही गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन हेतु गतिमान है। बेंगलोर, चेन्नई, जलगाँव, कानपुर, जयपुर, अमेरिका से भी भक्तगण आकर यहाँ पर धर्म-ध्यान कर रहे हैं।

-हंसराज चौपड़ा

महासती मण्डल के कतिपय चातुर्मासों में धर्माराधना

सूरत-जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.** आदि ठाणा-5 का 22 जुलाई से नियमित रूप से प्रवचन चल रहा है। प्रवचन में उपस्थिति बहुत सन्तोषप्रद है और रोजाना शाम को सायंकालीन प्रतिक्रमण होता है।

पर्वाधिराज पर्युषण में पहले महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ने अन्तगडदसासूत्र मूल कण्ठस्थ रूप में फरमाया एवं विश्लेषण किया। उस दरम्यान बीच-बीच में महासती श्री शारदाजी म.सा. कुछ-कुछ गीतों की लाइनों से धर्मसभा को मन्त्र मुग्ध कर देते थे। तदनन्तर महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा. एवं महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. प्रवचन फरमाते थे। पर्वाधिराज पर्युषण में प्रवचन में लगभग 500 श्रावक-श्राविका उपस्थित रहते थे। पर्वाधिराज पर्युषण में रोजाना प्रवचन में सिद्ध भगवान पर आधारित 2 प्रश्न श्रावकों से एवं 2 प्रश्न श्राविकाओं से पूछे जाते थे। दोपहर में 2 से 3 बजे महासती श्री सुशीलाजी म.सा. ने उववाईसूत्र और जैन आचार्य चरितावली का वाचन किया।

9 अगस्त से एकाशन के सिद्धितप की आराधना हुई जिसमें लगभग 42 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया, जिसकी पूर्णाहुति 21 सितम्बर को हो गई। 29 अगस्त से जैनधर्म का मौलिक इतिहास का खुली किताब प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, उसमें पुस्तक 'जैन इतिहास के प्रसङ्ग' के 40 भागों में 5-5 बुक को मिलाकर 8 परीक्षाएँ हुईं। इस प्रतियोगिता में लगभग 85 श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की।

तपस्या के क्षेत्र में अभी तक 13, 11, 10 की तपस्या एक-एक, 9 की 5 तपस्या, 18 अठाई, 5 एवं 4 की दो-दो तपस्या, लगभग 25 तेले की तपस्याएँ सुख-साता पूर्वक सम्पन्न हुई हैं और रोजाना 5-6 बियासन होते हैं, दो आजीवन शीलव्रत के श्री नरेन्द्रमलजी सिंघवी-सूरत, श्री ओमप्रकाशजी छाजेड़-नन्दूरबार वाले ने प्रत्याख्यान ग्रहण किये। पर्वाधिराज पर्युषण में रोजाना आठ दिवस नवकार महामन्त्र का अखण्ड जाप हुआ। चातुर्मास में रोजाना भोजन-व्यवस्था में संघ परिवार में से रोजाना दो-दो परिवार सेवा देते हैं और जिस परिवार की बारी होती है वे सपरिवार आकर सेवाएँ प्रदान करते हैं यह एक बहुत ही अनूठी मिसाल है। 12 सितम्बर को सामूहिक पारणे का आयोजन रखा गया, जिसमें लगभग 500 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। *-सुनील गाँधी, महामन्त्री*

कालाहस्ती-परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **व्याख्यात्री महासती श्री इंदुबालाजी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा 6 जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ सुख-साता पूर्वक विराजमान हैं। गुरु भगवन्त की अनन्त कृपा एवं श्रीकालाहस्ती वासियों के अथक प्रयास और बुलन्द हौसलों से महासती मण्डल के चातुर्मास प्रवेश के साथ ही धर्माराधना और तपश्चर्या का ठाट लगा हुआ है।

महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा के द्वारा प्रातः युवाओं के लिए विशेष कक्षा ली जा रही है, जिसमें कई युवाओं ने महासतीजी के मुखारविन्द से रोचक प्रवचन सुनकर अपने जीवन को निर्मल और व्यसन-मुक्त बना कर पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है। दिन में प्रवचन, दोपहर में चौपाई तथा सायंकालीन प्रतिक्रमण, रात्रि में धर्मचर्चा और पूरे दिन धार्मिक गतिविधियों से जिनशासन की महती प्रभावना चल रही है। आचार्यप्रवर का विशेष आह्वान है कि संघ का प्रत्येक सदस्य बाल, युवा और वरिष्ठ सभी प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करें। इस विशेष आह्वान को सभी सदस्यों ने शिरोधार्य करके युवाओं एवं बालकों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया है।

पूज्या महासतीजी के पावन सान्निध्य में एक दिन भिक्षु दया का आयोजन किया गया, जिसमें कई श्रावक-श्राविकाओं, बच्चों ने दया कर जिनशासन की शोभा बढ़ाई। पूज्या महासतीजी के पावन सान्निध्य में 27 से 30 अगस्त 2021 तक 14 से 25 वर्ष तक की बालिकाओं और अविवाहित युवतियों के लिए लाइफ डिजाइनिंग (दसवाँ) शिविर का आयोजन रखा गया, जिसमें 50 बालिकाओं ने पूरे 4 दिन महासती जी के सान्निध्य में रहकर

अपने जीवन को निर्मल और सार्थक बनाया। 29 अगस्त 2021 को 'आओ लोक की सैर करें' जैनधर्म पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें आस-पास के गाँवों और चेन्नई के कई श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों की उपस्थिति प्रमोदजनक रही।

पर्युषण महापर्व के पावन 8 दिनों में चेन्नई और कई पास के गाँवों से श्रावक-श्राविकाओं ने यहाँ रहकर जिनवाणी श्रवण एवं ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, दया, संवर, पौषध-प्रतिक्रमण की साधना आराधना और तपस्या करते हुए अपने कर्मों की निर्जरा की। जबसे महासतीजी के पावन चरण श्रीकालाहस्ती में पड़े तब से ही ऐसा लग रहा है कि हर दिन पर्युषण महापर्व की तरह धर्म ध्यान की गंगा बह रही है। *-रेखचन्द बाघमार, अध्यक्ष*

अमरावती-व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 की सन्निधि में अमरावती नगरी में चातुर्मास चल रहा है। शुरुआत से ही महासतियाँजी की प्रभावी वाणी, उपदेश एवं आचरण से जन-जन प्रभावित है। तप, त्याग एवं संयम को जीवन में अपना कर, किस तरह इस मनुष्य भव को हम सार्थक कर सकें और उसके लिये क्या करना जरूरी है उपदेश, सुनकर आचरण करने पर जोर दिया जा रहा है। आयम्बिल, एकाशन, दया संवर/सामूहिक एकाशन में भारी संख्या में श्रावक-श्राविका भाग ले रहे हैं। रात्रि संवर, प्रतिदिन प्रवचन के पश्चात् प्रत्याख्यान और छोटे-छोटे नियमों की चिट्ठियाँ बनाकर एक साल के लिए प्रत्याख्यान करवाए गए हैं। 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' की परीक्षा भी नियमित हो रही है। प्रत्येक रविवार को बच्चों का संस्कार शिविर चल रहा है।

पर्युषण पर्व में 125 तेले, 23, 16, 10 उपवास एक-एक, ग्यारह 9 उपवास, अठाई 15, पौषध 30 लोगों ने किया। नन्दीसूत्र, 25 बोल, प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने में 15-20 लोगों ने भाग लिया। पर्युषण पर्व के आठों दिन दोपहर में धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिनमें सभी ने भाग लिया। चातुर्मास को स्थानीय संघ के सभी सदस्य सहयोग देकर सफल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। पर्युषण के आठ दिन अखण्ड नवकार मन्त्र का जाप सजोड़े सम्पन्न हुआ। महासतीजी ने जीवन में ब्रह्मचर्य का महत्त्व एवं महापुरुषों के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालते हुए मनुष्य भव में शीलव्रत ग्रहण करने के बारे में समझाया, जिससे आठ सदस्यों ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया।

-सुरेशचन्द मुणोत, सचिव

सेलम-व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा-5 की सन्निधि में 18 जुलाई से प्रतिदिन एक घण्टा जाप, एकाशन, बियासन, आयम्बिल और तेले की लड़ी निरन्तर गतिमान है। साप्ताहिक बोल-थोकड़ा की परीक्षा में उत्साह बहुत ही अच्छा है। प्रवचन में विभिन्न विषय-श्रवण कुमार, वैराग्य इक्कीसी, सुखविपाकसूत्र, सती सुभद्रा, अवन्ती सुखमाल, जम्बू चरित्र, बलभद्रमुनि चरित्र तथा अन्तगडदसासूत्र आदि विभिन्न विषयों पर श्रावक-श्राविका उत्साह उमङ्ग से एकाग्रचित्त होकर लाभ ले रहे हैं। कइयों ने सती मण्डल के सान्निध्य में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, गति-आगति, लघुदण्डक, नवकार का थोकड़ा, चौबीस तीर्थङ्कर का थोकड़ा, 8 द्रव्येन्द्रिय का थोकड़ा, 5 भावेन्द्रिय का थोकड़ा, गमा का थोकड़ा, पचास की बन्धी, 800 बोल की बन्धी, ज्ञानलब्धि थोकड़ा का अध्ययन किया। जीवपज्जवा गतिमान है, कई भक्तामर, महावीराष्टक अर्थ सहित, दशवैकालिकसूत्र, वीर स्तुति, उत्तराध्ययनसूत्र में 1 से 6, 14, 19वाँ अध्ययन सीख रहे हैं। रविवार को बच्चों की कक्षा तथा सुबह नियमित युवकों की कक्षा और दोपहर में महिलाओं की कक्षा में अच्छा उत्साह है। एकाशन का मासखमण, एकान्तर उपवास, बियासन का मासखमण और खुले-खुले एकाशन, आयम्बिल उपवास अनेक ने किये। पर्युषण में आठों दिन 12-12 घण्टे जाप, कल्पसूत्र वाचन और 16 प्रतियोगिताओं में जबरदस्त उत्साह रहा।

सेलम नगरी में स्थानकवासी, मूर्तिपूजक एवं तेरापन्थी तथा दिगम्बर सभी ने मिल-जुलकर अच्छी संख्या में संगठित होकर तपस्याएँ की है अभी भी कई तपस्याएँ गतिमान हैं। 17 से 21 तक की तपस्या 40, 16 से 8 की तपस्या 170, अनेक तेले, बेले, उपवास एवं176 सामूहिक आयम्बिल हुए हैं। *-सन्तोष महेन्द्र बाबेल, संयोजक*

देई-व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का चातुर्मास उत्तम सामायिक-स्वाध्याय भवन में गतिमान है तथा प्रवचन एवं साथ ही तपाराधना का क्रम निरन्तर चल रहा है। यहाँ प्रथम बार 1-2-3-4-5-8-9 एकाशन, आयम्बिल, उपवास और तेले की लड़ी चल रही है। तपस्याओं में तेले, चोले, पचौले, अठाई और 9 की अनेक तपस्याएँ हो चुकी हैं। ज्ञानाराधना का क्रम भी अनवरत रूप से गतिमान है। एक लम्बे अन्तराल के बाद धार्मिक पाठशाला का शुभारम्भ महासतियाँजी के अथक प्रयास से हुआ है, जिसमें प्रतिदिन 37 बच्चे ज्ञानवर्धन हेतु आते हैं। कई बच्चों ने सामायिकसूत्र कण्ठस्थ कर लिया और 5 बच्चों का प्रतिक्रमण पूर्णता की ओर है। श्रावक-श्राविकाओं में सामायिक-प्रतिक्रमण को कण्ठस्थ करने की होड़ लगी हुई है। प्रत्येक रविवार को धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सभी का उत्साह सराहनीय है।

पर्युषण पर्व के दौरान आठों दिन नवकार महामन्त्र का अखण्ड जाप हुआ, आठों ही दिन प्रतियोगिताएँ हुईं। सामूहिक दया का आयोजन रखा गया तथा भाई-बहनों में सामायिक की छह पचरंगी हुई। संवत्सरी के दिन 'तीन लोक की यात्रा' भी करायी गई। देई में मात्र स्थानकवासी परिवार के लगभग 30 घरों की संख्या के अन्दर संवत्सरी महापर्व पर लगभग 70 पौषध हुए। बहनों ने पहली बार पौषध किया है। तपस्याओं में भी पहली बार नवयुवक, नवयुवतियाँ बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं, जो देईवासियों के लिए बहुत ही प्रमोद एवं हर्ष का विषय है। शाम को प्रतिदिन प्रतिक्रमण, चौबीसी, भजन, स्वाध्याय आदि का लाभ लिया जा रहा है।

इसी दरम्यान 'सचित्त-अचित्त विवेक' तथा 'भाषा विवेक' के बारे में भी समझाया गया है। प्रतिदिन गोचरी सेवा में नवयुवक मण्डल की उपस्थिति सराहनीय है। क्षेत्र के लोगों में अपार उत्साह है, जो चातुर्मास प्रारम्भ से ही प्रार्थना, प्रवचन में उपस्थिति के रूप में दिखाई दे रहा है। प्रतिदिन शाम को 40-50 बहनों की उपस्थिति देखने को मिल रही है। जरखोदा, सवाईमाधोपुर, बजरिया, जलगाँव, पीपाड़, कर्नाटक, अलीगढ़ (टोंक) आदि स्थानों से दर्शनार्थियों का आवागमन रहा। *-ताराचन्द जैन, मन्त्री*

मैसूर-व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-6 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से संवत्सरी पर्व तक की गतिविधि इस प्रकार है-प्रात: 7 बजे से 8 बजे तक नवकार मन्त्र का जाप, सुबह 8 से 9 बजे तक युवकों के लिए कक्षा, विषय 'मेरा शासन महान्' 9 से 10 बजे तक प्रवचन, दोपहर 2 से 3.30 बजे तक कक्षा 'नरक से निगोद तक यात्रा' में 21 थोकड़ों की परीक्षा हुई। पूज्य श्री सागरमलजी म.सा. के संथारा युक्त पण्डित मरण, पक्खी, आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. की पुण्यतिथि पर तीन दिन एकाशन का आयोजन हुआ, लगभग 150 एकाशन तेले हुए। चातुर्मास प्रारम्भ से ही तेला, उपवास, आयम्बिल, नींवी, एकाशन, बियासन, संवर की लड़ी बराबर चल रही है।

पर्युषण पर्व तक की धर्माराधना इस प्रकार रही-एक 28, एक 30, पाँच 11, नौ 11, पैंतीस अठाई, एक 7, दो 6, सात 5, पाँच 6, दो 4, दो सौ पन्द्रह तेले, 75 बेला, उपवास हजारों में। आयम्बिल अठाई 5, नींवी अठाई-3, एकाशन अठाई-50, बियासन अठाई-80 लगभग हुई है। 21 सितम्बर को लाखीना आयम्बिल (नींवी) लगभग 35, आसोजी तप लगभग 70 श्रावक-श्राविका कर रहे हैं। एकान्तर तप-25, बेले-8 के लगभग चल रहे हैं। आठ दिन नवकार महामन्त्र का जाप हुआ। सतरंगी-1, धर्मचक्र-1 एवं भ्रूण हत्या पर बालिकाओं द्वारा नाटिका की प्रस्तुति प्रवचन सभा में संवत्सरी के दिन रखी गई। आठ दिन पर्युषण में दोपहर में अलग-अलग विषयों पर

प्रतियोगिता रखी गयी, जिसमें हर रोज 100-125 लोगों ने भाग लिया। आठ दिन में लगभग 1250 संवर और पौषध हुए तथा प्रतिदिन 3000-4000 तक सामायिक हुईं।

श्रीमती अंशिताजी धर्मपत्नी श्री अनिलजी मुणोत ने 22 के प्रत्याख्यान तथा श्रीमती कविताजी धर्मपत्नी श्री प्रवीणजी गुलेछा ने 26 के प्रत्याख्यान अङ्गीकार किये और आगे बढ़ने के भाव हैं।

पर्युषण में 4-5 सितम्बर को ऊपर नीचे के दो हाल में प्रवचन हुए। करीब 1300-1300 की उपस्थिति रही। बीच के 5 दिन करीब 700 की उपस्थिति थी। 11 सितम्बर संवत्सरी के दिन पुन: दो हाल में प्रवचन हुए। लगभग 1500 की उपस्थिति रही। एक बहन के 14 की तपस्या, एक बहन के 10, एक भाई के 12 एवं एक के 8 की तपस्या के पच्चक्खान हुए हैं, आगे बढ़ने के भाव हैं। दो महीने एकाशन करने वाले 15 भाई-बहन हैं जो तपस्या कर रहे हैं। 26 सितम्बर से आर.पी.एल. आध्यात्मिक वन डे मैच का आयोजन प्रत्येक रविवार को होगा, जिसमें लगभग 80 श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले रहे हैं जो तीन सप्ताह चलेगा। चेन्नई, बेंगलोर, रायचूर, हुबली, सवाईमाधोपुर, जयपुर, महाराष्ट्र एवं आसपास के क्षेत्र के दर्शनार्थी निरन्तर पधार रहे हैं। *-वी. सुभाषचन्द धोका, मानद् मन्त्री*

संघ एवं संघ अधीनस्थ संस्थाओं की कार्यकारिणी एवं आमसभा स्थगित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाश जी टाटिया की 29 सितम्बर, 2021 को बाईपास सर्जरी सफलतापूर्वक हुई है। मैं संघ परिवार एवं रत्नसंघ सदस्यों की ओर से अध्यक्ष महोदय के शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामना करता हूँ। **विशेष-**संघ की सञ्चालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक दिनांक 13 नवम्बर तथा संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त आमसभा 14 नवम्बर को आयोजित करने का निर्णय लिया गया था, जिसे फिलहाल स्थगित किया जा रहा है। चिकित्सकीय परामर्शानुसार अध्यक्ष महोदय के स्वास्थ्य अनुकूल होने पर बैठक की आगामी दिनांक निश्चित कर सभी को सूचित करने का प्रयास रहेगा। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

जयपुर में दशम राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी
"समत्व की साधना: सामायिक" विषय पर सम्पन्न

जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती **मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतम मुनि म.सा. आदि ठाणा 3** एवं साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. की सुशिष्या **महासती श्री पुष्पलता जी म.सा. आदि ठाणा 3** के सान्निध्य में महावीर भवन, मानसरोवर, जयपुर में 25-26 सितम्बर, 2021 को '**समत्व की साधना-सामायिक**' विषय पर दशम राष्ट्रीय संगोष्ठी अत्यन्त ज्ञानवर्धक एवं समभाव की साधना हेतु प्रेरक रही। संगोष्ठी का आयोजन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर-जयपुर तथा अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन विद्वत् परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हुई। संगोष्ठी में एल.डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद के पूर्व निदेशक, विश्रुत विद्वान् डॉ. जितेन्द्र भाई शाह, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के दर्शनशास्त्र-विभाग की पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा मानविकी संकाय की अधिष्ठात्री प्रो. कुसुम जी जैन, संस्कृत के प्रसिद्ध प्रोफेसर श्री दयानन्दजी भार्गव, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के जयपुर परिसर में जैनदर्शन के प्रो. डॉ. श्रीयांशजी सिंघई, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत-विभाग के प्रो. एवं पूर्व अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्रजी अवस्थी, जोधपुर में ही

दर्शनशास्त्र-विभाग के पूर्व सह आचार्य डॉ. राजकुमार जी छाबड़ा, राजस्थान संस्कृत अकादमी की पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुषमाजी सिंघवी सहित अनेक विद्वज्जनों ने अपने शोध परक व्यापक विचारों से उपस्थित श्रावक-श्राविका समुदाय को लाभान्वित किया।

यह संगोष्ठी **25 सितम्बर, 2021** को प्रात: काल प्रवचन के समय 9.00 बजे प्रारम्भ हुई। इसका शुभारम्भ **श्रद्धेय श्री अविनाश मुनि जी म.सा.** के 'निर्दोष सामायिक' विषय पर प्रदत्त ज्ञानवर्धक उद्बोधन से प्रारम्भ हुआ। उन्होंने अपनी ओजस्वी एवं सधी हुई वाणी में कहा कि जो दु:ख से डरता है, वह विराधक है और दोष से डरता है वह आराधक है। निर्दोषता के लक्ष्य से की गई सामायिक निर्दोष सामायिक है। मुनि श्री ने कहा कि प्रत्येक दोष आगन्तुक, असत् और संक्रामक है। सामायिक की महिमा का प्रतिपादन करते हुए द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भावशुद्धि का निरूपण किया तथा सम्यक्त्व सामायिक, श्रुत सामायिक, देश विरति सामायिक और सर्वविरति सामायिक की सुन्दर विवेचना की।

मुनि श्री के अनन्तर संगोष्ठी के संयोजक **प्रोफेसर धर्मचन्द जैन** ने दशम राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का परिचय देते हुए विषय का प्रवर्तन किया तथा संगोष्ठी में भाग ले रहे विद्वानों का स्वागत किया। फिर इस सत्र का सञ्चालन प्राचार्य श्री प्रकाशचन्दजी जैन के द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष, आगम एवं कर्म-सिद्धान्त के ज्ञाता **श्री जितेन्द्रजी डागा, जयपुर** ने **'करेमि भन्ते'** के पाठ के माध्यम से सामायिक की विशेषताओं का प्रतिपादन किया। उन्होंने इस पाठ के एक-एक शब्द की सार्थकता सिद्ध की एवं छहों आवश्यक 'करेमि भन्ते' पाठ में निरूपित किए।

विश्रुत विद्वान् डॉ. **जितेन्द्र भाई शाह** ने **'जैन योग ग्रन्थों में समत्व योग'** विषय पर गहन चिन्तन, मननपूर्वक उद्बोधन दिया। उन्होंने हरिभद्रसूरि के योगदृष्टिसमुच्चय, योगबिन्दु, योगशतक, षोडशक प्रकरण, आचार्य हेमचन्द्र के योगशास्त्र, शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव आदि ग्रन्थों के आधार पर सामायिक एवं समभाव की विवेचना की। उन्होंने योगपंचक की चर्चा करते हुए अध्यात्म, भावना, ध्यान, समत्व और वृत्तिसंक्षय का भी प्रतिपादन किया। यशोविजय के अध्यात्मोपनिषद् के आधार पर कहा कि आत्म प्रवृत्ति में अति जागरूक और पर प्रवृत्ति में बधिर, अन्ध और मूक की भाँति व्यवहार करना चाहिए। समत्व की साधना जैनधर्म का प्राण है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व अध्यक्ष **डॉ. सुषमा जी सिंघवी** ने **'आवश्यक निर्युक्ति में सामायिक'** विषय पर प्रकाश डालते हुए सम्यक्त्व, श्रुत, देशविरति और सर्वविरति सामायिक का भेद बताया तथा आवश्यक निर्युक्ति के अनुसार सामायिक की उपलब्धि एवं लाभ के दृष्टान्तों की रोचक चर्चा की।

मुख्य अतिथि, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी **श्री महेन्द्र जी पारख** ने संक्षिप्त किन्तु रोचक शैली में अपने वक्तव्य के माध्यम से सभी को आह्लादित कर दिया। उन्होंने ने स्वयं को विशिष्ट मानकर एकान्त में साधना करने पर बल दिया तथा कहा कि 23 घंटे कषाय की भट्टी में जलते रहते हैं कम से कम 1 घंटा तो उसको बुझाने का प्रयास किया जाय। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष और सभा के अध्यक्ष श्री प्रमोद जी महनोत ने सामायिक में क्षेत्रशुद्धि के प्रभाव को एक दृष्टान्त के साथ स्पष्ट किया एवं संगोष्ठी के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने अपने प्रवचन में सामायिक को समता भाव की साधना का साधन बताने के साथ सामायिक की विशद विवेचना की और समस्त वक्ताओं के वक्तव्यों की सुन्दर समीक्षा की। उन्होंने कहा कि चर्चा से चर्या का बोध होता है और चर्या से चारित्र बनता है। सामायिक एक चारित्र है। इससे वीतरागता पुष्ट होती है। नमस्कारमन्त्र की जन्मदात्री सामायिक है। सामायिक की साधना मूल्यवान है। यह

निवृत्ति प्रधान साधना है। दोषों की निवृत्ति होने पर गुण स्वत: प्रकट हो जाते हैं। धन का अभाव इतना खतरनाक नहीं, जितना प्रभाव है। अत: सामायिक से उस प्रभाव को कम किया जा सकता है।

अपराह्न में 1.30 बजे प्रारम्भ हुए सत्र की अध्यक्षता दर्शनशास्त्री **प्रो. कुसुम जी जैन** ने की। इस सत्र में **प्रो. श्रीयांशजी सिंघई** ने **'व्रताचरण में सामायिक का स्थान'** विषय पर मन्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि व्रताचरण में पुरुषार्थ आवश्यक है। पाँच लब्धियों का विवेचन करते हुए उन्होंने कहा कि क्षयोपशम लब्धि के बिना आत्मा को जाना नहीं जा सकता और चेतना को विषय भोगों से बचाने के लिए व्रताचरण का महत्त्व है। शुभोपयोग को उन्होंने शुद्धोपयोग तक पहुँचने का साधन बताया। वैदिक विद्वान् **प्रो. नरेन्द्र अवस्थी** ने **'भगवद्-गीता में समत्व की साधना'** विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मन की चंचलता को अभ्यास एवं वैराग्य से दूर किया जा सकता है। समस्त कामनाओं का त्याग करके जब कोई स्व में स्थित होता है तब समत्व की साधना का प्रारम्भ होता है। साधनाशील दर्शनशास्त्री **डॉ. राजकुमारजी छाबड़ा** ने **'शुद्धोपयोग और सामायिक'** विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि द्रव्य सामायिक का लक्ष्य निश्चय सामायिक है। प्रवचनसार की गाथा 7 के अनुसार उन्होंने कहा कि समभाव में रहना ही धर्म है। दूसरे शब्दों में सामायिक ही धर्म है जो चारित्र रूप होता है तथा मोह-क्षोभ से रहित होता है। प्राकृत भाषा की विदुषी **डॉ. तारा जी डागा** ने **'सामायिक : एक सम्पूर्ण योग साधना'** विषय पर शोधालेख प्रस्तुत किया। आधुनिक युग में जिसे योग समझा जा रहा है, जैनदर्शन में मात्र वही योग नहीं है अपितु जो मोक्ष से योजित करती हैं, वे सभी धर्म क्रियायें योग कहलाती हैं। हरिभद्र सूरि, हेमचन्द्र आदि आचार्यों के ग्रन्थों के आधार पर भी उन्होंने अपने विषय को पुष्ट किया। इस सत्र का सञ्चालन श्री त्रिलोकचन्दजी जैन (एण्डवा वाले) ने किया।

रविवार 26 सितम्बर, 2021 को प्रात: काल 7.00 बजे युवक-युवतियों की कक्षा में **महासती श्री दिव्यप्रभा जी म.सा.** ने अपनी मधुर एवं मर्मस्पर्शी वाणी में सामायिक के **तस्स उत्तरी पाठ** के आधार पर आत्मशुद्धि, पाप-विनाश और कायोत्सर्ग की सम्यक् विवेचना की। सेवाभावी, समर्पित श्रावकरत्न **श्री पदमचन्दजी गाँधी** ने **'सामायिक और स्वाध्याय'** विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि भोगवादी संस्कृति में संयम, साधना एवं समत्व की महती आवश्यकता है। सामायिक और स्वाध्याय वस्तुत: हमारे जीवन के दो मित्र हैं। सामायिक हमें स्वरक्षण से सर्वरक्षण की ओर ले जाती है। समभाव में आने के लिए स्वाध्याय आवश्यक है।

प्रवचन के समय प्रात: 9.00 बजे मुनि मण्डल एवं साध्वी मण्डल की सन्निधि में प्रारम्भ हुई संगोष्ठी में सर्वप्रथम महावीर स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाँव के पूर्व प्राचार्य आगमनिष्ठ विद्वान् **श्री प्रकाशचन्दजी जैन** ने **'सामायिक के अधिकारी'** विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सामायिक करने वाला व्यक्ति निर्व्यसनी एवं प्रामणिक जीवन का धनी होना चाहिए। उसे सामायिक के प्रति बहुमान रखने के साथ विधिपूर्वक सामायिक के लिए तत्पर होना चाहिए। चतु:शरण, महापुरुषों के अनुकरण, व्रत-धारण, पापालोचन और स्वाध्याय को भी उन्होंने सामायिक की पात्रता के लिए आवश्यक प्रतिपादित किया।

महारानी कॉलेज जयपुर की पूर्व प्राचार्य एवं दार्शनिक **प्रो. कुसुम जी जैन** ने **'पाश्चात्त्य दर्शनों में समत्व की साधना'** विषय पर प्रकाश डालते हुए भारतीय चिन्तन एवं पाश्चात्त्य चिन्तन की भेद रेखाओं को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि पाश्चात्त्य दर्शन बुद्धि केन्द्रित है जबकि भारतीय परम्परा के केन्द्र में आत्मा है। पश्चिम में नैतिकता की चर्चा है। भारत में आध्यात्मिकता की चर्चा है। पश्चिम के दार्शनिक विचार तक सीमित हैं जबकि भारत में निर्विचार और निर्विकल्प का भी साधना में स्थान है। सुकरात, प्लेटो, अरस्तू आदि के चिन्तन को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि पाश्चात्त्य दार्शनिक शोषणमुक्त एवं न्याययुक्त समाज को केन्द्र में रखते हैं जबकि भारत में व्यक्तियों के रूपान्तरण

पर बल दिया गया है। व्यक्तियों के परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन स्वत: सम्भव है।

जिनवाणी पत्रिका के प्रधान सम्पादक **प्रो.धर्मचन्दजी जैन** ने '**बौद्ध धर्म में समत्व की साधना**' विषय का विवेचन करते हुए कहा कि बौद्ध और जैनधर्म श्रमण संस्कृति के धर्म हैं। इन दोनों में अनेक समानतायें हैं। तीर्थंकर महावीर एवं बुद्ध समकालीन थे। दोनों ने जन भाषा प्राकृत और पालि में धर्मोपदेश दिया। पालि, त्रिपिटक एवं जैन आगमों की अनेक गाथायें समान रूप से मिलती हैं। दोनों परम्पराओं में भिक्षु को श्रमण कहा जाता है। डॉ. जैन ने महासति पट्ठान, अंगुत्तर निकाय, धम्मपद और बोधिचर्यावतार ग्रन्थों के आधार पर समत्व की साधना के सूत्र प्रस्तुत किये। धम्मपद में कहा गया है कि राग के समान कोई अग्नि नहीं और द्वेष के समान कोई मलिनता नहीं। समस्त पापों को नहीं करना और पुण्य कार्यों को करके चित्त को शुद्ध करना ही बुद्धों की शिक्षा है। राग-द्वेष आदि का अभिज्ञान और परिज्ञान करके उनका प्रहाण करने के लिए विपश्यना साधना प्रतिपादित की गई है।

इस दिन प्रात: काल 5.35 बजे उपाध्याय श्री मूलमुनिजी म.सा. का कोटा में संथारापूर्वक देवलोक गमन होने के कारण **श्रद्धेय श्री गौतममुनि म.सा.** ने प्रवचन नहीं फरमाया, किन्तु विद्वज्जनों के द्वारा जो विचार प्रकट किये गये उन पर अपने शब्दों में प्रमोद प्रकट किया। अन्त में चार लोगस्स का कायोत्सर्ग किया गया।

अपराह्न में 1.30 पर प्रारम्भ हुए सत्र की अध्यक्षता अहमदाबाद के **डॉ. जितेन्द्र भाई शाह** ने की। सत्र का सञ्चालन **डॉ. ताराजी डागा** ने किया। वक्ताओं में सर्वप्रथम आध्यात्मिक शिक्षा समिति के विद्वान् शिक्षक **श्री त्रिलोकचन्दजी जैन** ने '**ललित विस्तरा टीका के सन्दर्भ में शक्रस्तव पाठ की महत्ता**' पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि हरिभद्रसूरि विरचित इस टीका ग्रन्थ में अरिहन्त और सिद्धों की महत्ता का प्रतिपादित करने के साथ परमत का खण्डन भी किया गया है। **प्रो. दयानन्दजी भार्गव** ने '**वेदान्तदर्शन में समत्वभाव की साधना**' विषय पर मूल्यवान् विचार प्रकट करते हुए कहा कि जो मिथ्या पर आधारित है वह विषमता का कारण है इसीलिए शरीर पर दृष्टि होगी तो विषमता आयेगी ही। ब्रह्म के सत्य होने का तात्पर्य है स्वभाव का सत्य होना और जगत् का मिथ्या होने का तात्पर्य है विभाव का होना। समभाव के लिए स्व में स्थित रहना होता है तथा मिथ्या का परित्याग करना होता है।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के जयपुर परिसर में जैन दर्शन के प्रो. **डॉ. कमलेश कुमारजी जैन** ने '**मूलाचार में सामायिक आवश्यक**' विषय पर विचाराभिव्यक्ति करते हुए कहा कि आचार्य वट्टकेर द्वारा विरचित मूलाचार ग्रन्थ में षडावश्यकों का विवेचन प्राप्त होता है तथा सामायिक आवश्यक की भी सुन्दर निरूपणा हुई है। वैज्ञानिक **डॉ. अनिल कुमारजी जैन** ने '**दिगम्बर परम्परा में प्रतिपादित सामायिक: स्वरूप एवं प्रयोग**' विषय पर संक्षेप में विचार प्रकट किये तथा सामायिक के चार रूपों-चारित्र, आवश्यक, शिक्षा-व्रत एवं प्रतिमा पर दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थों के आलोक में प्रकाश डाला।

पूर्व जिला रसद अधिकारी तथा प्राकृत-संस्कृत भाषाविज्ञ **श्री गौतमचन्दजी जैन** ने '**सामायिक का प्रथम पाठ नमस्कार मन्त्र**' विषय पर विवेचना करते हुए कहा कि माध्यस्थ भाव युक्त साधक की मोक्षाभिमुखी प्रवृत्ति सामायिक है। नमस्कार मन्त्र में पूर्ण रूप से समभाव की प्राप्ति करने वाले अरिहन्त और सिद्धों को नमन किया गया है तथा जो समत्व की साधना में पुरुषार्थ कर रहे हैं ऐसे आचार्य, उपाध्याय और साधुओं को भी वन्दन-नमन किया गया है। श्री जैन ने अपने वक्तव्य में इस मन्त्र के पाँचों पदों की विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया।

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के **रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्दजी जैन जोधपुर** ने '**विशेषावश्यक भाष्य में सामायिक के प्रकार**' विषय का प्रतिपादन करते हुए सामायिक के विभिन्न प्रकारों की प्रस्तुति की जो अत्यन्त ज्ञानवर्धक रही। विशेषावश्यक भाष्य में सामायिक का विभिन्न द्वारों के माध्यम से विशेष स्पष्टीकरण किया।

संस्कृत के व्याख्याता एवं पूर्व प्रधानाचार्य **श्री धर्मेन्द्र कुमारजी जैन** ने अपना आलेख **'आचार्य श्री हस्ती की दृष्टि में सामायिक'** विषय पर केन्द्रित किया तथा आध्यात्मिक शिक्षा समिति के विद्वान् शिक्षक **श्री जिनेन्द्र कुमारजी जैन** ने **'सामायिक : संवर-निर्जरा की उत्तम साधना'** विषय पर अपने आलेख में गम्भीर विवेचन किया।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने 'सामायिक एवं समत्व का स्वरूप' विषय पर इस सत्र में मूल्यवान् विचार प्रकट किये। उन्होंने फरमाया कि अनुकूलता और प्रतिकूलता में अपने को साध लेना ही सामायिक का व्यावहारिक रूप है। साधना में आत्म ज्ञान की आवश्यकता होती है। आत्मा को स्वीकार करके ही साधना का प्रारम्भ होता है। आप जो सामायिक करते हैं उस सामायिक का लक्ष्य भी स्वयं को अनुकूलता और प्रतिकूलता में साधना ही है। समभाव का साधक प्रतिकूलता में आत्म-संयम और आत्म-विश्वास रखता है तथा अनुकूलता में भी तटस्थ रहता है। अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि छद्मस्थ जितना चुप रहेगा और केवली जितना बोलेगा उतना लाभकारी है। श्रद्धेय मुनि श्री ने इस सत्र में विचार व्यक्त करने वाले वक्ताओं के सम्बन्ध में विभिन्न बिन्दुओं पर समीक्षात्मक टिप्पणियाँ की।

अन्त में 4.30 बजे **समापन-सत्र** आयोजित हुआ, जिसमें सारस्वत अतिथि के रूप में **प्रो. जितेन्द्र भाई शाह** ने सामायिक-साधना पर विशिष्ट वक्तव्य देते हुए अपराह्न में विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत विषयों पर अध्यक्षीय टिप्पणियाँ भी की। **प्रो. धर्मचन्द जैन** ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के साथ विद्वानों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष मुख्य अतिथि **श्री आनन्दजी चौपड़ा** ने इस संगोष्ठी को अत्यन्त सफल बताया तथा सामायिक-साधना को जीवन के लिए आवश्यक प्रतिपादित किया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं सत्र के अध्यक्ष **श्री विनयचन्दजी डागा** ने इस संगोष्ठी पर हर्ष प्रकट किया तथा श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर-जयपुर को समस्त व्यवस्थाओं के लिए, अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन विद्वत्परिषद् का समागत विद्वानों तथा समस्त श्रोताओं का भी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर-जयपुर के अध्यक्ष **श्री ज्ञानचन्दजी दूनीवाल** ने भी सबका आभार प्रकट किया। इस सत्र का कुशल सञ्चालन **श्री राजेन्द्रजी जैन 'राजा'** ने किया। संगोष्ठी में विद्वानों के अतिथि सत्कार में मानसरोवर के मन्त्री **श्री धर्मचन्दजी जैन (पाटोली वाले)** सहित सभी कार्यकर्त्ता तत्पर रहे।

-डॉ धर्मचन्द जैन, संगोष्ठी संयोजक

जयपुर में स्वाध्यायी कार्यशाला का आयोजन

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जयपुर शाखा एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर के संयुक्त तत्त्वावधान में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के सान्निध्य में 19 सितम्बर, 2021 को एक दिवसीय स्वाध्यायी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला प्रातः 8.30 बजे से सायं 5.30 बजे तक चली। कार्यशाला में चार सत्र आयोजित किए गए। सबसे पहले प्रातः 8.30 बजे सभी स्वाध्यायी बन्धुओं ने श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से जिनवाणी श्रवण का लाभ प्राप्त किया।

तत्पश्चात् 11 बजे स्वाध्यायी कार्यशाला का प्रथम-सत्र परिचय-सत्र के रूप में रहा। इस सत्र में उपस्थित सभी 55 स्वाध्यायी भाई-बहनों ने अपना-अपना परिचय देकर पर्युषण सेवा में प्राप्त होने वाले खट्टे-मीठे अनुभवों से उपस्थित सभी सदस्यों को अवगत कराया। इस सत्र का सञ्चालन युवा स्वाध्यायी श्री मनोज कुमार जी जैन

(पाटोली वाले), मानसरोवर ने किया। भोजन अवकाश उपरान्त द्वितीय-सत्र अपराह्न 1.30 बजे प्रारम्भ हुआ। इस सत्र में श्री प्रकाशचन्दजी जैन 'गुरुजी' का विशिष्ट वक्तव्य रखा गया। उन्होंने बताया कि आचार्य हस्ती से हमें स्वाध्यायी का विरुद मिला है। स्वाध्यायी में व्रत (आचरण) के साथ ज्ञानात्मक पक्ष भी मजबूत होना चाहिए। स्वाध्यायी में विषय विशेषज्ञता का गुण होना चाहिए। आगम हमारा संविधान है अतः उसके प्रति हमारे हृदय में अहोभाव जाग्रत होना चाहिए। वक्ता का उद्देश्य अच्छी बातें नहीं, अपितु सच्ची बातें कहने का होना चाहिए। आपने नन्दीसूत्र में वर्णित आगम पढ़ने की पद्धतियों पर भी विशेष रूप से प्रकाश डाला। **श्रद्धेया पूज्या महासती श्री दिव्याप्रभाजी म.सा.** ने उपस्थित सभी स्वाध्यायी बन्धुओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि श्रोता श्रद्धा सम्पन्न हो और वक्ता क्रिया सम्पन्न होना चाहिए। आपने साधु और श्रावक के बीच की कड़ी में स्वाध्यायी को बताया। स्वाध्यायी साधु-सन्तों से वञ्चित क्षेत्रों में जाकर जिनवाणी की प्यास बुझाता है। आपने स्वाध्यायी के लिए आगमज्ञान और क्रियापालन सम्पन्न होना आवश्यक बताया तथा कहा कि आगमवाणी के स्वाध्याय से भव-भव की दरिद्रता को समाप्त किया जा सकता है।

तृतीय-सत्र में **श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने स्वाध्यायियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि स्वाध्याय संघ में गुरु हस्ती की आत्मा के दर्शन होते हैं। स्वाध्यायी गुणग्राही और मोक्ष का राही होता है। स्वाध्याय संघ ने ही रत्नसंघ को बहुत बड़ी पहचान दी है। आपने उपस्थित स्वाध्यायियों को प्रेरित करते हुए कहा कि आपको गुरु हस्ती के इस प्रिय मिशन को आगे बढ़ाना है। घर-घर में स्वाध्याय की अलख जगाना है।

स्वाध्यायी कार्यशाला के अन्तिम सत्र में स्वाध्यायी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें 20 एवं उससे अधिक वर्षों तक पर्युषण सेवा देने वाले वरिष्ठ स्वाध्यायियों-(1) श्री गौतमचन्दजी जैन (2) श्रीमती कान्ताजी जैन (3) श्रीमती लाडदेवीजी हीरावत (4) डॉ. पदमचन्दजी मुणोत (5) श्री प्रकाशचन्दजी जैन (6) श्रीमती शान्ताजी मोदी (7) श्री तेजराजजी भण्डारी तथा (8) श्री धर्मेन्द्र कुमारजी जैन, जयपुर का शॉल, माला और स्मृति-चिह्न प्रदान कर स्वागत-सम्मान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रमोदजी महनोत, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जयपुर ने की तथा मुख्य अतिथि-श्री आनन्दजी चौपड़ा कार्याध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर थे।

कार्यक्रम में 15 वर्ष से अधिक की पर्युषण सेवा देने वाले युवा स्वाध्यायी बन्धु श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, जयपुर का भी स्वागत अभिनन्दन किया गया तथा स्वाध्याय संघ जयपुर शाखा के संयोजक पद को सुशोभित करने वाले वरिष्ठ स्वाध्यायी बन्धुओं-(1) श्री राजेन्द्र कुमारजी पटवा, जवाहरनगर (मरणोपरान्त) (2) श्री अशोक कुमारजी जैन, हरसाना वाले (3) श्री वीरेन्द्र कुमारजी जामड़ (4) श्री जम्बू कुमारजी जैन का भी शॉल, माला और स्मृति-चिह्न प्रदान कर स्वागत-सम्मान किया गया। श्री राजेन्द्र कुमार जी पटवा का सम्मान उनके सुपुत्र श्री रितुलजी पटवा ने ग्रहण किया। कार्यक्रम में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल, जोधपुर तथा श्री सुनीलजी सकलेचा, जोधपुर ने स्वाध्याय संघ की गतिविधियों एवं स्वाध्याय निर्देशिका के प्रकाशन से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की। डॉ. धर्मचन्दजी जैन, सम्पादक-जिनवाणी ने स्वाध्याय की महत्ता विषय पर अपने विचारों से उपस्थित सभी सदस्यों को लाभान्वित करवाया। कार्यक्रम का सञ्चालन श्री राजेन्द्र जी जैन राजा, मानसरोवर एवं श्री सुशील कुमारजी जैन, संयोजक-स्वाध्याय संघ जयपुर शाखा ने किया। इस अवसर पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्दजी दुनीवाल और मन्त्री श्री धर्मचन्दजी जैन की भी समारोह में मञ्च पर गरिमामयी उपस्थित रही।

-सुशील कुमार जैन, संयोजक-स्वाध्याय संघ, जयपुर शाखा

'स्मार्ट गर्ल्स' कार्यशाला का सफल आयोजन

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था मानसरोवर एवं श्री जैन रत्न युवती मण्डल जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ महावीर भवन मानसरोवर में विराजित आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के मंगलमय उद्बोधन से हुआ। महाराज साहब ने सभी से चेहरे पर प्रसन्नता, वाणी में मधुरता एवं हृदय में उदारता के लिए प्रेरणा प्रदान की। बालिकाओं से मुनिश्री ने आह्वान किया कि आपके सामने आपका भविष्य है और माता-पिता का सपना है। कैसे जीवन जीना, कैसे भविष्य बनाना यह आपको तय करना है। सिर्फ इतना ही सुझाव है कि आपकी शालीनता, नम्रता, सेवा, मर्यादित जीवन और सहनशीलता को देखकर हर कोई आपसे प्रेरणा ले अर्थात् आपका जीवन एक उदाहरण के रूप में प्रतिष्ठित बने। महाराज साहब ने सभी को प्रेरणा दी कि प्रातःकाल उठकर 12 वन्दना, प्रार्थना और मेरी भावना से दिन की शुरुआत करनी चाहिए एवं देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्णतया समर्पित होना चाहिए। तत्पश्चात् इस कार्यक्रम का अगला सत्र आचार्य श्री हस्ती सभागार शिप्रा पथ मानसरोवर में सम्पन्न हुआ। मञ्च सञ्चालन श्रीमती महकजी डागा ने किया। इस कार्यशाला में 14 से 24 वर्ष की राजस्थान के विभिन्न स्थानों एवं जयपुर की लगभग 150 अविवाहित लड़कियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर संघ के पदाधिकारियों एवं विशिष्ट जनों ने वक्ताओं का सम्मान किया। युवती मण्डल की मन्त्री श्रीमती संगीताजी लोढ़ा ने वक्ताओं एवं सभी अतिथिगण एवं भाग लेने वाली सभी लड़कियों का स्वागत और अभिनन्दन करते हुए कहा कि हम हमारी वाणी और व्यवहार इतना अच्छा बनाएँ कि अगरबत्ती की खुशबू की तरह दूसरों के दिलों तक पहुँच जाएँ एवं स्वभाव को माचिस की तीली जैसा नहीं बनाना है कि जरा सा घर्षण लगे और क्रोध की आग में झुलस जाएँ, बल्कि गुलाब के फूल की तरह बनाएँ, जो स्वयं भी महके और दूसरों को भी महका दे।

बीजेएस के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान राजेन्द्र कुमारजी लुंकड़,** ईरोड़ ने सशक्तिकरण के मूल मन्त्र दिए एवं साथ ही श्रीमती खुशबू जी बाकलीवाल ने आत्मविश्वास को बढ़ाने के टिप्स दिए। दो दिवसीय इस कार्यशाला में जीवन परिवर्तन के 6 सत्र हुए-

1. Self awareness
2. Self esteem and self defence
3. Communication and relationships
4. Friendship and temptations
5. Choices and decision
6. Dialogue with parents.

इस कार्यशाला का समापन दूसरे दिन महावीर भवन में विराजित श्रद्धेय श्रीगौतम मुनि जी महाराज साहब के सान्निध्य एवं समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में हुआ। शुरुआत में श्रीमान कैलाशचन्दजी हीरावत ने अपने अनुभव के द्वारा बताया कि गुरु की शरण में जाने से किस तरह हमारी परेशानियाँ दूर हो जाती हैं और जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमें सही दिशा मिलती है।

युवती मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती विजेताजी लोढ़ा ने बताया कि गुरु के बिना जीवन शुरू नहीं एवं माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का नतीजा हमेशा हमारे लिए प्रगतिवर्धक ही होता है। लड़कियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि हमेशा फ्रेंडशिप बहुत सोच समझकर करनी चाहिए, क्योंकि संगति का जीवन-निर्माण में बहुत बड़ा स्थान है। इस कार्यक्रम में जिन लड़कियों ने भाग लिया था, उनमें से कई लड़कियों ने अपने अनुभव व्यक्त किए एवं बताया कि किस तरह यह शिविर हमारे लिए उपयोगी रहा और अब हम जीवन में नया परिवर्तन लेकर आएँगे। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी महाराज साहब ने फरमाया कि यह समापन नहीं बल्कि जीवन को नए संकल्पों से जीने का प्रारम्भ दिवस है। जैसे गाय घास खाने के बाद एकांत बैठकर जुगाली करती है वैसे ही आपने जो मार्गदर्शन प्राप्त किया, उसके अनुकूल जीने का संकल्प करें।

-संगीता लोढ़ा

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 245 स्वाध्यायियों द्वारा 105 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत् 76 वर्षों से जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास से वञ्चित गाँव/नगरों में विद्वान्, क्रियावान्, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना-आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 04 सितम्बर से 11 सितम्बर, 2021 तक मनाया गया। पर्वाराधना में उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में मेवाड़, मारवाड़, पोरवाल, पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े दूर एवं निकट के 105 क्षेत्रों में लगभग 245 स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान कीं। सभी स्थानों पर सामायिक, दया, संवर, उपवास, पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। स्वाध्यायियों द्वारा सभी स्थानों पर ज्ञानवृद्धि हेतु शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

-सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं संस्थान के लिए पूर्व छात्रों के साथ निम्न महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

13. श्री धर्मेन्द्र कुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर-जयपुर, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य (पूर्व छात्र)	12,000/-
14. श्री अजित कुमारजी-नीशूजी सकलेचा, प्रतापनगर-जयपुर	24,000/-
15. श्री सतीश कुमारजी जैन (आलनपुर वाले), बैंकॉक (पूर्व छात्र)	12,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉंजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेंजे।

खाते का विवरण:-Name : ***GAJENDRA CHARITABLE TRUST***, Account Type : *Saving,* Account Number : ***10332191006750***, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Custumer ID : 35288297 **निवेदक :** डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2021 का विमोचन

समग्र जैन सम्प्रदाय की विगत 43 वर्षों से नियमित प्रकाशित 'समग्र जैन चातुर्मास सूची 2021म का विमोचन श्वेताम्बर स्थानकवासी गोंडल सम्पद्राय के राष्ट्रीय सन्त गुरुदेव श्री नम्रमुनिजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणियाँ आदि ठाणा-49 के पावन सान्निध्य में पडघा-थाणा (महाराष्ट्र) में हुआ। श्री बाबूलालजी जैन 'उज्ज्वल', मुम्बई द्वारा सम्पादित इस सूची ग्रन्थ में समग्र जैन समुदाय के चारों सम्प्रदायों के श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के 10,692, श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के 4,125, दिगम्बर सम्प्रदाय के 1,521 एवं श्वेताम्बर तेरापंथी सम्पद्राय के 713 कुल साधु-साध्वियाँ 17,501 के सन् 2021 में हो रहे चातुर्मासों का विवरण है। **सम्पर्क सूत्र**-बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल', सम्पादक, 105, तिरुपति अपार्टमेन्ट, वर्ली रोड़ नं. 1, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101 (महा.) 9324521278

अनूप मण्डल के साहित्य पर पुनः सरकारी प्रतिबन्ध

राजस्थान राजपत्र (Gazette) के 24 सितम्बर, 2021 को प्रकाशित विशेषांक में गृह (घ) विभाग की ओर से अधिसूचना (5 अगस्त, 1957) प्रकाशित हुई है-

''सं. एफ. 25 (9) एच.बी./56-यत: राज्य सरकार को यह प्रतीत होता है कि नीचे उल्लिखित पुस्तकों, पुस्तिकाओं और दस्तावेजों, जिनमें ऐसा मामला अन्तर्विष्ट है, जिसका भारत के नागरिकों के विभिन्न वर्गों के मध्य विद्वेष और घृणा की भावना को सम्प्रवर्तित करना आशयित है तथा सम्प्रवर्तित करती है और जिनका जानबूझकर और विद्वेषपूर्ण रूप से जैन (बनिया) समुदाय की धार्मिक भावनाओं को उनके धर्म और उस वर्ग के धार्मिक विश्वास का अपमान करके आहत करना आशयित है और जिसका प्रकाशन भारतीय दण्ड संहिता की धारा 153 क और 295 क के अधीन दण्डनीय है।''

इसलिए राज्य सरकार दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1898 (1898 का V) की धारा 99 क द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्द्वारा पूर्वोक्त पुस्तकों, पुस्तिकाओं और दस्तावेजों की प्रत्येक प्रति को सरकार द्वारा समपहृत किये जाने की घोषणा करती है।

पुस्तकें, पुस्तिकाएँ और दस्तावेज-(1) साधु अनूप दास द्वारा हिन्दी में लिखित और सम्वत्, वर्ष 1968 में श्री वेंकटेश्वर स्टीम मुद्राणालय, बम्बई द्वारा 'जगत हितकारणी' शीर्षक से मुद्रित ग्रन्थ। यह 'बनिया' समुदाय के विरुद्ध विद्वेषपूर्ण प्रचार से पूर्ण है।

(2) सम्वत्, वर्ष 1982 में 'न्याय चिन्तामणि' शीर्षक से प्रकाशित सिरोही के सोनी हरचन्द द्वारा हिन्दी में लिखित पुस्तक। यह पुन: बनिया (जैन) समुदाय के विरुद्ध दुष्प्रचार है और जैनधर्म पर प्रहार करता है।

(3) सम्वत्, वर्ष 2013 और 1956 ईस्वी में 'कितान मुफीद अम मौसुमवाह' शीर्षक से प्रकाशित और बंशीलाल सोलंकी द्वारा श्री कमला मुद्रणालय, कटला बाजार, जोधपुर में मुद्रित पुस्तक। यह अनूपदास के वृहत्तर ग्रन्थ 'जगत हितकारणी' का एक उद्धरण है।

(4) सोनी हरचन्द द्वारा हिन्दी में लिखित और कमला मुद्रणालय, कटला बाजार, जोधपुर द्वारा प्रकाशित 'आत्म पुराण।' यह भी बनिया समुदाय की धार्मिक भावनाओं को आहत करने तथा अन्य वर्गों को उनके विरुद्ध उकसाने के लिए लिखी गयी है।

(5) निम्नलिखित शीर्षक से हिन्दी में मुद्रित पत्रक-(i) श्री रामायण मुद्रणालय, दरलियापुर, बड़ी गाँव, बड़ी पासी, अहमदाबाद द्वारा मुद्रित और अध्यक्ष अनूप मण्डल, सिरोही द्वारा प्रकाशित श्री अनूप स्वामीजी की आरती। (ii) अध्यक्ष, अनूप मण्डल, किशिनगर के लिए प्रबन्धक, भारत पॉलिसी फोर्म कम्पनी गवर्नमेण्ट सरकार हाल द्वारा प्रकाशित और सर्योदय मुद्रणालय, जोधपुर द्वारा मुद्रित 'दु:खियों की पुकार।' दोनों बनिया समुदाय में वर्ग घृणा और द्वेष सम्प्रवर्तित करने की दृष्टि से लिखी गयी है।

-राज्यपाल के आदेश से, दुर्गा प्रसाद, शासन उप सचिव (राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर)

संक्षिप्त समाचार

इन्दौर-डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू (अम्बेडकर नगर), इन्दौर के कुलपति प्रो. आशा शुक्ला द्वारा विश्वविद्यालय में अहिंसा, हॉरमनी एवं जैन हेरिटेजल चेयर की स्थापना की गई है। इस चेयर के अन्तर्गत अहिंसक जीवनशैली के सन्दर्भ में अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार, साम्प्रदायिक सौहार्द के विकास के साथ

में जैन विरासत के सर्वेक्षण, संकलन एवं संरक्षण की अनेक योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया जायेगा। कुलपति महोदया ने अपने आदेश 10 अगस्त, 2021 के माध्यम से प्रसिद्ध गणित इतिहासज्ञ एवं जैन मनीषी प्रोफेसर अनुपम जैन को इस चेयर का मानद चेयर प्रोफेसर मनोनीत किया है। डॉ. अनुपम जैन को 40 वर्षीय शोध कार्य एवं संस्था सञ्चालन का सफल अनुभव है।

-डॉ. सुरेखा मिश्रा, पुस्तकालयाध्यक्ष

बधाई

जोधपुर-प्रांजलजी सुपुत्र श्रीमती रेखाजी-प्रवीणजी सुपौत्र श्री पूरणराजजी-श्रीमती लीलाजी अबानी (ट्रस्टी, गजेन्द्र निधि) ने महज 21 वर्ष की आयु में प्रथम प्रयास में ही सी.ए. अन्तिम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की है। उन्होंने अपनी स्कूल की शिक्षा प्रतिष्ठित मेयो कॉलेज, अजमेर से और फिर नरसी मोनजी कॉलेज, मुम्बई से स्नातक पूरी की तथा सी.ए. आर्टिकलशिप के.पी.एम.जी., मुम्बई के साथ किया जो कि दुनिया की चार बड़ी फर्मों में से एक है।

जोधपुर-हिमांशुजी सुपौत्र स्व. श्री हरकराजजी-स्व. श्रीमती लीलादेवीजी सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी-श्रीमती रेखाजी सुराणा ने महज 20 वर्ष की आयु में चार्टर्ड एकाउटेण्ट बने। आप बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के युवारत्न हैं। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करते हैं तथा 25 बोल, भक्तामर, पुच्छिसु णं भी आपको कण्ठस्थ है। आपके पिताश्री व्यवसायी और माताश्री श्रीमती रेखाजी सुराणा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के कोषाध्यक्ष पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रही हैं।

जयपुर-श्री सिद्धान्तजी सुपुत्र स्व. निर्मल कुमारजी जैन ने आई.पी.एस. की ट्रेनिंग सफलता पूर्वक पूर्ण कर जिला-महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) के अतिरिक्त सुपरिडेण्ट पुलिस के पद पर कार्य भार ग्रहण किया है। श्री सिद्धान्तजी जैन आई.आई.टी. खडगपुर से मेकेनिकल इञ्जीनियर की डिग्री प्राप्त कर यूपीएससी-2017 में 201वीं रैंक प्राप्त कर आई.पी.एस. पद पर चयनित हुए थे।

जोधपुर-सुश्री खुशीजी सुपुत्री श्री सुरेशजी-श्रीमती रचनाजी, सुपौत्री स्मृतिशेष श्री बदेचन्दजी-श्रीमती पुष्पकुँवरजी भण्डारी ने चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट (सी.ए.) की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप सुश्रावक श्री देवेन्द्रनाथजी-श्रीमती कमलाजी मोदी की दौहित्री एवं श्री लोकेन्द्रनाथजी मोदी (राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष) की भाञ्जी हैं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

चेन्नई-अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को हिन्दी सप्ताह में आयोजित ई-कार्यक्रम में निर्मला स्मृति साहित्यिक समिति, चरखी-दादरी (हरियाणा) की ओर से हिन्दी साहित्य-रत्न सम्मान दिया गया। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. खेमसिंह डहेरिया के मुख्य आतिथ्य में समिति अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार मंगलेश ने बताया कि हिन्दी साहित्य संवर्धन में डॉ. धींग के विशिष्ट अवदान के लिए उन्हें यह सम्मान दिया गया है।

-अशोक कुमार शास्त्री, सचिव

जोधपुर-श्री अक्षयजी जैन (सी.ए.) सुपुत्र डॉ. अरुणजी जैन (सी.ए. एवं सी.एम.ए.) सुपौत्र श्री जेठमलजी मुणोत का के.पी.एम.जी., इन्दोवेन (नीदरलैण्ड) में सीनियर कन्सलटेण्ट के पद पर चयन हुआ है। आप श्री मगनमुनिजी म.सा. के सांसारिक प्रपौत्र है। वर्तमान में के.पी.एम.जी. सिंगापुर में कार्यरत हैं तथा इससे पूर्व डिलोईट (मुम्बई एवं

गुड़गाँव) में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। आपने सी.ए., एम.कॉम लेखाङ्कन एवं बी.कॉम ऑनर्स लेखाङ्कन के साथ यू.एस.ए. की सीसा उपाधि प्राप्त की है। *-अरुण कुमार जैन*

चेन्नई-सुनीताजी जैन ने मद्रास विश्वविद्यालय के जैनोलॉजी विभाग से 'मिथ्यात्व की अवधारणा का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर पी-एच.डी. पूर्ण कर डॉक्ट्रेट की डिग्री प्राप्त की है। आपने अपना शोधकार्य जैन विद्या के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रियदर्शनाजी के दिशा-निर्देशन में सम्पन्न किया है। *-डॉ. अनेकान्त कुमार जैन*

जोधपुर-डॉ. प्रतीकजी सुपुत्र श्रीमती विमलाजी-श्री नरेन्द्रमलजी डागा ने सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज, बीकानेर से एम.डी. (Radiation oncology) की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

डॉ. महिमाजी धर्मसहायिका डॉ. प्रतीकजी पुत्रवधू श्रीमती विमलाजी-श्री नरेन्द्रमलजी डागा ने जवाहर मेडिकल कॉलेज, अजमेर से एम.डी. (Microbiology) की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जलगाँव-अक्षय प्रमोदजी साबद्रा ने इक्कीस साल की उम्र में पहले ही प्रयास में CA की परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा UPSC की परीक्षा में 418वीं रैंक प्राप्त कर आई.पी.एस. हेतु चयनित हुए हैं। आपका परिवार धार्मिक है तथा स्वयं भी सामायिक, प्रतिक्रमण, उपवास आदि करते रहते हैं।

-कस्तूरचन्द बाफना

जयपुर-चि. पुलकितजी सुपुत्र श्री ऋषभ कुमारजी जैन (जरखोदा वाले) प्रतापनगर, जयपुर का प्रथम सॉफ्टवेयर प्राइवेट लिमिटेड, सीतापुरा जयपुर में ऑन केम्पस प्लेसमेण्ट हो गया है।

जैन समाज के निम्नलिखित युवकों ने संघ लोकसेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में सफलता प्राप्त कर समाज का गौरव बढ़ाया है। सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। सबका नामोल्लेख रैंक के साथ किया जा रहा है-अंकिता जैन (3), अर्थ जैन (16), वैशाली जैन (21), नितेश जैन (22), अहिंसा जैन (53), जयंत नाहटा (56), वाशु जैन (67), आयुषी जैन (85), प्रखर जैन (90), अमृत जैन (96), अंशुल जैन (122), चिराग जैन (205), मेघना जैन (277), अर्पित जैन (279), प्रेक्षा जैन (309), संधि जैन (329) समीक्षा जैन (333), अभी जैन (341), मेघा जैन (354), वृष्टि जैन (484), हरीश जैन (503), ऊर्जा विकास जैन (529)।

श्रद्धाञ्जलि

श्रमण संघीय उपाध्याय श्री मूलमुनिजी का संथारा सहित समाधिमरण

कोटा-श्रमण संघ के वरिष्ठ उपाध्याय श्री मूलमुनिजी का 26 सितम्बर 2021 को 99 वर्ष की आयु में प्रात: 5.35 बजे संथारा सहित समाधिमरण हो गया। आपने 17 वर्ष की वय में फाल्गुन कृष्ण 5, विक्रम सम्वत् 1997 में समदड़ी में जैन दिवाकर चौथमलजी महाराज से दीक्षा ग्रहण करके उन्हीं के शिष्य प्रवर्तक मुनि वृद्धिचन्दजी महाराज का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया था। आप एक दशक तक जैन दिवाकर जी के सान्निध्य में रहे एवं उनके सुशिष्य के रूप में लोकप्रिय हुए। कस्तूरचन्दजी महाराज से अनुप्रेरित होकर आपने समाज में साधर्मी वात्सल्य की अलख जगाई।

आपकी साधुता समता, सरलता और समदर्शिता से अलंकृत थी। आप आत्म-प्रतिष्ठा से दूर रहकर साधना करने वाले मुनिराज थे। आप प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं के जानकार एवं गद्य-पद्य के अच्छे रचनाकार थे। करीब दो दर्जन कृतियाँ उनकी साहित्यिक प्रतिभा की प्रमाण हैं। विक्रम सम्वत् 2051 (वर्ष 1994) में प्रवर्तक रूपमुनिजी 'रजत' के सुझाव पर श्रमण संघ के तत्कालीन आचार्य देवेन्द्रमुनिजी ने आपको 'उपाध्याय' पद पर आरूढ़ किया था। इस दिन रत्नसंघीय साधु-साध्वियों ने अपना प्रवचन स्थगित रखा तथा चार लोगस्स का कायोत्सर्ग किया।

झालावाड़-महासती छगनकुँवरजी म.सा. का 16 जुलाई, 2021 को संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आप ज्ञानगच्छाधिपति श्रुतधर पण्डितरत्न श्री प्रकाशचन्दजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री भंवरकुँवरजी म.सा. की सुशिष्या थी। निरन्तर स्वाध्याय, सेवा के गुण आपके जीवन की निधि थी।

मुम्बई-धर्मनिष्ठ वरिष्ठ सुश्रावक श्री सरदार सिंह जी कर्णावट का 26 अगस्त, 2021 को 92 वर्ष की वय में देहावसान

हो गया। सन् 1954 में सी.ए. होने के पश्चात् आपने कर्णावट एण्ड कम्पनी की स्थानपना की आप गजेन्द्र निधि, गजेन्द्र फाउण्डेशन, शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत वात्सल्य निधि आदि संस्थाओं के ट्रस्टी थे एवं संघ की सभी संस्थाओं का कई वर्षों तक आपने कुशलतापूर्वक आर्थिक सञ्चालन किया। संघ की सभी संस्थाओं को वटवृक्ष बनाने में आपके योगदान को कई वर्षों तक याद रखा जाएगा। आपके जीवन का एक लक्ष्य था संघ की संस्थाएँ सुचारु रूप से चलती रहें, किसी भी तरह का व्यवधान नहीं हो, यह दायित्व आपने जीवनपर्यन्त निभाया है। नित्य सामायिक आपका नियम था। आपने साधना भवन, जयपुर के पुनर्निमाण में मुक्त हस्त से सहयोग दिया। आप सपरिवार आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन हेतु जाया करते थे। आपका निधन रत्नवंश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। आप अपने पीछे सुपुत्र-पुत्रवधू श्री राजेन्द्र-पुष्पाजी, श्री सुरेन्द्रजी-नलिनीजी एवं श्री नरेन्द्रजी-पुष्पाजी का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

बेंगलुरु-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सरोजाबाईजी धर्मपत्नी श्री सुगनचन्दजी मूथा का 15 अगस्त, 2021 को

संथारा सहित स्वर्गगमन हो गया। आपने अपने जीवन में एक मासखमण, 16 उपवास, ग्यारह उपवास, अठाई आठ बार तथा एकान्तर वर्षीतप-13 वर्ष तक लगातार किये। 70 वर्षों से निरन्तर प्रतिवर्ष-आयम्बिल ओली तप, जीवन में अनगिनत तेले तप की अपूर्व आराधना की, पिछले लगभग 42 वर्षों से निरन्तर चौविहार का पालन कर रही थीं। एकाशन, उपवास, बेला आदि अनेकविध तपस्याएँ भी आपने सानन्द की हैं। आप चातुर्मास में चार माह तक पिछले कुछ वर्षों से एकान्तर तप भी करती थीं। आपने दान-पुण्य के क्षेत्र में रत्न संघ के चार दीक्षा प्रसङ्गों पर गुप्तदान रूप अपूर्व अर्थ सहयोग दिया है। आपने स्वधर्मी भाइयों को भी अर्थ सहयोग प्रदान किया है। जीवदया एवं मानव सेवा में आपने बढ़-चढ़कर दान किया है। रत्न संघ सहित अनेक संस्थाओं को विपुल दान राशि प्रदान की है। बारनी खुर्द अमर बकरा शाला को भी अपूर्व अर्थ सहयोग किया है। आप गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी, रत्न संघ बेंगलुरू के ट्रस्टी बनी। श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ (राज.) को आपने अर्थसहयोग तथा रत्न संघ में शिक्षा-दीक्षा एवं साहित्य प्रकाशन में भी अर्थ सहयोग दिया है।

लाखूर स्टेशन-धर्मनिष्ठ, संघ-सेवी श्री मोहनराजजी मूथा का 22 अप्रेल, 2021 को देहावसान हो गया। आप गुरु हस्ती के अनन्य भक्त थे। आप कर्त्तव्यनिष्ठ, धर्मप्रेमी एवं समाजसेवी व्यक्तित्व के धनी एवं एक शीलवान श्रावक थे। अपने पीछे भरापूरा सुशील परिवार छोड़कर गये हैं।

-श्रीमती निर्मलादेवी मुथा

बड़ीसादड़ी-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सागरबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री मदनलालजी जारोली का 30 अगस्त, 2021 को 86 वर्ष की वय में संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। आप शासन दीपिका साध्वी श्री पुष्पलताजी म.सा. की सांसारिक काकी सा थी। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धावान थी। नित्य साधु-साध्वी के दर्शन-वन्दन करना एवं सेवा करना ही आपके जीवन का लक्ष्य था।

बेंगलोर-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री कमलराजजी बागरेचा मेहता का 2 अप्रेल, 2021 को 67 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, विनम्रता, कर्त्तव्यनिष्ठा, स्पष्टता आदि सद्गुणों से युक्त था। आपका जीवन सौम्यता से सुगन्धित एवं परिवार के प्रति समर्पित था। आपका परोपकारी जीवन आपके पदचिह्नों पर चलने के लिए सदैव प्रेरित करता है। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती चन्द्रकला मेहता ने आपको धर्ममार्ग पर बढ़ाने में सहयोग दिया। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ एवं संस्कारवान् परिवार छोड़कर गये हैं। *-धीरज डोसी, जोधपुर*

उज्जैन-जैनधर्म और दर्शन के जाने-माने प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. तेजसिंहजी गौड़ का 85 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। आपका जन्म क्षत्रिय परिवार में हुआ, लेकिन स्थानकवासी, मूर्तिपूजक सन्तों के सम्पर्क में आने से आप जैनधर्म से जुड़े। आपश्री ने लगभग 20 से अधिक सन्त-साध्वियों को पी-एच.डी. का शोध कार्य करवाया। आप सरल सहज प्रकृति के विद्वान् थे। आपने अनेक अभिनन्दन ग्रन्थ, स्मृति ग्रन्थ और पुस्तकों का कुशल सम्पादन किया था। आचार्यप्रवर पूज्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं त्रिस्तुतिक संघ के आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी के प्रति आपकी गहरी आस्था और निष्ठा थी। प्रतिवर्ष दर्शन-वन्दन सेवा का लाभ लेते थे।

मौजपुर-अलवर-धर्मनिष्ठ युवा श्रावक श्री प्रवीणजी जैन, सुपुत्र श्री हरीशचन्द जी जैन का 23 सितम्बर, 2021 को 46 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप समय-समय पर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करते रहते थे। मौजपुर में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति और विहारचर्या में आप सहित आपके परिवार की महनीय सेवाएँ प्राप्त होती रही हैं। सम्पूर्ण परिवार रत्नवंश की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। आप अपने पीछे धर्मपत्नी एवं बच्चों सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री ईश्वरजी सुपुत्र स्व. श्री नाथूलालजी जैन 'हाड़ा' का 57 वर्ष की आयु में 17 सितम्बर, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आप हँसमुख, मिलनसार एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। जो भी आपसे एक बार मिलता उस पर आपकी अमिट छाप अंकित हो जाती थी। आप सामाजिक गतिविधियों में तन-मन-धन से सदैव सहयोग हेतु तत्पर रहते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी अधीनस्थ संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

प्रेरक वाक्य

श्री श्रीकान्त जैन

◆ जीवन में ऊँचे उठते समय लोगों से अच्छा व्यवहार करें। क्योंकि यदि आप फिर नीचे आये तो सामना इन्हीं लोगों से करना होगा। *-जोधपुर (राज.)*

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 86
ISSN 2249-2011

चिन्तन

अवचेतन मन की तीन क्षणिकायें

श्री राकेश मेहता (सी. ए.)

(1) मेरी तलाश अभी भी क्यों अधूरी है?

क्योंकि-

मेरे भोलेपन को शिक्षा ने छीन लिया।
मेरी पवित्रता को फूहड़ मनोरञ्जन ने छीन लिया।
मेरी सन्तुष्टि को उपभोक्तावाद ने छीन लिया
मेरी सादगी को बुद्धिजीवियों ने छीन लिया
मेरी भक्ति को विज्ञान ने छीन लिया
मेरी इंसानियत को राजनेताओं ने छीन लिया

इसलिए मुझे अभी भी तलाश है, एक ऐसी क्रान्ति की जो मेरी छवि बना दें एक ऐसे इंसान की-जो मन से शान्त हो, पवित्र हो, कल्याणकारी हो, निर्भीक हो, शक्तिशाली हो, प्रेममय हो, निष्काम हो, निष्पाप हो, निर्विकार हो, निरामय हो, विकल्प मुक्त हो और ज्योतिर्मय हो।

मेरा अवचेतन मन मुझे यह सन्देश देता है कि यह सब छीना है तुम्हारे चेतन मन ने। आत्मकल्याण तो व्यक्तिगत होता है इसलिए इस क्रान्ति की शुरूआत कर अभी से और पूरी कर अपनी तलाश आज से।

(2) जल की सम्पूर्णता

सागर के जल से आकाश में बादल बनते हैं तभी हम अपनी शरीर की तपिश कम कर पाते हैं।

नदी के जल से खेतों में फसलें लहरा उठती हैं तभी हम अपनी भूख शान्त कर पाते हैं।

बरसते बादल से सरोवर भरते हैं तभी हम अपने प्यास की वेदना मिटा पाते हैं।

सार्वजनिक नलों से घरों में जल प्रवाहित होता हैं तभी हम अपने परिधान, सेहत और शरीर को स्वच्छ कर पाते हैं।

लेकिन अवचेतन मन मुझसे यह कहता हैं कि तुमने जीवन के दो प्रासङ्गिक जलों के बारे में कुछ जाना ही नहीं।

प्रथम आँखों में शर्म का जल भर लेना और द्वितीय आँखों से करुणा के आँसू छलका लेना।

जब तुम इन दोनों को भरने और छलकाने में कामयाब हो जाओगें तो समझ लेना कि जल की सम्पूर्णता हमारे जीवन में निहित हो गई है।

(3) मैं क्यों दु:खी हूँ

क्योंकि-

मुझे रेत में खेती करने की आदत-सी पड़ गई है।

मुझे आग में शीतलता दिखाई देने लग गई है।

मुझे सर्प की दाड़ा में टपकने वाला विष-अमृत दिखाई देने लग गया है।

मुझे करेले के कषैले स्वाद में मिठास का अहसास होने लग गया है।

इस मिथ्यात्व से मेरा मन विपरीत दिशा में भ्रमण कर रहा है, इसलिए पदार्थों में सुख खोजने की कोशिश कर रहा है, इसलिए मैं दु:खी हूँ।

अवचेतन मन की यह बात अब तक समझ में नहीं आई कि जड़ और पदार्थों के प्रति आसक्ति जब तक नहीं छोड़ेंगे तब तक हम सुख का अनुभव नहीं कर पाएँगे। पता नहीं यह वक्त कब आयेगा, लेकिन अब संकल्प ले लिया है कि मिथ्यात्व को छोड़कर और सम्यक्त्व को अपनाकर सुखी बनकर रहूँगा।

-मकान नं. 8, धर्मनारायण जी का हत्था, कायमखानी होस्टल के सामने, शिप हाउस रोड़, पावटा, जोधपुर (राज.)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 87
ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 162342 से 16254 तक कुल 13 सदस्य बने।

जिनवाणी मासिक पत्रिका प्रकाशन योजना हेतु साभार प्राप्त

100000/- श्री सुरेशचन्दजी इन्दरचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

31000/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजनजी बाघमार एवं परिवारजन, मैसूर (कर्नाटक) श्री रोहितजी बाघमार के 11, आशाजी के 9, पूजाजी के 9, राजनजी के 8, बिन्दुजी के 8, बुधमलजी के 4 एवं अखिलेशजी के 3 की तपस्या पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।

21000/- श्री पारसमलजी, जितेन्द्र कुमारजी, श्रीमती बबिताजी एवं श्रीमती लादाणी चौपड़ा परिवार, पाली-मारवाड़, श्री नरेन्द्र कुमारजी चौपड़ा का 23 अगस्त, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।

7001/- श्री रतनचन्दजी माणकचन्दजी मूथा (बालून्दा वाले), बेंगलोर, श्रीमती सरोजाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री सुगनचन्दजी मूथा का संथारा पूर्वक 15.08.2021 को समाधिमरण हो जाने पर पुण्य-स्मृति में।

6300/- श्री धर्मचन्दजी, कमलकुमारजी, संजयकुमारजी मेहता, दूदू की ओर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

5100/- श्री सुखेन्द्रजी-मीनूजी लोढ़ा, मुम्बई, स्व. पिताजी श्री करोड़ीमलजी और माताजी श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा की पुण्य-स्मृति में।

5100/- श्री मनोजकुमारजी, सुबोधजी, प्रमोदजी, मयूरजी बागरेचा मूथा (खेजड़ला वाले) लासूर स्टेशन, पूज्य पिताजी श्री मोहनराजजी बागरेचा मूथा का 22 अप्रेल, 2021 को देवलोकगमन होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।

5100/- श्रीमती विजयलक्ष्मीजी, श्री सौरभजी जैन, सवाईमाधोपुर, स्व. श्री गोपीलालजी एण्डवा वालों की 22वीं पुण्य तिथि एवं स्व. श्री प्रेमबाबूजी जैन की प्रथम पुण्य-तिथि पर भेंट।

3701/- श्रीमती ललिताजी-महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, स्व. माताजी श्रीमती पुष्पकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री मनमोहनमलजी गांग जोधपुर निवासी की 37वीं पुण्य-तिथि पर।

3100/- श्री नितिनजी, राहुलजी, प्रणितजी, मनितजी सिंघवी, जोधपुर, आदरणीया दादीजी श्रीमती रतनकँवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री रिखबचन्दजी एवं माताजी श्रीमती उषाजी धर्मसहायिका श्री नेमीचन्दजी सिंघवी के 01 मई, 2021 को स्वर्गगमन होने पर पुण्य-स्मृति में।

2100/- श्री झूमरलालजी सज्जनराजजी कवाड़ (पीपाड़ शहर वाले) चेन्नई, श्री सज्जनराजजी कवाड़ द्वारा आजीवन शीलव्रत का खन्द ग्रहण करने पर।

2100/- श्री गौतमचन्दजी, राजेन्द्रकुमारजी, जितेन्द्रजी, नितेशजी कटारिया (पीपाडसिटी वाले) चेन्नई, माताश्री श्रीमती लीलादेवीजी धर्मपत्नी श्री माँगीलालजी कटारिया के मासखमण की तपस्या की खुशी में।

2100/- श्री प्रवीणकुमारजी, नितिनकुमारजी रूणवाल, बीजापुर/माधोनगर पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व पर पुण्यधरा पीपाड़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2100/- श्री प्रकाशकँवरजी मुणोत, जोधपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

2100/- श्री लेखराजजी, बेजुजी पारख, जोधपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

2100/- श्री ऋषभ कुमारजी जैन (जरखोदा वाले) प्रताप नगर-जयपुर, स्वयं के 51वें जन्म दिवस एवं सुपुत्र चि. पुलकित जैन का प्रथम सॉफ्टवेयर प्रा. लि. जयपुर में प्लेसमेण्ट होने की खुशी में।

2100/- श्रीमती मंजूजी मूसल, जयपुर, स्व. श्री कमलजी मूसल की पुण्य-स्मृति में।

2100/- श्री सौरभजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्ररत्न प्राप्ति के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती कान्तादेवीजी धर्मपत्नी श्री ताराचन्दजी नाबेडा जैन, देवली-टोंक, सुपौत्री प्रियांशी एवं सुपौत्र अवि जैन के क्रमश: एच.डी.एफ.सी. एवं आई.सी.आई.सी.आई. बैंक में नियुक्ति होने तथा अपने पौत्र संयम और प्रपौत्र हर्षित नाबेडा के जन्म की खुशी में।

2100/- श्री ताराचन्दजी, मोहनलालजी, सोहनलालजी, राजेन्द्रकुमारजी जैन, पिता श्री मूलचन्दजी जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले) की 7वीं पुण्य-तिथि पर सप्रेम।

2100/- श्री हेमन्तजी पारख, जालौर, पूज्या माताजी स्व. श्रीमती सरस्वतीदेवीजी एवं पूज्य पिताजी स्व. श्री भीमराजजी पारख की पुण्य-स्मृति में।

2100/- श्री रूपकुमारजी, मोहनराजजी चौपड़ा (कवास वाले) पाली-बालोतरा-जोधपुर, सुश्री रित्वीजी सुपुत्री श्री नवरतनजी एवं सुश्री श्रेष्ठाजी सुपुत्री श्री आशीषजी सुपौत्रियाँ श्री रूपकुमारजी चौपड़ा के अठाई तप के उपलक्ष्य में।

2000/- श्री किशोरमलजी छाजेड़, जोधपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

2000/- श्री पारसमलजी सुपुत्र स्व. श्री मगराजजी ढेलडिया बोहरा, मण्डली-बाडमेर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

2000/- श्रीमती कौशल्याजी सिंघवी, मैसूर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

1500/- श्रीमती राजकँवरजी एवं स्व. श्री महेन्द्र कुमारजी डांगी, मदनगंज-किशनगढ़, पुत्रवधू श्रीमती रजनीजी के तेले की तपस्या एवं सुपौत्र चैतन्य डांगी के प्रथम उपवास (9 वर्ष) के उपलक्ष्य में।

1111/- श्री राजेन्द्रकुमारजी, गौरव कुमारजी, सौरभकुमारजी एवं भारतजी जैन (एण्डवा वाले), जयपुर, अजमेर में पर्युषण पर्व पर चि. कोमलबाबू जैन के 11 की तपस्या करने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्रीमती ललिताजी-महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, सुपुत्र अनुपम गांग (यूएसए) के जन्म-दिवस पर सप्रेम।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी-श्रीमती कमलाजी, श्री लोकेन्द्रनाथजी-श्रीमती ऋतुजी, सुश्री लोरीजी एवं सुश्री आर्विजी मोदी, जोधपुर, श्रीमती विमलाजी भण्डारी धर्मसहायिका स्व. श्री रणजीतसिंहजी भण्डारी के 31वें स्मृति-दिवस (सम्वत्सरी पर्व) के प्रसङ्ग पर।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी-श्रीमती कमलाजी, श्री लोकेन्द्रनाथजी-श्रीमती ऋतुजी, सुश्री लोरीजी एवं सुश्री आर्विजी मोदी, जोधपुर, दोहित्री सुश्री खुशीजी सुपुत्री श्रीमती रचनाजी-सुरेशजी भण्डारी के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री नवीनजी गांग, जोधपुर, स्व.श्री मख्तूरमलजी गांग की पावन पुण्य-स्मृति में।

1100/- श्रीमती शशिजी मेहता, जोधपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

1100/- श्रीमती मानकुँवरबाईजी, श्री एवनजी, श्रीमती पदमाजी, श्री इन्दरचन्दजी, श्रीमती सरलाजी, श्रीमती सुरभिजी नाहटा, रायपुर (छत्तीसगढ़) पर्युषण पर्व महारानी फार्म, जयपुर में साध्वी प्रमुखा जी के सान्निध्य में मनाने की खुशी में।

1100/- श्री महावीरप्रसादजी, दिनेशजी, पारसजी, पंकजजी, मुकेशजी जैन (कुण्डेरा वाले) इन्दौर, पूज्य पिताजी स्व. श्री रघुनाथप्रसाद जी जैन की द्वितीय पुण्य-स्मृति में।

1100/- श्री घनश्यामजी, अंकित कुमारजी जैन, जयपुर, श्रीमती मंजुजी एवं श्रीमती लविकाजी जैन के तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री राजेन्द्रजी-श्रीमती रेखाजी सुराणा, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री हिमांशुजी सुराणा के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री अनिलकुमारजी-श्रीमती अलकारानीजी, श्री अविजी (बादल), श्री आगमजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, पर्युषण पर्व में सपरिवार तेले की तपस्या करने की खुशी में।

1100/- श्रीमती ललिताजी गांग, सूरत, श्री महेन्द्रमलजी गांग, के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

11000/- श्रीमती मंजूजी सुराणा, कलकत्ता, स्व. श्री रिखबचन्दजी सुराणा की पुण्य-स्मृति में साहित्य प्रकाशन हेतु भेंट।

2100/- श्री सुशीलजी सतीशजी डोसी, जलगाँव, पिताजी स्व. श्री सतीशचन्दजी शान्तिलालजी की पुण्य स्मृति में।

गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन के ट्रस्टी

विद्याजी-कँवरलालजी सिंघवी, जलगाँव (महा.)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 89
ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

पटाखे फोड़ने से आठ कर्मों का बन्ध कैसे?

श्रीमती नीलू डागा

- **ज्ञानावरणीय**–ज्ञानप्रदाता पुस्तक के कागज जलने से, विद्यार्थियों के पढ़ने में बाधा पहुँचाने से।
- **दर्शनावरणीय**–जीवों के प्रति क्रूरता से, नींद में बाधा पहुँचाने से, आरम्भ में धर्म मानने से।
- **वेदनीय**–जीवों को वेदना पहुँचाने से, रासायनिक ज़हरीली गैस से रोगोत्पत्ति, फेफड़ों में खराबी बहरापन आदि।
- **मोहनीय**–पटाखों की रोशनी देखकर या आवाज सुनकर हर्षित होना, आवाज़ से भय पैदा करने से।
- **आयु कर्म**–निर्दयता से जीव हिंसा, पटाखे फोड़ते वक्त आयुष्य बन्ध होने से नरक/तिर्यञ्च आयु का बन्ध होता है।
- **नाम**–मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति में वक्रता होने से अशुभ नाम कर्म का बन्ध होता है।
- **गोत्र**–पटाखे छोड़ते हुए या छोड़कर अभिमान करने से नीच गोत्र का बन्ध होता है।
- **अन्तराय**–धन का दुरुपयोग होने से सुख-शान्ति में अन्तराय डालने से, पुण्य का नाश होने से अन्तराय कर्म का बन्ध होता है।

पटाखों से न प्रदूषित करे जहान,
मूक जीवों को दें अभयदान।।

-'संस्कारम्' से साभार

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1–आवर्तन तीन बार क्यों किये जाते हैं?

उत्तर– वन्दनीय की मन, वचन और काया से पर्युपासना करने के लिए तीन बार आवर्तन किये जाते हैं।

प्र. 2–तिक्खुत्तो के पाठ में 'वंदामि' और 'नमंसामि' शब्दों का साथ-साथ प्रयोग क्यों किया है?

उत्तर– तिक्खुत्तो के पाठ में 'वंदामि' का अर्थ है वन्दना करता हूँ और 'नमंसामि' का अर्थ है-नमस्कार करता हूँ। वन्दना में वचन द्वारा गुरुदेव का गुणगान किया जाता है, किन्तु नमस्कार में पाँचों अङ्गों को नमाकर काया द्वारा नमन किया जाता है।

-'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Muhapatti and its benefits

- Muhapatti is a piece of cloth to be worn on the mouth.
- Muhapatti is worn with the thread around it.
- Muhapatti is twenty one fingers long and sixteen fingers broad, it is made of white cotton cloth.
- Muhapatti has eight folds.
- Muhappatti symbolizs Jain religion. It is a main sign of Jain religion.
- By wearing Muhapatti we are following

Bhagawaan's orders.

- By wearing Muhapatti we show prudence in our talk. Unnecessary or bad words are not said.
- Mosquitoes, flies or any other minute insects don't go in our mouth and this way we can show compassion towards them.
- It protects air bodieds beings.
- Wearing Muhapatti increases the pride and importance of Jain Dharma.
- Muhapatti is an 'abhigam' of shrāvāk.

-Book "Learn Jainism with fun"

लकड़हारा नये जमाने का

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

एक लकड़हारा था जो रोज जंगल में लकड़ी काटने जाता था। नदी के किनारे बैठकर वह लकड़ी काटा करता और शाम को बाजार में बेचकर आता था।

घर में लकड़हारा, उसकी पत्नी और उनका बेटा रहते थे। ज़िन्दगी ठीक-ठाक गुज़र रही थी।

एक दिन लकड़ी काटते-काटते उसकी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई। उसे पुरानी कहानी याद आई कि नदी में से देवता निकलते हैं फिर सोने की, चाँदी की और लोहे की कुल्हाड़ी निकालते हैं। लकड़हारा ईमानदार होता है और सिर्फ लोहे की कुल्हाड़ी लेता है, लेकिन देवता उसकी ईमानदारी से प्रसन्न होकर तीनों कुल्हाड़ी इनाम में दे देते हैं।

वह भी कहीं बैठा-बैठा रोने लगा कि मेरी आजीविका का साधन डूब गया है। प्रभु प्रकट होओ और मेरी कुल्हाड़ी निकालो।

सुबह से शाम हो गई। उसके आँसू भी सूख गये, पर कोई देवता प्रकट नहीं हुये। जब लकड़हारा समय से घर नहीं पहुँचा तो उसकी पत्नी को चिन्ता हुई और वह उसे ढूँढ़ने जंगल में गई।

देखा तो लकड़हारा वहाँ बहुत उदास बैठा था। पत्नी को देखकर उसने सारी बात बताई और कहा भगवान के प्रकट होने का इन्तजार करता रहूँगा।

उसकी पत्नी ने समझाया कि कहानी वाले लकड़हारे को तैरना नहीं आता था, लेकिन तुम्हें तो तैरना आता है। भगवान उन्हीं की मदद करते हैं जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। बिना डरे, एक छलाँग लगाओ और अपनी कुल्हाड़ी निकाल लो।

लकड़हारे ने नदी में छलाँग लगाई। उसको अपनी कुल्हाड़ी भी मिल गई और जीवन की बड़ी सीख भी।

अपने लक्ष्य को पाने के लिए भाग्य का इन्तज़ार मत, करो बस लक्ष्य को पाने के लिए उस दिशा में अपनी मेहनत लगा दो।

-मुम्बई (महाराष्ट्र)

छोटे क़दम

श्री धर्मेन्द्र जैन

जैनधर्म में छोटे-छोटे पच्चक्खाण एवं नित्य प्रतिदिन के नियम का बहुत महत्त्व बताया गया है। भगवान महावीर स्वामी ने प्रत्याख्यान का महत्त्व प्रकट करते हुए फरमाया है कि-

पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ। इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरइ।। (उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 29, गाथा 13)

अर्थात् प्रत्याख्यान से जीव इच्छाओं को रोक लेता है। इच्छा निरोध किये हुए जीव की सभी द्रव्यों पर से तृष्णा हट जाती है, वह शीतल, शान्त होकर विचरता है।

प्रतिदिन प्रात: हम छोटे-छोटे नियम ग्रहण करके अपने कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं। पच्चक्खाण के पाठ का प्रारम्भ भी गंठिसहियं..... (जब तक गाँठ बाँधी रखूँ) मुट्ठिसहियं..... (जब तक मुट्ठी बन्द रखूँ) तब तक के पच्चक्खान से होता है।

यानी इतने छोटे, अल्प समय के पच्चक्खाण से भी कर्मों की निर्जरा की जा सकती है। प्रतिदिन किये जाने वाले इन पच्चक्खाणों का जीवन में क्या प्रत्यक्ष परिणाम हो सकता है, इसका उदाहरण मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. से सुनने को मिला।

मुम्बई में घटित सच्ची घटना को सुनाते हुए

बताया कि मुम्बई में दो भाई म.सा. के पास दर्शनार्थ आये और नित्य प्रतिदिन नियम के लिए प्रार्थना की। म.सा. ने नियम कराये 'आज बिना घी लगी रोटी खाना।' दोनों भाई घर आये, तब तक खाना बन चुका था, टिफिन में घी लगी रोटी रखी जा चुकी थी। व्यापार के लिए निकलने का समय हो चुका था, अत: टिफिन में खाखरे, नमकीन आदि सामग्री रख के दोनों भाई निकल गये। साथ ही किसी को देने के लिए साथ में बड़ी राशि भी लेकर निकले। अब इनके पास में अधिक राशि होने का अनुमान लगाकर कुछ चोर, उच्चके भी उनके पीछे हो लिये। दोनों भाइयों को भी यह आभास हो गया कि चोर उनके पीछे लग चुके हैं। अब आगे-जाने पर कुछ योग ऐसा बना कि वे डिवाइडर से टकरा कर सड़क पर गिर गये। उनको चोट भी लगी और टिफिन गिरने से खाखरे, नमकीन आदि समाग्री सड़क पर बिखर गई। चोरों ने देखा कि जब इनके टिफिन में ही सूखे खाखरे, नमकीन आदि हैं तो, उनके पास तो क्या ही कुछ होगा। ये देख चोर अपने रास्ते हो लिये और दोनों भाई भी सुरक्षित ऑफिस पहुँच गये। अगले दिन दोनों भाई म.सा. के दर्शनार्थ स्थानक आये और उनके साथ व्यतीत हुई घटना को सुनाते हुए बतलाया कि म.सा. कल तो पच्चक्खाण के कारण बच गये। कुछ शारीरिक चोट अवश्य आयी पर बड़ा नुकसान होने से बच गये।

इन छोटे-छोटे नियमों से भौतिक जीवन में चमत्कार हो सकता है तो आत्मिक जीवन में होने वाले विकास का तो कहना ही क्या? यह प्रतिदिन ग्रहण किये जाने वाले छोटे-छोटे पच्चक्खाण उन छोटी-छोटी बून्दी के समान है, जिनके जुड़ने से कब बड़े लड्डू का निर्माण हो जाता है, जीवन में पता भी नहीं चलता।

इन छोटे-छोटे नियम प्रत्याख्यान को ग्रहण करके, अपने कर्मों की निर्जरा करके हम अपने जीवन को सफल, सार्थक एवं धर्ममय बनाने का प्रयास करें।

-22, गीजगढ़ विहार, हवा सड़क, जयपुर-302019 (राजस्थान)

ज़िन्दाबाद

संसार को करिए बाद, **जिनशासन** ज़िन्दाबाद
पाप को करिए बाद, **पच्चक्खाण** करें वे ज़िन्दाबाद
हिंसा को करिए बाद, **दया पालें** वे ज़िन्दाबाद
धन को करिए बाद, **धर्म करें** वे ज़िन्दाबाद
भवों को करिए बाद, **देव** हमारे ज़िन्दाबाद
आलस को करिए बाद, **मेहनत** हमारी ज़िन्दाबाद
टी.वी. वीडियो को करिए बाद, **गुरुदेव** हमारे ज़िन्दाबाद
मौत को करिए बाद, **महावीर स्वामी** ज़िन्दाबाद
मोबाइल को करिए बाद, **मुँहपत्ती** ज़िन्दाबाद
रिमोट को करिए बाद, **संघ** हमारा ज़िन्दाबाद
सलाद को करिए बाद, **सचित्त का त्याग** ज़िन्दाबाद
इच्छाओं को करिए बाद, **आज्ञा पालन** ज़िन्दाबाद
फैशन-व्यसन को करिए बाद, **सादगी** हमारी ज़िन्दाबाद
वैर-भाव को करिए बाद, **क्षमा समता** ज़िन्दाबाद

-पुस्तक 'आओ जैनिज्म सीखें-2' से साभार

Ānand Shrāvak

Once upon a time, there lived a King named Jitashatru in the city of Vānijya, India. A rich householder named Ānand also lived in the same city. He was so rich that he had 5 million gold coins, and equal amount of cash, an equal amount invested in business, lots of jewelry, and many other assets. He also owned 40,000 cows. He was highly respected by the King as well as by the people of Vānijya.

One day, Lord Mahāvir visited Vānijya and delivered a sermon. After listening to the sermon, Ānand decided to follow Jainism by accepting the twelve vows of a householder. Ānand observed these vows for fourteen years and progressed spiritually. One day Ānand Shrāvak attaineds special ability known as Avadhi-Jnāna performing severe penance, austerities and meditation. His Avadhi-Jnāna

was purer and more powerful than that acquired by other laypeople in their spiritual progress.

At this time, Lord Mahāvir and his disciples were in town. While returning from gochari (getting food or alms), Gautam swāmi learned that many people were going to pay homage to Ānand shrāvak for his newly acquired spiritual ability (Avadhi-Jnān) and his austerities. He decided to visit him. Ānand was very happy to see Gautam swāmi, his guru (spiritual teacher). Ānand Shrāvak welcomed Gautam Swāmi warmly. Gautam swāmi inquired about his new special ability. With due respect, Ānand replied to Gautam-swāmi, "Revered guru, I have attained a special ability (Avadhi-Jnāna) with which I can see as high as the first heaven and as low as the first hell."

Gautam swāmi explained to Ānand, "a layman (shrāvak) can attain the special ability of Avadhi-Jnān, but not of this magnitude. You need to do Prāyashchitta (atonement) for imagining these visions. Ānand was puzzled. He knew that he was correct but his guru questioned his truthfulness and told him to repent for it. He therefore politely asked Gautam swāmi, "Does one need to repent for speaking the truth?" Gautam swāmi, equally puzzled, replied, "No one has to repent for speaking the truth." He then left from there thinking that he would reconfirm this with Bhagawān Mahāvir.

Gautam swāmi returned to Bhagawān Mahāvir and asked about Ānand's special ability. Mahāvir replied, "Gautam, Ānand was telling the truth. He has acquired Avadhi-Jnān of immense magnitude. Rarely does a layperson attain such power and knowledge. You should repent for your mistake." Gautam swāmi set aside his alms and immediately returned to Ānand and asked for his forgiveness for doubting his honesty and truthfulness.

It is characteristic in Jain religion that if a guru makes an error he should ask forgiveness from the disciple. Also if monks make an error then they should ask forgiveness from the lay people.

In the later part of his life Ānand fasted until death and was then reborn as a heavenly being in Saudharma Devaloka (a heavenly region). After the completion of that heavenly life, he would be reborn as a human and would attain liberation. *-From Book "Jain Story"*

महावीर बन जाय

श्री हेमन्त लोढ़ा

चले अहिंसा मार्ग पे, कभी न जीव सताय।
प्रेम करे हर जीव को, महावीर बन जाय।।

चले सत्य के मार्ग पे,
त्यागे सभी कषाय।
मिथ्या न बोले कभी,
महावीर बन जाय।।

चोरी का सोचे नहीं, अस्तेय को अपनाय।
लोभ पराये का नहीं, महावीर बन जाय।।

स्त्री का आदर जो करे,
दूजी न ललचाय।
इन्द्रियाँ नियन्त्रित हों,
महावीर बन जाय।।

लालच ईर्ष्या से बचे,
सदा सीमित हो आय।
दान पुण्य करता रहे,
महावीर बन जाय।।

फल की चिन्ता हो नहीं,
कभी कर्म न भाय।
ज्ञान कर्म में लगे रहे,
महावीर बन जाय।।

पत्थर मारे पेड़ को, देता फल टपकाय।
जो समझे इस बात को, महावीर बन जाय।।

-नागपुर (महाराष्ट्र)

10 अक्टूबर 2021
जिनवाणी 93
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

नेमिनाथ और राजीमती

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 नवम्बर, 2021 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान शौर्यपुर नगर के महान् ऋद्धिवान राजा समुद्रविजय के महायशस्वी, बलवान, तेजस्वी पुत्र थे। उनकी माता शिवादेवी और छोटे भाई रथनेमि थे।

समुद्रविजय राजा के उनसे छोटे अन्य नौ भाई थे, उनमें सबसे छोटे भाई का नाम वसुदेव था। वसुदेव राजा के दो पत्नियाँ थीं। उनमें रोहिणी के पुत्र बलदेव और देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण वासुदेव थे। इस तरह श्री कृष्ण और नेमिनाथ दोनों चचेरे भाई थे।

एक बार नेमिकुमार ने श्री कृष्ण वासुदेव के पाँचजन्य शंख को फूँक दिया। लोग और स्वयं श्री कृष्ण सोच में पड़ गये कि ये शंखनाद किसने किया? यह शंख तो श्री कृष्ण के सिवाय कोई उठा भी नहीं सकता, तब बजाने की तो बात ही कहाँ? परन्तु शंख रक्षक ने समाचार दिया कि ''ये शंख नेमिकुमार ने बजाया है।मम नेमिकुमार के लिये तो यह खेल भर था, क्योंकि वे तीर्थंकर थे। नेमिकुमार के बल की इस तरह जगह-जगह प्रशंसा होने लगी। वे जितने बलवान थे उतने ही सुन्दर भी थे।

युवा नेमिकुमार संसार में वैराग्यभाव से रहते थे। उनके माता-पिता को उनकी शादी करने की बहुत इच्छा थी। श्री कृष्ण वासुदेव ने शौर्यपुर नगर में ही रहने वाले उग्रसेन राजा की कन्या राजीमती (राजुल) के साथ नेमिकुमार की शादी तय कर दी।

राजीमती इतनी सुन्दर थी कि उसकी सुन्दरता का वर्णन करते खुद सरस्वती भी थक जाय। स्त्रियों के सभी शुभ लक्षणों से सम्पन्न, सुन्दर दृष्टिवाली, उत्तम जीवन जीने वाली, धार्मिक संस्कारों से युक्त कन्या थी राजीमती।

शादी के लिए शुभ मुहूर्त देखा गया और आखिर वह दिन भी आ गया। इस अवसर पर शौर्यपुर नगर में आनन्द ही आनन्द छा गया। नेमिकुमार की बारात ने राजा उग्रसेन के नगर मे प्रवेश किया। रथ में बैठकर आते हुए नेमिकुमार बहुत सुन्दर लग रहे थे। बारात महल के पास आ पहुँची। राजुल सोलह शृंगार सजकर बैठी थी।

लग्न मंडप के समीप पहुँचते ही अचानक नेमिकुमार ने बाड़े में बँधे हुए पशुओं और पिंजरों में भरे हुए पक्षियों को देखा। नेमिकुमार ने अपने रथ के सारथि से पूछा-''इन सब पशु-पक्षियों को यहाँ क्यों लाया गया है?'' सारथि बोला-''माँस भक्षण करने वाले बारातियों के लिए इन्हें यहाँ लाया गया है।'' नेमिकुमार ने सोचा कि ''इतने सारे जीवों की हिंसा मेरी शादी के निमित्त हो रही है, यह तो मेरे लिए अहितकर और अकल्याणकारी है। ऐसी शादी से मुझे क्या फायदा होगा, जिसमें जीवों की हिंसा हो?'' उन्होंने अपने

सारथि से उन सब पशु-पक्षियों को मुक्त करवाया और उनकी मुक्ति का आनन्द देखते-देखते वे चिन्तन करने लगे-''मुझे शक्ति का उपयोग आत्म-कल्याण के लिए करना चाहिए। संसार के कार्यों के लिए मेरी शक्ति लगाने से अच्छा है दीक्षा लेकर साधना करना, यही परम हितकारी है।'' इस तरह चिंतन करके उन्होंने सारथि को रथ वापस अपने नगर की ओर मोड़ने को कहा। नेमिकुमार राजुल के पति होने के बजाय दीक्षा लेने को तैयार हो गये।

अचानक..... नेमिकुमार का रथ वापस लौटा तो रंग में भंग पड़ गया। राजुल और सहेलियाँ सोचने लगीं कि 'यह क्या हुआ?' तत्काल यह बात चारों ओर मै ल गई कि नेमिकुमार ने पशु-पक्षियों की पुकार सुनकर उन्हें बंधन मुक्त किया और वापस लौट गये। अब वे शादी नहीं करेंगे।

यह समाचार सुनते ही राजुल हास्य और आनन्द रहित होकर शोक में डूब गई। वह चिन्तन करने लगी-''निश्चय ही मुझे धिक्कार है, क्योंकि नेमिकुमार द्वारा मेरा त्याग किया गया। परन्तु इस भव में अब मुझे दूसरा पति नहीं चाहिए। अब मेरे लिए यही श्रेष्ठ है कि मैं भी उनके पदचिह्नों पर चलकर दीक्षा ले लूँ।'' ऐसा सोचकर वह भी कुँवारी रही और योग्य समय आने पर दीक्षा लेने के लिए तत्पर हुई। धन्य है उनकी सोच को, उनके वैराग्य को।

उसके बाद नेमिकुमार ने एक वर्ष तक वर्षीदान दिया, बाद में दीक्षा लेकर जैन साधु बने। मि र द्वारिका नगरी के पास रैवतक (गिरनार) पर्वत पर चले गए। नंगे पैर चलने लगे। रूखा-सूखा गोचरी में जो भोजन मिलता, उससे शरीर को भाड़े रूपी ईंधन देते। वे संसार के सभी जीवों को अपनी आत्मा के समान समझते थे। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए धर्म ध्यान में लीन रहते थे। इस तरह आदर्श साधुचर्या पालते-पालते उन्हें 54 दिन के बाद केवलज्ञान हुआ। साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका इस तरह चार तीर्थ की स्थापना करके वे तीर्थंकर बने।

राजुल ने भी उनका मार्ग स्वीकारा और भगवान नेमिनाथ के पास दीक्षा ग्रहण की। श्री कृष्ण वासुदेव, बलदेव, राजा समुद्रविजय आदि ने उन्हें आशीर्वाद दिया-''आप शीघ्र इस संसार सागर को पार करके मोक्ष सुख को प्राप्त करो।'' राजुल के साथ द्वारिका नगरी में बहुत-सी बहनों ने भी दीक्षा ग्रहण की।

एक बार साध्वी राजीमती अनेक साध्वियों के साथ भगवान नेमिनाथ के दर्शन करने गिरनार पर्वत पर जा रही थी। उसी वक्त तेज बारिश हुई और वह अपनी साथिन साध्वियों से बिछुड़ गई। अपने गीले वस्त्रों को सुखाने के लिए एक गुफा का आश्रय लिया और वहाँ अपने वस्त्र सुखाने हेतु रखे।

संयोगवशात् उसी गुफा में नेमिनाथ के छोटे भाई रथनेमि मुनि ध्यान में बैठे थे। गुफा में अन्धकार होने से साध्वी राजीमती उन्हें देख नहीं सकी, परन्तु रथनेमि ने राजीमती को देख लिया और उससे कहा-''राजीमती! क्यों अपनी जवानी बर्बाद कर रही हो? मनुष्य का भव मिलना बहुत दुर्लभ है, इसलिए आओ पहले हम भोग भोग लें, बाद में जिनेन्द्र भगवान के मार्ग का अनुसरण करेंगे।''

साध्वी राजीमती अपने व्रत-नियम पालन में मजबूत थी। शील की रक्षा करते हुए उसने जवाब दिया-''आप यदि देव या इन्द्र जैसे रूपवान हों, तब भी मैं आपको नहीं चाहती। आप तो नेमिनाथ भगवान के छोटे भाई हैं और मैं उनके द्वारा त्यागी गई राजीमती हूँ। आप अपने भाई द्वारा वमन की हुई को क्यों भोगना चाहते हैं? आपको धिक्कार है कि आप असंयम रूप जीवन जीने की इच्छा कर रहे हो। इससे तो आपके लिए मृत्यु श्रेष्ठ है।''

राजीमती ने फिर कहा-''हे रथनेमि ! हम दोनों के कुल, खानदान बहुत ऊँचे हैं। आपको ऐसा सोचना शोभा नहीं देता। इस काया में मल, मूत्र और दुर्गन्ध भरा हुआ है। हम तो आत्म-वैभव को पाने के लिए श्रमण बने हैं। मुनिराज! ऐसे ज़हरीले विचार और वचन आपके पवित्र दिमाग में कहाँ से आये? आप संयम में स्थिर बनो।''

राजीमती के ऐसे मर्मभेदी वचनों से रथनेमि जागृत हुए। वे पतन के मार्ग पर जाते हुए बचे। खुद की भूल के लिए साध्वी राजमती के पास लज्जापूर्वक, अन्तर के भाव से मामी माँगी। राजीमती का उपकार मानते हुए बोले–"आपको धन्य है। आपने मुझे सच्चा मार्ग दिखा कर बचा लिया।"

संयम, तप और त्याग के मार्ग पर जीवन जीकर भगवान नेमिनाथ, मुनि रथनेमि और साध्वी राजीमती इन तीनों महान् आत्माओं ने परम पद मोक्ष को प्राप्त किया।

धन्य है नेमिनाथ भगवान को!

धन्य है राजुल को! *-संकलित*

प्र.1 नेमिनाथ जीवदया-प्रेमी थे, यह बताने वाले प्रसंग का वर्णन करो।

प्र. 2 नेमिनाथ ने दीक्षा ली तब राजीमती ने क्या सोचा?

प्र. 3 राजीमती ने रथनेमि को किस तरह संयम में स्थिर किया?

प्र. 4 नेमिनाथ दीक्षा लेकर कैसा जीवन जीते हैं?

प्र. 5 इस कथा से आपको क्या सीख मिलती है?

प्र. 6 प्रस्तुत कहानी से कोई चार उपसर्गयुक्त पद छाँटकर उनमें प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग करो।

स्वास्थ्यवर्धक खेल

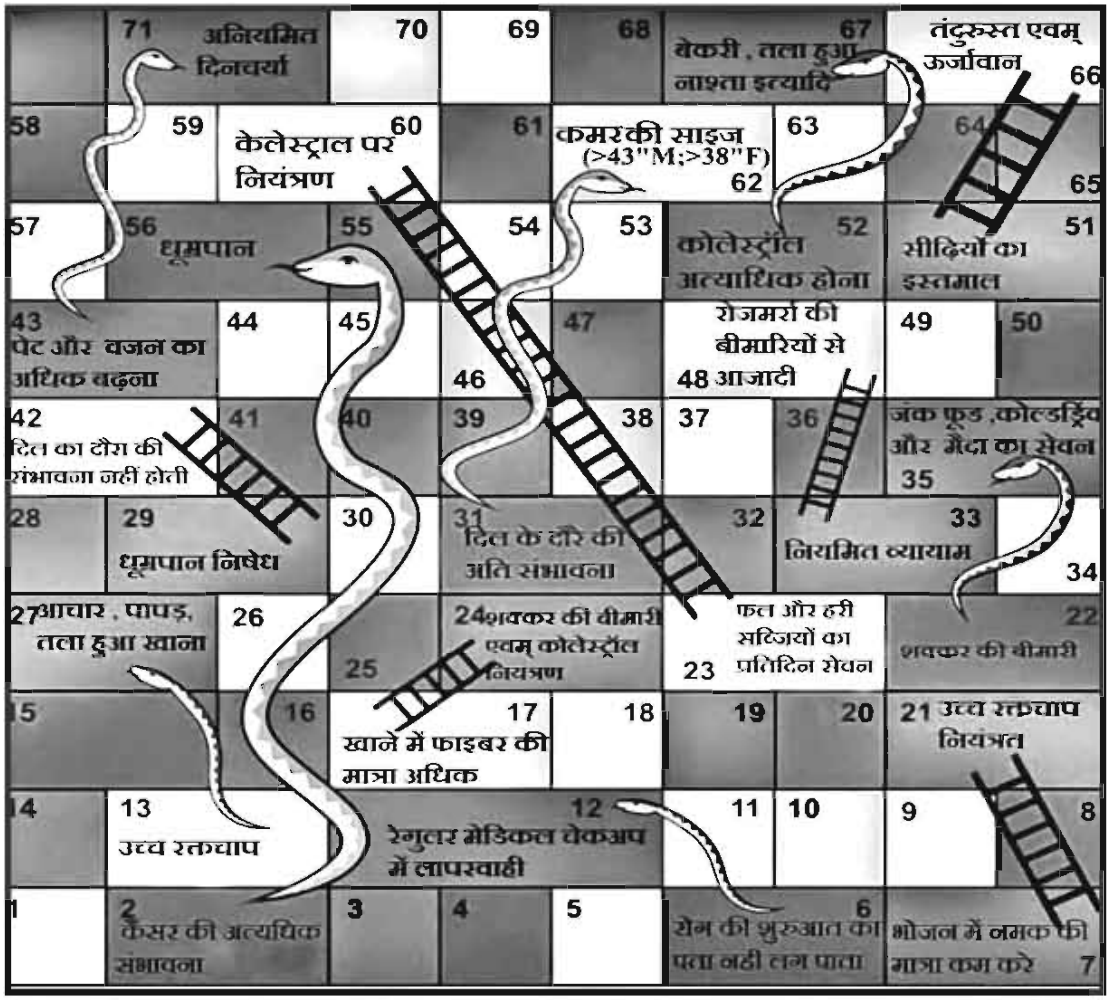

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2021] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2021 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'सेवाभावी नन्दीषेण' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	मौलिक जैन, जयपुर (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	प्रणव भण्डारी, जोधपुर(राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	22
	सिद्धार्थ जैन, सरवाड़-अजमेर (राजस्थान)	22
	नमन जैन, हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22
	कु. सुवर्णा एस. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	22
	स्पर्श सिंघी, मालपुरा-टोंक (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी सितम्बर, 2021 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 नवम्बर, 2021)

प्र. 1. 'कुदरत के दो रास्ते' कहानी में निहित सन्देश लिखिए।
प्र. 2. साधु-साध्वी को तिक्खुत्तो के पाठ से किस प्रकार वन्दना की जाती है?
प्र. 3. What is the lesson of life?
प्र. 4. 'हम मुस्कुरायेंगे कल' कविता किस प्रकार हमारे दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाती है?
प्र. 5. भोजन करते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
प्र. 6. भगवान महावीर ने किस प्रकार विषमय चण्डकौशिक को शान्त किया?
प्र. 7. किस तरह की सफलता को व्यक्ति एवं संसार के लिए मूल्यवान बताया है?
प्र. 8. हमारे घर पर जब सन्त-सतियों का गोचरी हेतु पदार्पण हो तो उनसे किस तरह का वचन-व्यवहार होना चाहिए?
प्र. 9. Why should we forget when someone has hurt us?
प्र. 10. तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-धैर्य, जहान, विष, मूल्यवान।

बाल-जिनवाणी [जुलाई-2021] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-2021 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	सचिन जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	40
द्वितीय पुरस्कार-400/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	39
तृतीय पुरस्कार- 300/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	38
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	37
	निकिता जैन, मसूदा (राजस्थान)	37
	काजल जैन, जयपुर (राजस्थान)	37

संस्कार केन्द्रों हेतु दो नये प्रकाशन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा दो नवीन पुस्तकों *'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर'* और *'हमारे जीवन की नई कहानियाँ'* का प्रकाशन किया गया है, जो बच्चों के लिए संस्कार प्रदात्री हैं। अतः बच्चों के लिए इनका उपयोग करें। बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है। *-सम्पादक*

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : **022 2628 7187**

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्जवल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. **We Have Launched Membership Plans For Donors.**

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund **IFSC Code** - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 **PAN No.** - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची –

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले) श्रीमान सुगनचन्द जी छाजेड़, चौपासनी रोड, जोधपुर।
DIAMOND MEMBER (RS.200000)	
श्रीमान् प्रकाशचन्द जी भण्डारी, हरलूर रोड, बैंगलोर	
SILVER MEMBER (RS.50000)	
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, अहमदाबाद। श्रीमती हेमलता मदनलाल जी सांखला, मुम्बई। श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती सुशीला जी साण्ड धर्मपत्नी स्व. श्री कस्तूरमल जी साण्ड, अजमेर	

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-56**

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिंतन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

JVS
PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :
NUTRITION FOODS
BREAKFAST CEREALS
FORTIFIED RICE KERNELS
WHOLE & BLENDED SPICES
VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

Food Safety System Certification 22000

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन